नाचि रहल छलि वसुधा

ई उपन्यास कोनो व्यक्ति विशेषक जीवनपर आधारित नहि अछि । एहिमे लेल गेल नाम, ठाम ओ कथानक सभ काल्पनिक थिक । तथापि यदि ककरो नाम मिलि रहल अछि तँ एकरा एकटा मात्र संयोग बूझल जाए

नाचि रहल छलि वसुधा

उपन्यास

रबीन्द्र नारायण मिश्र

नाचि रहल छलि वसुधा

मैथिली उपन्यास

रबीन्द्र नारायण मिश्र

आवरणःकाश्वी मिश्र(हमर पोती)

ISBN: 978-93-5768-510-8

दाम : 300 रूपया

पहिल संस्करण :2022

लेखक एवम् प्रकाशक :रबीन्द्र नारायण मिश्र
House No: C 42, NSG SAS Ltd, Black Cat Enclave
Pocket No: 6 Builders Area Greater Noida
District: Gautam Buddha Nagar
UP: 201315
M-9968502767

भारतमे मुद्रित(Printed in India)

नाचि रहल छलि वसुधा A Maithili Novel by Shri. Rabindra Narayan Mishra.

समर्पण



हमर प्रथम शिक्षक

स्वर्गीय अदिष्ट नारायण झा

(बच्चू बाबू)केँ

सादर ,सप्रेम,ससिनेह समर्पित

आभार

हमर प्रकाशित पुस्तकसभपर कतेको विद्‍वान लोकनिक उत्साहवर्धक प्रतिक्रिया प्राप्त होइत रहल अछि। हम अत्यंत विनम्रतापूर्वक हुनका लोकनिक प्रति कृतज्ञता व्यक्त करैत छी आ आशा करैत छी जे हुनकासभक मार्गदर्शन भविष्योमे एहिना प्राप्त होइत रहत ।

हम अपन पत्नी श्रीमती आशा मिश्रक आभारी छी, जे एहि पोथीक रचना होइत काल अनेको रचनात्मक सुझाव देलीह जाहिसँ एहिमे गुणात्मक सुधार भेल।

हमर विद्‍वान मित्र डाक्टर विनय कुमार चौधरी(पिंडारुछ) सेवानिवृत्त प्राध्यापक,आर.एम.कालेज सहरसाक अमूल्य सुझाव सेहो समय-समय पर भेटैत रहल अछि । एहि हेतु ओ प्रशंसाक पात्र छथि ।

रबीन्द्र नारायण मिश्र

ग्रेटर नोएडा

24.10.2022

श्री रबीन्द्र नारायण मिश्रक प्रकाशित कृति :

मैथिलीमे:-

प्रकाशन वर्ष:2017

१. 'भोरसँ साँझ धरि' (आत्म कथा), २. 'प्रसंगवश' (निवंध), ३. 'स्वर्ग एतहि अछि' (यात्रा प्रसंग),

प्रकाशन वर्ष:2018

४. 'फसाद' (कथा संग्रह) ५. `नमस्तस्यै' (उपन्यास) ६. विविध प्रसंग (निवंध) ७.महराज(उपन्यास) ८.लजकोटर(उपन्यास)

प्रकाशन वर्ष:2019

९.सीमाक ओहि पार(उपन्यास)१०.समाधान(निवंध संग्रह) ११.मातृभूमि(उपन्यास) १२.स्वप्नलोक(उपन्यास)

प्रकाशन वर्ष:2020

१३.शंखनाद(उपन्यास) १४.इएह थिक जीवन(संस्मरण)

१५.ढहैत देबाल(उपन्यास) १६.पाथेय(संस्मरण)

प्रकाशन वर्ष:2021

१७.हम आबि रहल छी(उपन्यास) १८.प्रलयक परात(उपन्यास)

प्रकाशन वर्ष:2022

१९.बीति गेल समय(उपन्यास) २०.प्रतिबिम्ब(उपन्यास)

२१.बदलि रहल अछि सभकिछु(उपन्यास)

22. राष्ट्र मंदिर(उपन्यास) २३. संयोग(कथा संग्रह) २४. नाचि रहल छलि वसुधा (उपन्यास)

In English: -

Year of publication:2018

1. The Lost House (Collection of short stories)
2. Life is an art

हिन्दी में -

प्रकाशन वर्ष:2019

१.न्याय की गुहार(उपन्यास)

नाचि रहल छलि वसुधा

1

अर्पिता दिल्लीसँ सटले यशपुरक प्रतिष्ठित परिवारक कन्या रहथि। हुनक परिवार एक जमानासँ इलाकामे जानल जाइत छल । एकहि संगे धन आ विद्या दुनू ओहि परिवारमे विद्यमान छल । विद्या अनुरागी रहबाक कारणें धनक कुप्रभाव हुनकासभकेँ नाममात्रो नहि छल । हुनकर परिवारक प्रतिष्ठामे हुनकर माता-पिता आओर वृद्धि केलनि । दिल्लीसन महानगरमे अनाथालय बनओलनि । ओहिमे पर्याप्त धन दान देलनि । लगभग पाँच सए अनाथ बच्चाक ओहि अनाथालयमे पालन-पोषण होइत छलैक ।

अनाथालय स्थापित करबाक एकटा प्रमुख कारण छल बहुत दिन धरि हुनका लोकनिकेँ अपन संतान नहि होएब । संतानकक कामनासँ ओ सभ कोन-कोन तीर्थ ने गेलाह ,कतेको संत-महात्माकेँ गोहरेलनि । मुदा किछु फएदा नहि भेलनि । आखिर एकदिन दुनू बेकतीक मोनमे अनाथालय स्थापित करबाक बात अएलनि ।

“किएक ने हमसभ एहन काज करी जाहिसँ कतेको अनाथ बच्चाक भविष्य बनि जाए?”

“सही कहलहुँ अछि । कोनो जरूरी अछि जे अपने पेटसँ जन्मले बच्चासँ संतान सुख भेटए । कतेको बच्चासभ एहि दुनिआमे अनाथ घुमि रहल अछि । ओकरा केओ देखनिहार नहि छैक, पालन केनिहार नहि छैक । यदि हमरा लोकनि एहन किछुओ बच्चासभक भविष्य बना सकी तँ हमरासभ जीवन धन्य भए जाएत । आओर जे होएत नहि होएत मुदा अपना मोनमे संतुष्टि तँ हेबे करत।”

“हमसभ शीघ्रे एहि हेतु प्रयास करब ।”

तकरबाद दुनूगोटे दिल्लीमे अपन पैतृक जमीनकेँ अनाथालयकेँ दान दए देलनि । ओहिपर विशाल भवनक निर्माण केलनि । बच्चासभक सही आ सुरक्षित रहबाक ओरिआन केलनि । ओहि अनाथालयक नाम राखल गेल- “संकल्प” । देखिते-देखिते संकल्पमे अनाथ बच्चासभक पाँति लागि गेल । दुनू बेकतीक अधिकांश समय अनाथालयेमे बितए लागल ।

संकल्पक स्थापनाक साल भरि भेल छल । ओहिदिन इलाका भरिक प्रतिष्ठित लोकसभ ओतए उपस्थित छलाह । संकल्पमे रहि रहल अनाथ बच्चासभ बहुत उत्साहसँ आजुक आयोजनक तैयारी कए रहल

छलाह। तीनघंटा धरि संगीत कार्यक्रम होइत रहल । संकल्पक बच्चासभक प्रतिभासँ आगन्तुक लोकनि बहुत प्रभावित रहथि । कैकटा बच्चासभकेँ इनाम देल गेलनि । बच्चासभ बहुत प्रसन्न छल । कार्यक्रमक समाप्तिक बाद अतिथि लोकनिक भोजनक ओरिआन छल । बच्चासभ स्वयं भोजन बनओने रहथि । ताहि हेतु ओ सभ दुपहरिएसँ लागल रहथि । आगन्तुक अतिथि लोकनिकेँ नीकसँ भोजन कराओल गेल । ओ सभ पूर्ण संतुष्ट भए अपन-अपन घर वापस गेलाह । तकरबाद संकल्पक बच्चासभ अपनो भोजन केलनि । अर्पिताक माता-पिता कार्यक्रमक सफलतासँ बहुत प्रसन्न भेल रहथि । संकल्पक सफल संचालनसँ हुनका लोकनिक जीवनमे एकटा अद्‌भुत आनन्द पसरि गेल छल । हुनकरसभक एकाकीपन समाप्त भए गेल छल । दिन-राति ओ सभ संकल्पक बच्चासभक कल्याणमे लागल रहि अनंत सुख आ संतुष्टिक अनुभव कए रहल छलाह ।

कहबी छैक जे जखन भगवान दैत छथिन तँ छत फारि कए दैत छथिन । सएह हुनकोसभकेँ भेलनि । संकल्पक वार्षिक समारोहक किछु दिनक बाद एकटा कन्याक जन्म भेलनि । कन्याक जन्मसँ ओ सभ बहुत प्रसन्न भेलाह । ईश्वरकेँ वारंबार धन्यवाद दैत रहलाह । ओ कन्या जन्महिसँ बहुत तेजस्वी लगैत छलि । देखबा-

सुनबामे अत्यन्त पवित्र तँ छलहे । कैकदिन धरि ओकर जन्मोत्सव मनाओल गेल । संकल्पक समस्त बच्चासभकेँ विशेष भोज देल गेल । सभ बच्चाकेँ नूतन वस्त्र पहिराओल गेल ।

बच्चाक जन्मक बाद छठिहार दिन धरि उत्सव चलिते रहल। इलाकाक नामी कलाकारसभ अपन कलाक प्रदर्शन करबाक हेतु अबैत-जाइत रहलाह । छठिहारक रातिमे विधि-विधानपूर्वक पूजा-पाठ कएल गेल । भोज-भात तँ भेबे कएल । प्रात भेने पंडितजीकेँ बजाओल गेलाह। ओ बच्चाक टिप्पणि बनओलनि । हुनके परामर्शसँ ओकर नाम अर्पिता राखल गेल । अर्पिता नाम रखबाक पाछू हुनकासभक इहो विचार रहनि जे ई बच्चा भगवानक देल अछि आ हुनकेँ अर्पित कएल जा रहल अछि ।

2

संकल्पक व्यवस्थामे अर्पिताक जन्मक बादो कोनो कमी नहि राखल गेल । अर्पिताक माता-पिता संकल्पक बच्चासभकेँ अपने संतान जकाँ पालन-पोषण करैत रहलाह। ताहि जोकर सामर्थ्य भगवान हुनका तँ देनहि रहथिन संगे हृदय सेहो बहुत उदार छलनि । अर्पिता नेनेसँ संकल्प अबैत-जाइत रहथि । ओहिठाम रहनिहार

बच्चासभक संगे खेलाथि,पढ़थि । एहिसँ हुनकर माता-पिताक काज सुगम भए जानि । एकहि संगे ओ संकल्पक काजो देखि लेथि आ अर्पिताक देख-रेख सेहो भए जानि।

अर्पिता जेहने देखबामे सुन्नरि रहथि तेहने हुनकर प्रतिभा छल । ओ सभ दिन परीक्षासभमे औअलि अबैत रहलीह । मैट्रिक,आइए,बीए,एम.ए सभमे ओ प्रथम अबैत रहलीह । आब हुनकर माता-पिताक इच्छा रहनि जे हुनकर बिआह कएल जाए । ताहि हेतु ओ सभ प्रयास करए लगलाह । मुदा ओ सभ से कए सकितथि ताहिसँ पहिनहि एहि दुनिआकेँ छोड़ि गेलाह । वृद्धावस्था तँ आबिए गेल रहनि । बएसक प्रभाव हेबेक छलैक । संयमित जीवन आ उचित चिकित्साक अछैत दुनूगोटेक स्वास्थ्य दिन-प्रतिदिन गड़बड़ाइते गेलनि । कखनहु किछु तँ कखनहु किछु । अपना भरि बहुत सचेष्ट रहथि । डाक्टरक संपर्कमे रहबे करथि । मुदा संयोग एहन भेलैक जे एकदिन ओ स्नानगृहमे स्नान करए गेलाह । जखन बहुत काल धरि केबार नहि खुजल तँ बूढ़ीकेँ चिंता भेलनि । ओ केबार ढकढकओलनि । कोनो जबाब नहि भेटलनि । ओ बहुत चिंतित भए गेलीह । बाहरसँ किछुगोटेकेँ बजओलथि । जेना-तेना केबार तोड़ल गेल । स्नानगृहमे पैसितहि ओ देखैत छथि जे बूढ़ा तँ निष्प्राण पड़ल छथि । एहि तरहें अचानक हुनकर मृत्यु बूढ़ीक लेल बहुत कष्टकारी साबित

भेल । ओ गुम्म पड़ि गेलीह । कतबो किछु होनि ककरो किछु कहबे नहि करथि । अर्पिता अपना भरि बहुत बुझओलखिन । मुदा हुनका कोनो असरि नहि भेलनि । किछु दिनक बाद ओहो एहि दुनिआसँ चलि जाइत रहलीह।

हुनका लोकनिक आकस्मिक मृत्युसँ अर्पिताक जिनगीमे अचानक बिहाड़ि आबि गेलनि । अखन धरि कष्टक हुनका कनीको अनुभूति नहि रहनि । अभाव तँ कहिओ देखबे नहि केलनि । जखन जे चाहथि से तुरंत भेटि जानि । माता-पिताक मृत्युक बाद अर्पिताक जीवनक समस्त व्यवस्था अस्तव्यस्त भए गेल छल । आब की होएत? हुनकर भविष्यक नाहक खेबनिहार के होएत?

माता-पिताक मृत्युक बाद अर्पिताक जीवनमे एकटा शून्यता भरि गेल रहनि । ओ समय छल जखन ओ बिआह करितथि,जीवनमे व्यवस्थित होइतति ,बूढ़ माता-पिताक नाम उजागर करितथि । हुनकरसभक स्वप्नकेँ साकार करितथि । मुदा अचानक भेल हुनकरसभक मृत्युक बाद ओ बहुत मोसकिलमे पड़ि गेल रहथि । संकल्पक काजकेँ ओहिना नहि छोड़ल जा सकैत छल । ओकर सही संचालन करबाक भार सेहो अर्पितेपर आबि गेल छल । ओहिठाम पाँच सएसँ बेसी अनाथ बच्चासभक रक्षा करबाक छल,ओकरसभक भविष्य बनेबाक सबाल छल । ताहि आगू एक आदमीक जीवन की छल? किछु नहि ।

बिआह कए निःसंदेह ओ अपन गृहस्थी बसा लेति मुदा एहि संस्थाक की होएत? एहि तरहें अर्पिताक सामने एकटा गंभीर धर्मसंकट छल । ओ कैकदिन धरि सोचैत रहलीह। कखनहु कए मोन होनि जे संकल्प संचालन हेतु सरकारकेँ आग्रह कए देथि । फेर होनि जे ई काज माता-पिताक आकांक्षाक अनुकूल नहि होएत । ओ सभ तँ एकरा अपन जीवनक प्रमुख लक्ष्य बना लेने छलाह । अर्पिताक जन्मक बादो ओ सभ अपन निर्णयपर अडिग रहल छलाह। संकल्पोक देख-रेख केलनि आ अर्पितोक पालन-पोषण करैत रहलाह । हुनकासभकेँ ई बात बूझल रहनि जे वृद्धावस्था आबि चुकल अछि । कखनहु किछु भए सकैत अछि । तेँ प्रयासमे रहथि जे अर्पिताक बिआह कए दी । ओ व्यवस्थित भए जाएत तँ निश्चिन्त भए संकल्पक काज कए सकब । मुदा सभटा सोचलहे थोड़बे होइत छैक। ओ सभ सोचिते रहि गेलाह । घटनाक्रम तेहन ने घुमल जे बहुत किछु सपना अपूर्ण रहि गेल । बेराबेरी दुनूगोटे दुनिआ छोड़ि गेलाह । मुदा समस्या तँ आब ई छल जे अर्पिता की करए?

3

मनुक्खक जन्म अपना हाथमे नहि छैक । मृत्यु सेहो ओकर वशमे नहि छैक । कहि सकैत छी जे ई सभ एकटा संयोग अछि,नियति अछि । जन्मसँ मृत्यु पर्यन्त मनुक्ख जीबाक हेतु,विकास करबाक हेतु,पूर्णता प्राप्त करबाक हेतु संघर्षशील रहैत अछि । जन्मक समय ओ एकदम असमर्थ रहैत अछि । मातापर पूर्णतः निर्भर रहैत अछि ।

ईश्वरक माया गजब अछि । जन्म होइतहि माएकेँ दूध आबि जाइत अछि । जन्मसँ पहिने माएक पेटमे ओकर पालन-पोषण केना होइत अछि? के ओकरा माएसँ जोड़ि दैत अछि? जन्म होइतहि ओकर अपन हाथ-पैर चलए लगैत अछि । ओकरा कानबाक लुरि आबि जाइत छैक आ कानिए-कानि कए अपन सभटा जरुरतिकेँ पूरा करबा लैत अछि । माता-पिताकेँ अबोध संतानक प्रतिए अपार सिनेह भए जाइत अछि । ओ कोनो तरहेँ अपन संतानक रक्षा करबाक हेतु कृतसंकल्प रहैत अछि ।

ई तँ भेलैक प्रकृति प्रदत्त स्वाभाविक व्यवस्था । मुदा हमरा संगे से किएक नहि भए सकल तकर जबाब हम आइ धरि ताकि रहल छी । हम अपन माता-पिताक रक्षा कवचसँ वंचित रहि गेलहुँ । कहि नहि सकैत छी जे

हम कोन पाप केने रही जे जनमिते घोर संकटमे पड़ि गेलहुँ । हमर माता-पिता एहन कठोर केना भए गेलथि जे हमरा जनमितहि अनाथालयक मुख्यद्वारिपर छोड़ि निपत्ता भए गेलथि ।

सोचल जा सकैत अछि जे एकटा असमर्थ दूधपीबा बच्चा ओहि परिस्थितिमे की कए सकैत छल? किछु नहि। हमर माताक हेतु ओ केहन निर्मम क्षण रहल हेतनि? कोनो माता अपन संतानकेँ एना छोड़ि देबाक हेतु एहिना तँ तैयार नहि भेल होएत? हम ओहि परिस्थितिक कल्पने मात्र कए सकैत छलहुँ । मुदा संकल्पमे रहनिहार कतेको बच्चा संगे एहिना भेल हेतैक । कोनो ने कोनो कारणवश ओकरासभकेँ अपन परिवारमे स्थान नहि भेटि सकल होएतैक, किंवा ओकर परिवार रहले नहि होएतैक? के जनैत अछि ककरा संगे की घटित भेल? ककर की मजबुरी छल?

एकदिन हम अन्हरोखे टहलैत-टहलैत प्रशासनिक खंडमे पहुँचि गेल रही । भीतर जेबाक जिज्ञास भेल । अंदर जाइत छी तँ टेबुलपर एकटा खाता खुजल धएल रहैक । हम ओकरा ऊनटबैत छी । ओहिमे संकल्पक सभ बच्चाक नाम लिखल रहैक । सभक आगू एकटा कोड लिखल रहैक । तकर बाद एकटा तिथि सेहो लिखल रहैक। हम ओकरा लिखि लैत छी । एहिसँ बेसी ओहिमे किछु

नहि भेटि सकल । हम ओकरा आओर उनटेबाक प्रयासमे रही कि पछिलका द्वारिसँ ककरो अएबाक संकेत बुझाएल। हम चोट्टे ओहिठामसँ बाहर निकलि जाइत छी । हम बहुत दिनसँ जिज्ञासा छल जे हमरा अपन इतिहासक जनतब होअए । हम बूझि सकी जे कोन कारणसँ हम जीवनक प्रारंभेसँ संकल्पक छत्रछायामे रहबाक हेतु विवश भेलहुँ । हमर ई अपेक्षा कही,जिज्ञासा कही पूरा होएबामे खातामे वर्णित जानकारी कतेक सहायक होएत से तँ भविष्येमे पता लागत ।

जे इजोत कहिओ देखबे नहि केलक से की जाने गेलैक रंग-विरंगक हाल । ओकरा लेल तँ जेहने कारी तेहने उज्जर । सएह हाल हमर छल । संकल्प एकटा आश्रय छल । जकरा किछु नहि,जकर केओ देखनाहर नहि ,तकरा लेल जीवन रक्षक बनि कए ठाढ़ छल । संकल्पमे रहनिहार बच्चासभ ओहिमे जीबि लैत छल । ओहिमे बढ़ैत छल,सभ किछु करैत छल जे एकटा मनुक्खक संतान करैत अछि । मुदा ओकरासभकेँ एहि बातक कोनो अनुमानो नहि रहैक जे एही दुनिआमे अहूसँ नीक किछु भए सकैत छलैक । जतए मातृत्वक सुख होइतैक,जतए पिताक स्नेहिल मार्गदर्शन होइतैक,जतए ओकर स्वतंत्र रुचिक ध्यान राखल जा सकितैक । कोनो अभाव भेलापर ओहूठामक नेनासभ कनैत छल । किछु कष्ट भेलापर

ओकरो आँखिमे नोर अबैत छलैक,बहि जाइत छलैक । मुदा ओकर एहि भावनाक बुझनिहारि माए कतएसँ अबितैक? तेँ ने ई अनाथालय कहबैत अछि । से जे होउक,मुदा एहन-एहन अनाथसभकेँ सनाथ करबाक हेतु निरंतर प्रयत्नशील रहैत छल-संकल्प आ ओकर वर्तमानमे मुख्य संरक्षिका अर्पिता ।

4

अर्पिताकेँ की नहि छलैक? ओकरामे सौंदर्य भरल छलैक । प्रतिभाक उत्कृष्टता छलैक । हृदय उदार आ मानवीय गुणसँ ओत-प्रोत छलैक । सुखी संपन्न परिवारमे जन्म भेल रहैक । ओकर पालन-पोषण माता-पिता बहुत नीकसँ केने रहथि । कहबाक माने जे ओकरा कोनो प्रकारक कमी नहि रहैक । ओकर माता-पिताक बहुत वाजिब इच्छा छलनि जे नीक सँ नीक बरसँ अर्पिताक बिआह होइक । ताहि प्रयासमे ओ सभ लागलो रहथि । मुदा ओकरा निर्णायक स्थिति धरि पहुँचाबएसँ पहिनहि ओ सभ एहि दुनिआकेँ छोड़ि गेलाह ।

सभ किछु अछैतो अर्पिताक जीवन जेना ठहरि गेलनि । एक दिस अपन व्यक्तिगत महत्वाकांक्षा छलनि

तँ दोसर दिस पाँच सएसँ बेसी अनाथ बच्चाक भविष्यक सबाल छल ।

ई बात सही छैक जे ककरो बिना दुनिआ ठहरि नहि जाइत छैक । सभकिछु चलैत रहैत छैक । नित्यप्रति किछु ने किछु घटित होइत रहैत छैक । तहिना संकल्पोक काज चलिते रहितैक । ओ बंद भए जइतैक से तँ नहि कहल जा सकैत अछि । नहि किछु तँ सरकार ओकरा अपन हाथमे लए लितैक । मुदा ओहिमे अर्पिताक माता-पिताक समस्त भावना समेकित छल । ओ सभ अपन जीवनक अधिकांश समय ओहिमे लगा देने छलाह । दिन-राति परिश्रम कए ओहि संस्थाकेँ अनाथ बच्चासभक हेतु आशाक एकटा केन्द्र बना देने छलाह । ततबे नहि,ओ सभ अर्पितामे अपन सभ मनोरथक पूर्तिक संभावना देखैत रहैत छलाह । आब तँ ओ सभ नहि छथि । रहि गेल अछि संकल्प आ सामनेमे उपस्थित छथि दुविधाग्रस्त अर्पिता ।

अर्पिता रातिभरि जगले छलि । भोरहरबामे कनीक आँखि लगलैक कि सपनाए लागलि । सपना तँ सीनेमाक रील जकाँ चलिते रहलैक । केना-केना ओ इसकूल गेनाइ शुरु केने रहए । केना ओकर माता-पिता ओकरा संगे इसकूल नाम लिखाबए गेल रहथि । केना ओहि इसकूलक प्रधानाचार्य ओकरासँ तरह-तरहक

सबालसभ केने रहथिन । ओ धराधर सभटा सबालक जबाब दैत चलि गेल रहए । अंतमे,ओ एकटा गीत गाबए कहने रहथिन । अर्पिता भक्तिपूर्वक सरस्वतीक वंदना गेने रहए -वीणा वादिनी वर दे... ओकर स्वरमे अपूर्व मधुरता छल । सभ केओ ओकर गीत सुनि कए बहुत प्रभावित भेल रहथि । प्रधानाचार्यजी तँ प्रसन्नतासँ ओकरा बहुत नीक पेन इनाममे देने रहथिन आ कहने रहथिन-

"ई बच्चा असाधारण प्रतिभाशाली अछि । एकर भविष्य निश्चितरूपसँ उज्ज्वल अछि । हुनका मुँहे ई बातसभ सुनि अर्पिताक माता-पिताक मोन प्रसन्नतासँ भरि गेल रहनि । अर्पिता सालक-साल पढ़ाइमे औअलि अबैत रहलीह । नीक सँ नीक करैत रहलीह । एहि तरहें हुनकर सपना चलैत रहल । तरह-तरहक बातसभ अबैत-जाइत रहल । अंतमे जेना ओकर माता-पिता संकल्पक मुख्यद्वारि लग ठाढ़ भेल ओकरा कहि रहल gछथि-

"एकर भार आब तोरेपर छह ।"

से कहि जेना ओ सभ लुप्त भए गेलाह । हुनकर निन्न टूटि गेलनि । सपना खतम भए गेल । ओकर आँखि खुजलैक तँ खिड़की बाटे कोठरीमे भगवान भास्करक ज्योति पसरि रहल छल । अर्पिता उठि बैसलि । बड़ीकाल धरि रातुक सपनाक बारेमे सोचैत रहि गेलि । ओकरा लगलैक जेना माता-पिता सद्यः ओकर मार्गदर्शन कए

गेलाह अछि । आब कोनो दुविधाक प्रश्ने नहि छल । संकल्पक अतिरिक्त ओकरा मोनमे आओर कोनो संकल्प नहि रहि गेल छलैक ।

असलमे नियतिकेँ जे करबाक होइत छैक से स्वतः भए जाइत छैक । ताहि हेतु किछु करबाक नहि होइत छैक । सभ रस्ता ओमहरे खुजि जाइत छैक । कहबी छैक जे जखन लंकामे हनुमानजी आगि लगा देलखिन तँ उनचासो हवा बहए लगलैक । सभ किछु देखैत-देखैत स्वाहा भए गेलैक । कमोबेस सभ मनुक्खक जीवनमे एहि तरहक घटना घटिते अछि । सभटा सोचलाहा धएले रहि जाइत छैक । अर्पिताक जिनगीमे सेहो तहिना भए रहल छलैक ।

ओहिदिन अर्पिता नहा-सोना कए भगवतीक पूजा केलक । हृदयसँ भगवतीक आराधना केलक । नहू-नहू जय जय भैरवि असुर भयाउनि.. गीत गाबि कए भगवतीकेँ प्रसन्न करबाक प्रयास केलक । ओ आब निश्चय कए चुकल छलि जे आगू ओकरा की करबाक छैक । ओ ठीक दस बजे संकल्पक प्रांगणमे पहुँचि गेल छलि । ओकरा अबितहि जेना हरबिरड़ो उठि गेल । ओहिठामक कार्यकर्ता आ अधिकारीलोकनि सतर्क भए गेलाह । कार्यालयमे पहुँचितहि अर्पिता सभकेँ आदरपूर्वक अपन बात कहनाइ शुरु केलनि-

"अहाँसभ तँ जनिते छी जे हमर माता-पिताकेँ संकल्पसँ कतेक लगाओ रहनि । ओ सभ एहि संस्थाक बच्चासभकेँ अपन संताने बुझैत रहथि । दिन-राति अपन समस्त शक्तिसँ एकर उन्नतिमे लागल रहलथि । आब ओ सभ एहि दुनिआमे नहि छथि । मुदा हुनकर काजकेँ तँ आगू बढ़ेबाक छैक । तेँ हम आगूक जीवन एहि संस्थाकेँ अर्पित करबाक निर्णय केलहुँ अछि । हमरा विश्वास अछि जे एहि पुण्यकाजमे अहाँसभक सहयोग पूर्ववते भेटैत रहत।

अर्पिताक निर्णय सुनि चारूकात प्रसन्नताक माहौल पसरि गेल । सभ थपड़ी पीटि रहल छल । ओहिठाम रहि रहल बच्चासभ सेहो प्रसन्न छल । सभगोटे एहि बातसँ आश्वस्त छल जे संकल्पक काज आब आओर नीक जकाँ चलैत रहत ।

5

संकल्प परिसरमे पैर धरिते अर्पिताकेँ रोमांच भए गेलनि । हुनका लगलनि जेना माता-पिता हुनका आशीर्वाद दए रहल छथि । कहि रहल छथि-

"बहुत नीक काज करए जा रहल छह आर्पिता । संकल्पक एतेक विशाल परिवारक पालन-पोषण करबासँ

बढ़ि कए किछु पुण्य नहि भए सकैत अछि, किछु पैघ उपलव्धि नहि भए सकैत अछि । हमरसभक हार्दिक शुभकामना तोरा संगे अछि आ सदिखन रहत ।”

अर्पिताकें मोन पड़ि रहल छनि जे केना हुनकर पिता कैकबेर अपना संगे संकल्प लेने अबैत छलखिन । खास कए जखन कखनहु विशेष आयोजन रहैत छलैक तखन तँ ओ हुनका संगे रहिते छलीह । संकल्प परिसरक एक-एक बीत जगहपर हुनकर माता-पिताक प्रतिबिम्ब झलकि रहल छल । लागि रहल छल जेना ओ सभ असंख्य रूप धए ओहि परिसरक कण-कणमे विद्यमान भेल छथि। ओहिठामक हवा,ओहिठामक रस्ता,ओतए रहनिहार संकल्पबासी सभकिछुमे हुनकर सभक स्मृतिक आभास होइत छल । एहन आनन्द कतए भेटैत? कतहु नहि । से सोचि-सोचि अर्पिता मंत्रमुग्ध भए रहल छलीह ।

अर्पिता संकल्पक मुख्य भवनमे प्रवेश कए रहल छलीह । ओहिठाम कार्यरत समस्त अधिकारी आ कर्मचारी लोकनि हुनकर स्वागतमे ठाढ़ छल । ओहि अवसरपर संकल्पक बच्चासभक दिससँ सांस्कृतिक कार्यक्रम सेहो आयोजित कएल गेल छल । कार्यक्रमक बाद जलखै आ चाह-पानक ओरिआन तँ छलहे । असलमे अर्पिताक निर्णयसँ सभकेओ ततेक प्रसन्न रहथि जकर वर्णन करब मोसकिल अछि । ई कार्यक्रमसभ तकरे परिणति छल ।

भोरेसँ संकल्पबासी बच्चासभ एहि आयोजनकेँ सफल करबामे लागि गेल रहथि । चारूकात नीकसँ तरह-तरहक फूलसभ सजाओल गेल छल । सभामण्डपमे मधुबनी चित्रकलाकेँ प्रमुखतासँ देबालसभपर टांगल गेल छल । स्वागत गानक हेतु ओहिठामक गीत गाइनसभकेँ बजाओल गेल छल ।

आखिर ओ क्षण आबिए गेल जकर ओ सभ भोरेसँ प्रतिक्षा कए रहल छलाह । अर्पिता संकल्पक प्रमुख कर्ता-धर्ता लोकनिकसभक संगे सभामण्डपमे पहुँचि रहल छलीह। बच्चासभ एकस्वरसँ बाजि उठल-

स्वागतम् ! स्वागतम् !

संकल्पक सभामंडपमे अर्पिताक हेतु बच्चालोकनि स्वागत गान गओलनि-

“मंगलमय दिन आजु हे पाहुन छथि आएल...” मण्डपक वातावरण संगीतमय भए गेल छल । लगबे नहि करैक जे ओतए एतेक लोक एकत्र भेल छथि । स्वागत संगीत समाप्त होइतहि सभामण्डप करतलध्वनिसँ गुंजित भए रहल छल । सभ बेहद आनन्दमे छल । मुदा अर्पिता बहुत गंभीर भए गेल रहथि । संकल्पक प्रतिए अपन जिम्मेबारीक अनुभव हुनका भए रहल छलनि । कहि नहि ओ एहि काजमे कतेक सफल भए सकतीह? रहि-रहि कए इएह प्रश्न हुनकर मोनमे आबि रहल छल । स्वागत

गीतक बाद अर्पितासँ बच्चासभकेँ परिचय कराओल गेल। यद्यपि हुनका किछु बजबाक इच्छा नहि रहनि मुदा सभक बात मानि ओ माइक हाथमे लेलनि-

"हमरा लेल आइ जीवनक बहुत अद्भुत दिन अछि। संकल्पक सभामण्डपमे एतेक बच्चासभक बीच अपनाकेँ देखि हम अतिशय आह्लादित छी, आनन्दित छी। संकल्प हमर माता-पिताक कर्मस्थली छल । ओ सभ जीवन भरि एकरा अपन वृहद परिवार बुझैत रहलाह । आब ओ सभ नहि छथि । मुदा तेँ की? हमसभ मिलि कए हुनकर स्वप्नकेँ साकार होइत देखब आ एहि बातकेँ सुनिश्चित करब जे एहिठाम रहि रहल एक-एकटा बच्चा अपन-अपन मेधाक अनुसार पूर्ण विकास कए सकए,जीवनमे सव्यवस्थित भए सकए.अपन पैरपर ठाढ़ भए समाजमे सम्मानपूर्ण जीवन जीबि सकए । यदि हमसभ एहि काजमे सफल होइत छी तँ एहिसँ पैघ उपलव्धि आओर की भए सकैत अछि ? हमरा पूर्ण विश्वास अछि जे एहि महान काजक हेतु हमसभ सतत प्रयत्नशील रहब । संकल्पक संसाधनकेँ एहि लक्ष्यक प्राप्ति हेतु सदुपयोग करब । ईश्वर हमरालोकनिक सहायता करथि ।"

-से कहि ओ बैसि गेलीह । आओर आगू नहि बाजि सकलीह । भावनामे हुनकर गला बाझि गेल छलनि,

आँखिसँ अश्रुपात भए रहल छलनि । लोकसभ हुनकर ई हालति देखि बहुत चिंतामे पड़ि गेलाह । हुनका आश्वस्त करैत रहलाह जे ओ सभ हुनका सभ तरहें संग छथि आ रहताह । सभा विसर्जित हेबासँ पहिने सभगोटेकेँ जलखै देल गेल । चाह-पान सेहो भेल । सभ प्रसन्नतापूर्वक अपन-अपन स्थानपर लौटि गेलाह । तकर बाद संकल्पक अधिकारी लोकनि अर्पिताकेँ कार्यालय दिस लेने गेलथि ।

आइ पहिल बेर अर्पिता संकल्पप्रमुखक कोठरीमे बैसल छलीह । हुनका सामनेमे आवश्यक जानकारी देबाक हेतु अधिकारीलोकनि सेहो बैसल रहथि । ओतए रहनिहार प्रत्येक बच्चाक नाम आ ओकर उपलव्ध इतिहास एकटा बेस मोट बहीमे लिखल छल । अर्पिता बेरि-बेरि ओकरा उल्टा-पुल्टा कए देखि रहल छथि । किछु-किछु प्रश्न सेहो पुछैत रहैत छथि । ओहिठाम रहि रहल एक-एक बच्चाक बारेमे ओ जानए चाहैत छथि । ओकरसभक विवरण पढ़ैत छथि । संगे ओहि बच्चाकेँ सेहो बजबैत छथि । एहीक्रममे हमरो बजाओल गेल । हमरो खतिआओन देखल गेल । हम जखन अर्पिताक सामने अएलहुँ तँ जेना ओ बहुत विस्मित भेलथि । बहीमे हमरासँ संबंधित पन्नाकेँ बहुत ध्यानसँ देखथि । किछु-किछु हमरासँ पुछबो केलनि । तथापि हुनकर मोनक जिज्ञासा जेना शांत नहि भए

सकलनि । मुदा हमरा सामने ओ किछु नहि बजलीह । हम ओहि कोठरीसँ बाहर होइत-होइत एतबे सुनि सकलहुँ-

"एहि बच्चाक माता-पिताक सामनेक जगह खाली किएक अछि?"

अधिकारीसभ तकर की जबाब देलनि से सुनबाक लेल हम ओतए नहि रही । हम कोठरीसँ बाहर चलि गेल रही । एहि तरहें अर्पिताक संकल्पमे पहिल दिन बहुत व्यस्त रहलनि । आब ओ थाकि गेल रहथि । साँझ से पड़ि रहल छल । सभसँ बिदा लए ओ मोनमे बहुत रास जिज्ञासाक संग अपन घर वापस भए गेलथि ।

ओहिदिन अर्पिताक कोठरीसँ निकलि हम भोकासी पाड़ि कए कानल रही । आखिर केओ ने केओ तँ हमर जन्मदातृ हेबे करतीह । हमरो पिता हेबे करताह । ओहिना आकाशसँ तँ हम टपकि नहि गेल होएब । तखन हमरा अपन परिचयसँ किएक वंचित कएल गेल ? किएक नहि आन बच्चा जकाँ हमरो परिवारमे पालन-पोषण भए सकल? ओही जिज्ञासाकेँ शांत करबाक हेतु हम मौका पाबि ओहि बहीकेँ उनटओने रही । अपना नामक आगू किछु विशेष जानकारी नहि भेटि सकल छल । एहि बातसँ हमरा घोर निराशा भेल रहए । तकर बाद हम संकल्प परिसरसँ निकलि कए वृंदावन चलि गेल रही ।

6

वृंदावनक नामेमे चुंबकीय आकर्षण अछि । कहि नहि कहिआसँ लाखों लोक एहि पवित्रस्थानमे आबि,भगवान कृष्णक दर्शन कए धन्य भेल छथि । एकसँ-एक संत-महात्मा एहि स्थानपर तपस्या केने छथि ,भजन-कीर्तन करैत अपन जीवन बितओने छथि । कतेको अनाथ विधवासभ जीवनक समस्त त्रासदीकेँ बिसरि भगवान कृष्णसँ अपनाकेँ जोड़ि जीवनकेँ सहजतासँ जीबि लेने छथि। एहि माटिमे जतहि देखु सदति कृष्ण!कृष्ण! गुंजित होइत रहैत अछि । कहि नहि कहिआ कृष्ण अवतार लेलनि.कहिआ ओ वृंदावनमे रास रचओलनि,मुदा अखनहुँ लगैत अछि जेना ओ हँसैत-बजैत कोनो कोनसँ प्रकट भए जेताह आ प्रतीक्षारत समस्त जन समुदायक कष्ट हरि लेताह । धन्य थिक वृंदावन,धन्य थिकाह एहिठामक माटि-पानिसँ जुड़ल लोकसभ ।

वृंदावनक अपन खूबी अछि जे लोकसभ एक-दोसरकेँ अभिवादन राधे! राधे! कहि कए करैत अछि । अहाँ पैरे चलैत होइ वा रिक्सापर,किंवा कारसँ उतरि कोनो मंदिरमे दर्शन करए जा रहल होइ,सामने आबि-जा रहल व्यक्ति किछु कहबासँ पहिने राधे! राधे! कहबे करत । ई

ओहि माटिक प्रभाव थिक । आ से होउक कोना नहि ? जाहिठामक माटि-पानिमे भगवान कृष्ण रचल-बसल होथि ओतए तँ ई अपेक्षिते अछि, आओर ककर नाम लेल जाएत?

एहन पवित्रभूमिपर आइ किछु विशेष आयोजन छल । भोरेसँ गहमा-गहमी छल । संत सिरोमणि मौनीबाबा वृंदावन आबि रहल छलाह । भक्तलोकनिमे अपूर्व उत्साह देखबामे आबि रहल छल । मौनीबाबाक आश्रममे आइ भोरेसँ हुनकर स्वागतक हेतु तैयारी चलि रहल छल। आश्रमकेँ तरह-तरहक फूलक मालासँ सजाओल गेल छल। इलाका भरिक लोक बेरा-बेरी आबि रहल छल। केओ पैरे,केओ साइकिल,केओ कारसँ । माइलक-माइल लोकक हुजुम सड़कपर देखा रहल छल । नाना प्रकारक वस्त्र पहिरने,धिआ-पुताक संगमे लेने सभ एकहि दिशामे आगू बढ़ल जा रहल छल । रहि-रहि कए ओ सभ जयकारा सेहो लगा रहल छल-

"संत सिरोमणि मौनीबाबाक जय!"

कतेको गोटे अपन-अपन हाथमे मौनीबाबाक फोटो लेने चलि रहल छल । केओ नाचि रहल छल,गाबि रहल छल । कहि नहि सकैत छी जे सड़क पर चलि रहल असंख्य लोकक की उत्साह छल । आश्रमक मुख्यद्वारिपर

भक्त लोकनि मंगलगान कए रहल छलाह । उत्साहमे किछु भक्तलोकनि सहरमे आगू बढ़ैत गेलाह । लगपासक लोक ओहिमे जुड़ैत गेल । एहि प्रकारें लोकसभक हुजुम बढ़िते गेल ।

हमर मोन संकल्पमे उबिआ गेल छल । ओहिठाम लोकसभ भरल छल,हमरा सन-सन कतेको बच्चासभ अपन जीवन -यापन कए रहल छल , ओहिमे सँ कैकगोटे हमरा संगे हिलि-मिलि गेल छल , दुख-सुख बतिआइत छल । तथापि,हमर मोन बेचैन छल । ओ सदिखन किछु ताकि रहल छल,जे भेटि नहि रहल छल । आखिर, एकदिन हम संकल्प छोड़ि वृंदावनक रस्ता पकड़ि लेलहुँ ।

हम वृंदावन पहुँचि जाइत छी । ओही समयमे मौनीबाबाक स्वागतक हेतु जमा भेल भीड़सँ सड़कपर मुखापेक्षी होइत छी । रिक्साबला घंटी टनटनबइत रहि जाइत अछि,मुदा लोकसभपर किछु असरि नहि पड़ि रहल छैक । ओ अपना धुनमे मगन अछि । चलैत जा रहल अछि । ओकरा मोनमे बस मौनीबाबा रमल छथि ।

सड़कपर जमा भेल भीड़ देखि रिक्सा बला आगू बढ़बासँ हाथ ठाढ़ कए देलक ।

“की भेलह?”

“देखि नहि रहल छिऐक जे सड़क पर की हाल छैक?”

“तखन?”

“तखन की? उतरि कए पैरे चलि जाउ । रिक्सासँ पहिने मंदिरपर पहुँचि जाएब ।”

“मुदा तोहर हिसाब केना हेतह?”

“जे मोन होअए से दए दिऔक । हम एतहिसँ वापस चलि जाएब ।”

हम रिक्सापरसँ उतरि गेलहुँ । जेबीसँ किछु टाका निकाललहुँ आ रिक्साबलाकेँ थमा देलिएक । रिकसाबला टाका गनैत अछि । ओकर मोन प्रसन्न भए जाइत छैक। मुस्काइत बजैत अछि-

“तेरह टाका? ई तँ बेसी भेल । दस टाकासँ बेसी किराया नहि बनैत छैक ।”

“राखि ने लएह । हमरा दिससँ बच्चासभकेँ मधुर कीनि दिअहक ।”

रिक्साबला चकित छल । मोने-मोन सोचि रहल छल - “आइओ-काल्हि एहन लोक होइत छैक ।” रिक्साबला हमरा बहुत आदरसँ देखलक । फेर किछु

कहए चाहलक ,ताबेमे पाछूसँ लोकसभ रिक्साकेँ ठेलि देलक ।

“एना किएक धक्का मारि रहल छह?”

“बीच सड़कमे एना ठाढ़ छह आ उल्टे हमरे कहि रहल छह?”

रिक्सा बला रिक्साकेँ पाछू मोड़ि लैत अछि । थोड़े काल पैरे-पैरे ओकरा घिचैत अछि । फेर मौका देखि रिक्सापर चढ़ि वापसी यात्रापर बिदा भए जाइत अछि ।

लोकक हुजुम ओहिना बढ़िते जा रहल छल । भजन-कीर्तन सेहो अनवरत भइए रहल छल । हम रिक्सापरसँ उतरि सड़कक कातमे ठाढ़ भेल ओहि अद्भुत दृश्यकेँ निहारि रहल छलहुँ । अचानक जेना सभ किछु ठहरि गेल । लोकक आवागमन बंद भए गेल । लोकसभ कीर्तन केनाइ छोड़ि देलनि । बुझेबे नहि करए जे ई की भेलैक? थोड़बे कालमे एकटा महात्माजी देखाइत छथि । हुनकर सौंसे माथपर जटा छल । देहमे भस्म लगओने रहथि । किछु बाजथि नहि । लोकसभ हुनका मौनीबाबा कहैत छलनि । हुनकर पाँजरमे ठाढ़ भेल एकटा चेलाक हाथमे प्रसादसँ भरल तसली छल । ओ ओहिमेसँ वारंबार प्रसादक वर्षा करैत छलाह । भक्तलोकनि ओहि प्रसादकेँ लुटबाक हेतु दौड़ैत छल । ककरो-ककरो प्रसाद हाथ लागि

जाइत छलैक । ओ प्रसन्नतापूर्वक ओकरा खाइत छल । शेषलोक फेरसँ ओहिना प्रसाद पेबाक हेतु प्रयासरत भए जाइत छल । ई क्रम चलिते रहल । हुनकर जीप मंद गतिसँ आगू बढ़ि रहल छल । लोकोसभ आब व्यवस्थित भए गेल छलाह । चारूकात बस एकटा स्वर सुनाइत छल-

"मौनीबाबाक जय!"

मौनीबाबा मुस्का दैत छलखिन । लोकोसभक उत्साहकेँ बढ़ा दैत छलखिन । भजन कीर्तन फेरसँ शुरु भए गेल । लोकसभ हुनकर पाछू-पाछू बिदा भेल ।

मौनीबाबा केओ चालीससँ बेसीक नहि कहि सकैत छल । महात्माजीसँ भेंट भेलाक बाद ओ गुप्त बासमे रहथि, मौन रहथि । दिन-राति एही चिंतामे रहथि जे कहुना वृंदावनमे मंदिरक निर्माण भए जाए । आब हुनकर संकल्प पूर्ण हेबाक समय आबि गेल रहनि । भक्तलोकनि कहथि जे आब ओ अपन मौन समाप्त कए देताह । शरदपूर्णिमाक रातिमे हुनकर स्थानपर विशेष आयोजन होएत । ओही कार्यक्रममे वर्षो बाद ओ अपन शिष्यलोकनिकेँ आशीर्वाद देताह। हुनकर शिष्यलोकनि बहुत आतुरतासँ ओहि क्षणक प्रतीक्षा कए रहल छलाह । सड़कपर देखा रहल लोकक हुजुम आ तकर उत्साह तकरे प्रमाण छल ।

मौनीबाबाजीक अलौकिक रूपक दर्शन करिते जेना हमरा करेंट लागि गेल । हम ओहि समय सड़कक कातमे ठाढ़ छलहुँ । लागल जेना देहमे उपरसँ नीचाँ दिस किछु पैसि रहल अछि । हमर आँखि बंद भए गेल । ओही समयमे सड़कपर भीड़ अनियंत्रित भए गेल । लोकसभ एक-दोसरकेँ धक्का दैत आगू बढ़बाक उपक्रम करए लागल । ताहिक्रममे कैकगोटे ठामहि खसलाह । लोकसभ हुनकापर चढ़ि-चढ़ि आगू बड़बाक प्रयासमे लागल रहल । हमरो केओ पाछूसँ धक्का मारलक । हम ठामहि खसलहुँ। एहि बीचमे कैकगोटे हमरापर चढ़ि चुकल छलाह । हम बेहोस भए गेल रही । संयोग जे ओहि समयमे लगमे अर्पिता छलीह । ओ हमरा तुरंत सड़कपरसँ उठा लेलनि।

तकर बाद की भेल की नहि हम किछु नहि बूझि सकलहुँ । साँझमे जखन हमरा होस आएल तँ देखैत छी जे हम मंदिरक विश्रामालयमे पड़ल छी । हमरा कैकठाम पट्टी बान्हल छल । सौंसे देहमे दर्द कए रहल छल । सामनेमे मौनीबाबाजी मन्द-मन्द हँसि रहल छथि । अर्पिता हुनका किछु कहि रहल छथिन ।

7

हम एकटा अनाथ बच्चा सभदिन नियतिसँ संघर्ष करबाक अभ्यस्त भए गेल छलहुँ । दिल्लीक एकटा अनाथालयमे शुरुएसँ पालन-पोषण भेल रहए । माता-पिताक मुँहो नहि देखि पाएल रही । कहि नहि कोन एहन परिस्थिति भेल छल जे हम जनमितहि अनाथालय पहुँचि गेल रही । ओतहिसँ मैट्रिकक परीक्षा देने रही । अनाथालयमे रहैत नित्य वृंदावनक चर्चा चुनैत रहैत छलहुँ । तेँ परीक्षा समाप्तिक बाद मौका भेटितहि ओतए गेल रही ।

मुदा वृंदावनमे किछु देखि सकितहुँ,ताहिसँ पूर्व नियति किछु आओर खेल कए देलक । आश्रममे मौनीबाबाजी आ अर्पिताकेँ संगे अपनाकेँ देखि हम अभिभूत रही । सपनोमे नहि सोचि सकल रही से दृश्य आइ देखि रहल छी । मौनीबाबा हमरा दिस जिज्ञासापूर्ण दृष्टिसँ देखि रहल छलीह । संभवतः ओ हमरा बारेमे जानए चाहैत छलाह । मुदा हम हुनका की कहितिअनि? अपन परिचय की दितिअनि? तेँ चुप्पे छलहुँ । आखिर हुनका नहिए रहल गेलनि। ओ पुछैत छथि-

“अहाँक की नाम अछि?”

“मिहिर”

“अहाँक माता-पिताक नाम?”

“हम चुप्पे रहि गेलहुँ ।”

मौनीबाबा हमर चुप्पीसँ बहुत चकित छलाह ।

“अहाँ चुप्प किएक छी?”

“हमरा अपनहु एहि प्रश्नक जबाब नहि बूझल अछि।”

“ओ!”

“तँ अहाँ रहैत कतए छी?”

“दिल्ली स्थित अनाथालयमे?”

“ओ! एहिठाम कोना अएलहुँ?”

“किछु एहन घटना घटित भेल जे हम अनाथालय छोड़ि देलहुँ । बड़ीकाल धरि सोचैत रहलहुँ जे कतए जाइ? आगूक जीवन कोना चलत? आगू नाथ ने पाछू पगहा ।”

“तखन?”

“तखन की । मोनमे भेल जे वृंदावन चलैत छी । भए सकैत अछि जे ओतए कोनो रस्ता निकलए । नहि किछु तँ भगवान कृष्णक दर्शन तँ हेबे करत ।”

मौनीबाबाक प्रश्नक उत्तर देबाक क्रममे हमर आँखि नोरसँ भरि गेल छल । जेना ओ प्रश्नसभ हमर मोनक घावकेँ ओदारि कए राखि देने होअए । हम तँ स्वयं प्रश्न छलहुँ । ककरा की-की उत्तर दए सकितहुँ? केओ हमर नहि छल जकरासँ मोनक गप्प बतिआ लितहुँ । जकरासँ

अपन सही परिचय पूछि लितहुँ आ लोकसभकेँ गर्वपूर्वक कहितिऐक जे हम फलना बाबूक पुत्र छी । हमर गामक नाम ई अछि । हमर मात्रिक फलना गाम अछि । मुदा एतए तँ परिचयक नामपर एकटा विशाल शून्य छल जे संभवतः कहिओ भरल नहि जा सकैत छल ।

अर्पिता जलखैसँ भरल छिपली हमरा आगूमे राखि दैत छथि । बहुत सिनेहसँ जलखै कए लेबाक आग्रह करैत छथि । मौनीबाबाजी सेहो सहमतिमे मुड़ी हिला दैत छथि। हम जलखै करए लगैत छी । अर्पिता ओतहि हमरे लग बैसि जाइत छथि । हम निश्चिंत भावसँ जलखै करैत छी आ अर्पितासँ गप्पो करैत रहैत छी । बाहर भक्त लोकनि बहुत व्याकुल छथि । ओ मौनीबाबाक दर्शन करबाक हेतु कहि नहि कखनसँ पाँतिमे लागल छथि। बाबाक चेला हुनका बाहर लेने चलि जाइत छथि ।

8

संयोगसँ वृंदावनमे अर्पिता भेटि गेलथि । मौनीबाबाक दर्शन हेतु उमरल भीड़मे हम हुनका सड़कक कातमे देखा गेल रहिअनि । ओ हमरा अपना संगे मौनीबाबाक आश्रम लेने चलि आएल रहथि । कहि नहि किएक,हमरा ओहिठाम पहुँचि बहुत नीक लागल रहए ।

लागए जेना हम मौनीबाबाकेँ कहि नहि कहिआसँ जनैत छिअनि । बाबा सेहो हमरा देखि बहुत प्रसन्न भेल रहथि।

"हिनका नीकसँ रखिअनु । कोनो परेसानी नहि होनि, से देखब ।"-बाबा अर्पिताकेँ कहलखिन । हमरा ई बात बुझेबे नहि करए जे आखिर मौनीबाबा अर्पिताकेँ कोना जनैत छथि? एक मोन भेल जे हुनकेसँ ई बात पूछि लिअनि । फेर भेल जे कहीं खराब ने लागि जानि । फेर बहुत दिनपर कनी नीक समय बूझा रहल छल । लागि रहल छल जेना अपन घरमे वापस आबि गेल छी । तखन अनेरे अपनेसँ माहौलकेँ खराब किएक कएल जाए? जतबे काल सुख भेटि रहल अछि तकर आनन्द किएक ने उठाओल जाए ?

हमरा ओतहि छोड़ि मौनीबाबा भक्तलोकनिक आग्रहकेँ देखैत हुनकासभ लग चलि गेल रहथि । मुदा अर्पिता बहुत कालधरि हमरा संगे रहलथि । हमर बात बहुत ध्यानसँ सुनलथि ।

"अहाँ संकल्प छोड़ि बाहर किएक भेलहुँ? यदि अहाँकेँ कोनो परेसानी भेल तँ हमरा किएक नहि कहलहुँ? हम तँ दिन-राति ओतए अहींसभ लेल काज करैत छी । बच्चासभक लेल सदरिकाल उपलव्ध रहैत छी ।" ओ बेरि-बेरि इएह पुछथि । हम की कहितिअनि? चुप्पे रहि जाइ। से हुनका आओर परेसान करनि ।

अपना भरि अर्पिता हमरा बहुत आश्वस्त केलनि।

"अहाँ संकल्प नहि छोड़ू । ओकरा अहाँ अपन घरे बुझू । संकल्प एकटा विशेष उद्देश्य लए कए चलि रहल अछि । अहाँ सन-सन कतेको बच्चा एहि परिवारक सदस्य छथि । सभ अपना-आपमे मूल्यवान छथि । सभक जीवन अपन-अपन प्रतिभाक अनुसार उत्कृष्टतापर पहुँचनि ताहि हेतु हम एहि संस्थामे सभ किछु छोड़ि सामिल भेल छी।"

"मुदा हम तँ अपनाकेँ अर्थहीन बूझि रहल छी ।"

"तकर वजह?"

"की कहि सकैत छी?"

"जखन अहाँ किछु कहबैक नहि तँ हम बुझबैक कोना? समाधान हेतैक केना? हमरापर विश्वास करू । हम अहाँकेँ निराश नहि करब ।"

"हम अपन माता-पिताक बारेमे जनतब चहैत छी। हम अपन गामक बारेमे जानए चाहैत छी । हमर पुरखा के छलाह? ओ केहन परिवेशक लोकसभ छलाह? आखिर हुनकर सभक की मजबुरी भेलनि जे हमरा एहि हालतिमे जीबाक हेतु मजबूर होबए पड़ल अछि?"

"अहाँक प्रश्न बहुत वाजिब अछि मिहिर! हम अहाँक कष्ट नीकसँ बूझि रहल छी ।"

"अहाँ हड़बड़ाउ नहि । हम अहाँक संगे ठाढ़ छी आ रहब । अहाँ संकल्प वापस चलू । ओतए अपन पढ़ाइ-

लिखाइपर ध्यान दिअ । जीवनमे अपनाकेँ स्थापित करू। समयसँ सभ समस्याक समाधान हेतैक ।”

“मुदा हमर जिज्ञासाक की होएत? ओकर समाधान बिना तँ हमरा कथुमे मोन नहि लागि रहल अछि । राति-राति भरि हम जागल रहैत छी । तथापि हम अपन माता-पिताक एकटा काल्पनिक स्वरुपो नहि सोचि पबैत छी ।”

“हमरा हिसाबे अहाँकेँ धैर्य राखक चाही । बहुत रास बच्चासभ एहने परिस्थितिमे छथि । हुनकोसभक हेतु अहाँ एकटा उदाहरण बनि सकैत छी ।”

“हम तँ आब वृंदावनेमे रहि जाए चाहैत छी । एतहि भगवाक शरणमे चलि जाइ सएह ठीक बुझाइत अछि ।”

“अहाँ अगुताइ नहि । जीवनमे सफल हेबाक हेतु धैर्य बहुत जरूरी अछि । अहाँमे बहुत रास नैसर्गिक गुण अछि । हमरा विश्वास अछि जे कालक्रममे अहाँ देश आ समाजक बहुत उपकार कए सकब । अखन अहाँ बहुत थाकल छी । थोड़े काल विश्राम करू । हमसभ फेर गप्प करब ।”

अर्पिताकेँ हम आश्वस्त करैत छिअनि जे आगू किछु करबासँ पूर्व हुनकासँ अबस्स विमर्श करब । ताहि बातसँ ओ बहुत प्रसन्न होइत छथि । अर्पिता हमर भोजनक ओरिआन करैत छथि । हम भूखाएल रहबे

करी। रुचिपूर्वक भोजन करैत छी । अर्पिताक आग्रहपर हम ओतहि विश्राम करैत छी । थोड़बे कालमे हमरा आँखि लागि जाइत अछि । हमरा सुतल देखि अर्पिता प्रसन्न होइत छथि । ओ मौनीबाबासँ भेंट करबाक हेतु हुनकर कक्ष दिस चलि जाइत छथि ।

9

मौनीबाबा वृंदावन अबिते रहैत छलाह । अपना भरि पूरा प्रयास करथि जे एकर प्रचार नहि होइक । ताहि लेल ओ सामान्यतः अन्हरोखे वृंदावन पहुँचि जाइत छलाह । तकर बाद ओ कतए जाइत छलाह,की करैत छलाह साइते ककरो पता रहैत छलैक । वृंदावनमे ओ मौनीबाबाक रूपमे जानल जाइत छलाह । कहल जाइत छैक जे ज्ञानक आयुसँ बेसी मतलब नहि होइत छैक । से बात ओ सिद्ध केने छलाह । ओ कहिआ सन्यास लेलनि,किएक लेलनि,हुनकर गुरु के छलनि,ई बातसभ ककरो नहि बूझल रहैक । लोकसभ एही बातसँ बहुत प्रभावित रहए जे ओ बहुत विद्वान छथि,लोककल्याणमे बहुत रुचि छनि । कालान्तरमे इहो बुझबामे अएलैक जे ओ संकल्पसँ जुड़ल छलाह । ओतए बहुत दिनसँ हुनकर संपर्क छलनि । समय-समयपर ओ एहि संस्थामे प्रचूर

धन दान देल करथि । मुदा गुप्तरूपसँ । कहिओ सामने नहि अएलाह । अर्पिताक माता-पिता एहि बातसँ बहुत विस्मित रहैत छलाह जे आखिर ई के छथि जे संस्थामे एतेक दान दैत छथि आ कोनो प्रकारक अपेक्षा नहि रखैत छथि । अपन नामो धरि बाहर नहि करैत छथि । मुदा ओ सभ एही बातसँ प्रसन्न रहैत छलाह जे संकल्पक काजमे ओ मदति करथि । हुनकासँ प्राप्त धनसँ बहुत रास बच्चासभक कल्याण होइत छल ।

कालान्तरमे जखन अर्पिताक माता-पिता स्वर्गबासी भए गेलाह तखनो मौनीबाबा अपन काज करिते रहलाह। शुरुमे अर्पिताकँ सेहो बहुत आश्चर्य होइक,बहुत जिज्ञासा रहैक जे आखिर ओ गुप्तदान केनिहार छथि के? ओ सामने किएक नहि होइत छथि?अर्पिताक जिज्ञासा बढ़िते गेल । ओ नित्य संकल्प गेलाक बाद दान-पुस्तिका बहुत ध्यानसँ देखैत छलीह । प्रयास करैत छलीह जे ओहि अज्ञात दानीक पता कहुना लगाओल जाए । मुदा हाथमे फोकले अबैत छलनि । मुदा एकदिन गजब भए गेल । की भेल? कहैत छी ।

एकदिन अन्हरोखे अर्पिता संकल्प परिसरमे प्रातः भ्रमण कए रहल छलि । ओहि राति हुनकर माता-पिताक स्मृतिमे ओतए विशेष कार्यक्रमक आयोजन कएल गेल छल । बहुत राति धरि भजन-कीर्तन चलैत रहल । तकर

बाद ओ ओतहि रहि गेलथि । भोरे अएबेक रहनि । फेर थाकिओ बहुत गेल रहथि । कतबो अबेरे सुतलथि,मुदा ओ अपन समयेपर भोरे भेने उठि गेलथि । प्रातः भ्रमणक क्रममे दानपेटी लग किछु लोकक आहट बुझेलनि । ओ ओतहि सीढ़ीक औढ़मे रूकि गेलीह । देखैत छथि जे एकटा युवक सन्यासी दानपेटी दिस बढ़ि रहल छथि । ओ चकुआएल चारूकात देखि रहल छथि । फेर जेबीसँ टाकाक थाक निकालैत छथि आ दान पेटीमे राखि रहल छथि । हुनकर ध्यान ओहिकाजमे लागल छनि । ताबतेमे अर्पिता पाछूसँ हुनकर लगीच पहुँचि जाइत छथि । दानपेटीमे टाका खसा कए जहाँ ओ पाछू घुमैत छथि कि ओ अर्पितासँ मुखापेक्षी होइत छथि । अचानक एहि तरहें ककरो सामनेमे देखि ओ सकपका जाइत छथि । हुनकर मनःस्थितिकँ देखि अर्पिताकँ नहि रहल गेलनि । ओ भभा कए हँसि दैत छथि । मौनीबाबा चकित छथि । आखिर ई एतए कोना पहुँचि गेलीह?

मौनीबाबा असगर रहथि । ओ अपन वाहन चालकोकँ फटकीए छोड़ि देने रहथि । गुप्तदान माने गुप्त। कोनो प्रकारक लम्फ-लंफासँ हुनका किछु लेना-देना नहि छल । संकल्प एकटा नीक काजमे लागल छल । तेँ निस्वार्थ भावसँ ओ ओहिमे यथासंभव योगदान करैत छलाह । आब ओहिमे किछु रहस्य यदि नुकाएल होइक

तँ से ओएह कहि सकैत छथि । सामान्य लोक ई बात सोचि सकैत अछि जे जरूर हुनकर किछु अभीष्ट हेतनि। आब से जे होनि ,मुदा ओ कोनो अधलाह काज तँ करथि नहि जकर जाँचक प्रयोजन होएत?

मुदा आइ भोरे जे भेल से एकदम अप्रत्याशित भेल। निःसंदेह अर्पिता बहुत दिनसँ एहि बातक जानकारी चाहैत छलीह । मुदा से जानकारी एना अचानक सामने आबि जाएत से ओ नहि सोचि पाबि रहल छलीह । अचानक हुनका मुँहसँ निकलि गेलनि-

“राजेश! तूँ ऐहिठाम आ एहि वेषमे? ”

मौनीबाबा की बजितथि? ओ तँ जेना सेन्हपर पकड़ा गेल छलथि । से जे भेल होइक,मुदा हुनकर मोनमे एकटा अपूर्व आनन्दक भाव प्रकट भए रहल छलनि । एकटा अप्रत्याशित घटना घटि रहल छल । एकटा एहन क्षण अचानक उपस्थित भए गेल छल जकर ने ओ ने अर्पिता कल्पनो केने रहथि । मुदा सत्य सामने छल।

10

राजेश आ अर्पिता एकहि इसकूलमे पढ़ैत रहथि । राजेश अर्पितासँ बएसमे पैघ रहथि । मुदा किलासमे संगी रहथि । इसकूलसँ कालेज पहुँचलापर ओ सभ फराक भए

गेलथि । मुदा एमएमे फेर एकहिठाम भए गेलथि । इसकूलेक समयसँ दुनूगोटेमे दोस्ती भए गेलनि । दुनूगोटे एक-दोसरकेँ नीक लागथि । मुदा बच्चासभक बात रहैक। केओ एहि बातकेँ महत्त्व नहि देलक । ओ सभ अपनहु नहि । कालेजमे फराक भए गेलाक बाद तँ बहुत दिन धरि भेंट-घांटो नहि भेलनि । संयोग एहन भेल जे एमएमे फेरसँ ओ सभ एकठाम भए गेलथि । छात्रावासमे फराक-फराक रहथि । तथापि हुनका लोकनिक आपसी संवंध प्रगाढ़ होइत गेलनि । जखन कखनहु मौका भेटैत ओ सभ कतहु एकांत ताकि कए गप्प-सप्प करए लगितथि । कैकबेर तँ किलासो छोड़ि देथि ।

एक बेर तँ राजेश आ अर्पिता कैकदिन धरि चंपत भए गेलथि । विश्वविद्यालयमे छुट्टी रहैक । बेसी विद्यार्थीसभ अपन-अपन गाम चलि गेल रहए । हिनकोलोकनिक सएह कार्यक्रम रहनि । मुदा जखन ओहिराति ओ सभ सीनेमा देखि कए लौटि रहल रहथि कि अचानक आगरा जेबाक कार्यक्रम बनि गेल । ताजमहल देखबाक इच्छा भए गेलनि । आखिर ओ सभ भोरे ताजमहल देखबाक हेतु ट्रेन पकड़ि लेलनि । पहिने तँ सोचने रहथि जे साँझमे वापस भए जाएब आ तकर बाद दोसर दिन भेने अपन-अपन गाम चलि जाएब । मुदा से भेलैक नहि । आगरा गेलाक बाद चारि-पाँचदिन धरि

रहि गेलथि । तकर बाद छुट्टी समाप्त भए रहल छल । ओ सभ गाम जेबाक कार्यक्रम छोड़ि बाँचल समय विश्वविद्यालयक छात्रावासेमे बिता लेबाक निर्णय केलथि।

राजेश बहुत सामान्य पृष्ठभूमिसँ छलाह । हुनकर माए बहुत पहिने मरि गेल रहथि । पिता दिल्लीमे कोनो दोकानपर काज करथि । जेना-तेना कए परिवारक पालन करथि । राजेश बहुत पढ़थि से हुनकर कहिओ इच्छा नहि रहनि । ओ तँ चाहथि जे कहुना बही-खाता लिखबाक ज्ञान भए जानि आ कतहु किरानी बनि गुजर करथि । मुदा राजेशक परीक्षाफलसभ बहुत नीक होइत गेलनि,इसकूल,कालेज,विश्वविद्यालयमे छात्रवृत्ति भेटैत रहलनि । शिक्षकलोकनि से हुनका बहुत मदति करैत रहलखिन । ऊपरसँ अर्पिता तँ जाने लगओने रहलीह । अपन टाकामे सँ हुनकर मदति करैत रहलथि । एहि तरहें राजेशक समयचक्र आगू बढ़ैत रहल । अर्पिता एहि मित्रताकेँ दोसर रूप देबए चाहलथि । मुदा राजेश अपन परिस्थितिसँ अवगत रहथि । कहाँ राजा भोज आ कहाँ भोजबा तेली? दुनूक पारिवारिक परिस्थितिमे कोनो तालमेल नहि छल । अर्पिता उच्चजातिक संपन्न परिवारमे जन्मल छलीह । हुनकर माता-पिता राजेशकेँ मानैत रहथि । हुनकोसभकेँ बूझल रहनि जे ओ अर्पिताक बहुत प्रिय मित्र अछि । मुदा तेँ की? ओ सभ चाहलथि जे

जल्दीसँ अर्पिताक बिआह कए दी आ एहि झंझटिसभसँ मुक्ति पाबि जाइ । मुदा से नहि भए सकल । अर्पिता कोनो-ने-कोनो बहन्ना बना कए कथासभकेँ लटकबैत रहलथि । सभ कथामे किछु ने किछु खरापी ताकि लेथि। आखिर हुनकर बिआह नहिए भए सकल ।

बिआह होउ नहि होउ ,मुदा राजेशो अर्पितासँ फराक नहि होमए चाहैत छलाह । ओ चाहथि जे अर्पितासँ घनिष्टता बनल रहए । ताहि ले जे करए पड़ए । मुदा सभटा सोचलाहा थोड़े होइत छैक । अर्पिता स्वतंत्र निर्णय नहि लए सकलीह । ओमहर राजेशक मोनमे उदासी भरि गेलैक । एक राति ओ उठल आ अज्ञात दिशामे बिदा भए गेल । ओकरा अपनो नहि बूझल रहैक जे ओ कतए जा रहल अछि । चलैत-चलैत ओ एकटा जंगलमे पहुँचि गेल । शुरुमे तँ ओकरा डर होइक । मुदा साहस केलक । आगू बढ़िते गेल । थोड़ेक आओर आगू गेल तँ एकटा कुटी देखेलैक । एहन जंगलमे कुटी? ओ चकित छल । कुटीक चारूकात सुगंधित फूलसभ लागल छल । सामनेमे एकटा घैल राखल देखेलैक । ओ तुरंत भरि छांक पानि पीबि गेल । मोन कनी आश्वस्त भेलैक । तकरबाद कुटीमे प्रवेश केलक । मुदा कतहु केओ नहि देखेलैक । बुझेबे नहि करैक जे बात की छैक? एहन जंगलमे ई कुटी के बनओलथि ?ओ छथि कहाँ? एहिठाम केओ अछिओ कि

नहि? यदि केओ नहि अछि तँ जलसँ भरल ई घैल एतए के रखलक? एहि तरहक कतेको प्रश्नसभ हुनका मोनमे आबि रहल छलनि । मुदा उत्तर देनिहार केओ नहि देखा रहल छलनि । हारि कए ओ कुटीक ओसारापर बैसि गेलाह।

11

राजेश बहुत थाकि गेल छल । मोनसँ तँ परेसान रहबे करए । कुटी धरि पहुँचैत-पहुँचैत देहो जबाब दए रहल छलैक । कुटी लग पहुँचलाक बाद पानि भेटि गेलासँ बहुत उसास भेलैक । तकर बाद भूख लागि गेलैक । मुदा ओहिठाम तँ केओ छल नहि । ककरा की कहितैक? आगू बढ़ल । केओ नहि देखेलैक। कनीक आओर आगू बढ़ल । ओहिठाम एकटा पाथर राखल छलैक । पाथरकेँ हटेबाक प्रयास केलक । मुदा ओ टससँ-मस नहि भेलैक । ओकरा किछु बुझेबे नहि करैक जे आखिर बात की छैक? एतेकटा कुटी अछि ,एतेक सुंदर भगवानक प्रतिमा अछि ,मुदा मनुक्ख एकटा नहि देखाइत अछि । देखलासँ ओ स्थान जीवंत लागि रहल छलैक । एहिसँ अनुमान लगैत छल जे केओ-ने-केओ लगपासमे रहैत अछि जरूर । यदि से बात छैक तखन ओ एना नुकाएल किएक अछि? किएक

ने ओ सामने आबि रहल अछि?राजेश ओहिठाम चिंतामे आगू-पाछू घुमि रहल छल कि ओकर पैर पाथरक बीचमे पड़ि गेलैक । देखिते-देखिते ओ पाथर घसकि कए दहिना दिस चलि गेल । नीचाँ एकटा सुरंग देखा रहल छल ।

"कहि नहि एहिमे के अछि? कहीं कोनो खतरनाक जीव-जन्तु ने होअए ।"

मुदा ओ साहस केलक । तहखानामे आगू बढ़ि गेल । दू-तीन डेग आगू बढ़ल होएत कि सौंसे प्रकाश देखेलैक । एकटा सुसज्जित कक्षमे बीचमे ध्यान लगओने केओ बैसल छलाह । राजेशकैँ ओतए पहुँचितहि ओ आँखि खोलि देलनि । राजेश तँ बहुत डरा गेल छल । ओकर मानसिक स्थिति बूझि ओ हँसि देलखिन । फेर अपने कहैत छथिन-

"हम तोरे बाट ताकि रहल छलहुँ । तूँ ओहि जन्ममे अकालमृत्युक सिकार भए गेल रहह । संयोगसँ हम ओहि समय कतहु बाहर गेल रही । वापस अएलहुँ तँ तोहर मृत्यु भए चुकल रहह । हम एहि बातसँ बहुत दुखी भेल रही । मुदा हम जनैत रही जे तूँ आइ-ने-काल्हि जरूर वापस अएबह । आइ एतेक सालक बाद ओ क्षण आबि गेल अछि । आब तूँ निश्चिन्त भए एतए रहह । सभ किछु सम्हारह । हमर काज समाप्त अछि । हम आब जा रहल छी ।

महात्माजीक बात सुनि कए राजेश बहुत आश्चर्यमे पड़ि गेल । किछु फुरेबे नहि करैक जे की बाजए?की उत्तर दिअए?किछु काल तँ ओ बौक भए गेल छल । ओकर परेसानी महात्माजी बूझि गेलथि । ओ बजैत छथि-

"सएह कहू । तूँ एतेक जल्दी सभ बात बिसरि गेलह । दहिना कात राखल बाकस खोलह । ओहिमे तोहर सामानसभ जस-के-तस राखल छह । तोरा एहि वस्तुसभसँ बहुत लगाओ छलह ने । तेँ तोरा चलि गेलाक बादो हम एकरासभकेँ सम्हारि कए रखने रहलहुँ ।"

"से अहाँकेँ पता छल जे हम फेर एहिठाम आएब?"

"एकदम पता छल । यदि से नहि रहैत तँ तोरा लेल कुटीक गेटेपर घैलमे जल भरि कए किएक रखितहुँ?"

"ओ! तँ ई काज अहींक छल?"

"एतए आओर अछि के?"

राजेश बाजि तँ रहल छल ,मुदा मोने-मोन डरो भए रहल छलैक । "कहि नहि की बात अछि? कहीं किछु अनट ने भए जाए?"

"फेर अंट-संट सोचए लगलह?" -महात्माजी टोकारा दैत छथि ।

आब तँ राजेश सोझे हुनकर पैरपर खसि पड़ल ।

"हमरा अपने क्षमा करू । हम मूर्ख छी, अज्ञानी छी । अहाँकेँ बूझब हमर वशक बात नहि अछि ।"

“तूँ अनेरे परेसान छह । सभ बात बूझि जेबहक । धैर्य तँ राखह । पहिने ई बाकस खोलह ।”

महात्माजीक बात मानि राजेश आगू बढ़ैत अछि। अखनहु ओकर पैर डरसँ काँपि रहल छलैक । मोनमे तरह-तरहक बात अबैत छलैक । कहि नहि एहि बाकसमे की राखल अछि?तथापि,ओ साहस कए बाकस लग पहुँचि जाइत अछि । बाकस खोलैत अछि । ओ बाकसमे राखल वस्तुसभकेँ देखि कए आश्चर्यमे पड़ि जाइत अछि । एकपाँतिसँ ओकर पसिंदक चीजसभ राखल छल । सभसँ पहिने ओ गुली-डंडा उठेबाक प्रयास करैत अछि । ओकरा छुबितहि राजेशकेँ लगलैक जेना ओ दोसर दुनिआमे पहुँचि गेल अछि । ओ ओहि गुली-डंडासँ दोस्तसभक संगे खेला रहल अछि । ओहिमे   अर्पिता सेहो छलैक ।

“ऐँ! तूँ ?”

“हँ, हँ हमही छी ।”

राजेश बेराबेरी बाकसक आओर सामानसभकेँ देखैत रहैत अछि । मुदा छुबैत नहि अछि । ओ अत्यंत विस्मित भए महात्माजीकेँ देखैत रहि जाइत अछि ।
महात्माजी कहैत छथि-“हम आब जाएब ।”
“हम अखन एहिठाम अएबे केलहुँ अछि । हमरा किछु समय दिअ । किछु बुझाए दिअ ।”

“समयसँ सभकिछु बूझि जेबहक । ई स्थान आब तोहर छह । हमर आत्मा सदिखन वृंदावनमे रहत । तोरा जखन कखनहु इच्छा होअए, कोनो परेसानी बुझाह तँ हम ओतए उपस्थित भए जेबह ।”
राजेश की कहितनि?

जे हेबाक छल से भेल । महात्माजी कतएसँ अएलाह आ कतए चलि गेलाह,राजेश किछु नहि बूझि सकल । देखिते-देखिते महात्माजी ओहिठामसँ अन्तर्धान भए गेलाह ।

12

एहि अल्पावधिमे राजेशक कायाकल्प भए चुकल छल । जंगलमे एतेकटा कुटी आ ताहिमे असगर राजेश। एहि घटनाक बाद कतेको दिन धरि ओ किछु नहि बाजल। राजेश आब राजेश नहि रहि गेल छलाह, मौनीबाबा बनि गेल छलाह ।

महात्माजी ओहिदिन जे भेंट भेलखिन तकर बाद फेर हुनकर कतहु अता-पता नहि छलनि । जाइत-जाइत ओ वृंदावनक चर्च कए गेल रहथिन । कहि गेल रहथिन जे हुनकर आत्मा सदिखन वृंदावनमे रहतनि । जखन राजेश हुनका सुमरताह ओ भेटि जेथिन । राजेशक विचार

भेलनि जे किएक नहि ओतए महात्माजी स्मृतिमे एकटा भव्यमंदिरक निर्माण कएल जाए । ओहिमे महात्माजीक सुंदर प्रतिमाक स्थापना कएल जाए । एही कल्पनाकेँ साकार होइत देखबाक हेतु ओ आइ वृंदावन आएल छथि। मंदिरक उद्घाटनक संगे महात्माजीक मूर्तिक अनावरण सेहो होएत । कहि नहि कतए-कतएसँ भक्तलोकनि एहि शुभ अवसरपर आएल छथि । संकल्पमे व्यस्तता अछैत अर्पिता सेहो एहि अवसरपर आएब जरूरी बुझलनि । मौनीबाबा स्वयं हुनका एहि कार्यक्रमक सूचना देने रहथिन। ओना यदि केओ आन कहितिनि तँ ओ महात्माजीक बारेमे एना विश्वास नहि करितथि । मुदा मौनीबाबाक बातपर हुनका अटूट विश्वास छलनि ।

"ओ गलत भइए नहि सकैत छथि, सेहो हमरा संगे । कदापि नहि ।"

ओ मोने-मोन सोचथि । महात्माजी राजेशकेँ दर्शन देलखिन,हुनकर पूर्वजन्मक प्रमाण सद्यः उपस्थित कए देलखिन आ राजेशकेँ मोन पाड़ि देलखिन जे ओ ओहि जन्ममे की छलाह । ई कोनो मामुली घटना नहि छल । एहन संतक स्मृतिसँ जुड़ल स्थानपर के नहि आबए चाहत?

वृंदावनमे ओहिना मंदिर भरल अछि । तखन एकटा आओर मंदिरक की प्रयोजन भेल? एहिसँ लोककेँ

की फएदा हेतैक जे आन ठाम नहि भए रहल छैक? ई सभ बात मौनीबाबा स्वयं विचारने रहथि । हुनका शुरुएसँ मोनमे रहनि जे ई मंदिर किछु विशेष होइक । पहिल बात तँ हुनका मोनमे ई अएलनि जे एहि स्थानकेँ संकल्पसँ जोड़ि देल जाए ,जाहिसँ ओतए रहनिहार बच्चा लोकनिमे आध्यात्मिक विकास हेतनि । संगहि अर्पिताक भार कम होएतनि । असगरि आब ओ कतेक की करतीह? कोनो एक-दू दिनक बात तँ अछि नहि । ओहिठाम रहि रहल अनाथ बच्चासभक संख्यामे निरंतर इजाफा भए रहल छल। निःसंदेह अर्पिता अपन सभटा शक्ति एकर संचालनमे लगा देने रहथि ,मुदा कहबी छैक जे असगर वृहस्पतिओ झूठ । मौनीबाबाक बनाओल मंदिरमे जगहो बहुत छल आ भक्तलोकनिक सहयोग तँ छलहे । मंदिरक स्थापना कालेसँ निरंतर धनक वर्षा होमए लागल । एतेक टाकाक की होएत? मंदिर चलेबाक हेतु कतेक धन चाही? एक लाख,दू लाख तकर बाद?

दिनभरि मंदिरक स्थापना आ ताहिसँ जुड़ल उद्घाटन समारोहकेँ देखबाक हेतु लोकक पाँति लागल रहल । ककरो कोनो असुविधा नहि होइक तकर पूरा प्रयास कएल गेल । भरिदिन भंडारा चलिते रहल । बामाकात निरंतर भजन-कीर्तन होइत रहल । दहिना कात यज्ञशालामे होम होइत रहल । सायंकाल चारि बजेक आस-

पास मौनीबाबाक प्रवचन प्रारंभ भेल । मौनीबाबाक प्रवचन प्रारंभ होइतहि भक्तलोकनि एकस्वरसँ बाजि उठलाह-

"संत सिरोमणि मौनीबाबाक जय!"

बाबा अपन प्रवचन शुरु करैत छथि -

"भक्तलोकनि! हमसभ आइ एकटा विशिष्ट अवसरपर एतए उपस्थित छी । हमर गुरु महराज जाइत-जाइत आश्वासन दए गेल रहथि जे ओ हमरा वृंदावनमे भेटैत रहताह । हम हुनका सुमरबनि आ ओ उपस्थित भए जेताह । हम ई बात तखन नीकसँ नहि बूझि सकलहुँ। ओहि समयमे हम स्वयं दुविधाग्रस्त रही । जखन ओ हमरा ई सभ कहि अदृश्य भए गेलाह तकर बाद हमरा हुनकर बातक निहितार्थ बूझबामे आएल । तकरे परिणति आइ एहि भव्यमंदिरक रूपमे भए रहल अछि । हमसभ आइ हुनका एहिठाम श्रद्धापूर्वक स्मरण कए रहल छी । हुनकर सद्विचारक अनुसार जीवन जीबाक संकल्प कए रहल छी । एहिसँ नीक हुनकर उपस्थिति की भए सकैत छल? निःसंदेह ओ सशरीर एतए उपस्थित नहि छथि,मुदा हुनकर आत्मा सदिखन हमरालोकनिक संग अछि । हमसभ एहिना नीक काजमे लागल रही । हमर सभक विजय निश्चित अछि ।

एहिठाम संकल्पक मुख्य संरक्षिका,अर्पिता सेहो आएल छथि । संकल्प बहुत नीक काज कए रहल अछि।

ओहिठाम पाँचसएसँ बेसीए अनाथ बच्चासभक पालन-पोषण भए रहल अछि । एहिसँ नीक बात की भए सकैत अछि ? ओहिठाम रहि रहल अनाथ बच्चासभ भगवानक जीवंत रूप अछि । हुनका लोकनिक मदति करब सही मानेमे ईश्वरक आराधना होएत । अस्तु,हमर विचार अछि जे वृंदावन मंदिरक अतिरिक्त आमदनीसँ संकल्पक काजमे योगदान देल जाए ।

सभ एकस्वरसँ मौनीबाबाक प्रस्तावक समर्थन केलनि । तकर बाद बाबा एकटा चद्दरि फेकि देलनि । “जकरा जे देबाक होअए से एहिपर राखि दिऔक ।” तकरबाद तँ जेना धनक वर्षा होमए लागल । जकरा जे पार लगलैक,से ओहि चद्दरिपर रखैत गेल । बाबाक चेलासभकेँ दानमे देल गेल वस्तुसभकेँ धरैत-धरैत हाथ दुखा गेलनि । लोकक उत्साह देखि बाबा बहुत प्रसन्न रहथि । ओ मंचसँ सभकेँ आशीर्वाद देलाह । एकबेर फेर भक्तलोकनि नारा लगओलाह-

“संतसिरोमणि मौनीबाबाक जय!” तकरबाद सभा विसर्जित भए गेल ।

दिनभरि मंदिरक उद्गाटन समारोह चलैत रहल । अर्पितो ओहीमे लागल रहि गेलीह । हमहूँ बड़ीकाल धरि ओहि कार्यक्रमकेँ देखैत रहि गेलहुँ । सभकिछु नीके भए रहल छल । मुदा हमर मोनकेँ एहिसभसँ विश्राम नहि

भेटि रहल छल । रहि-रहि कए ओतहि पहुँचि जाइत छल - हम के छी? हमर माता-पिताके छथि?हम अनाथालय किएक आ कोना पहुँचि गेलहुँ? की हमर जीवनक किछु गंतव्य अछि कि नहि? की कहुना जीबि लेबे समाधान थिक? हमर मोनमे उमड़ि रहल प्रश्नक उत्तर कतहु नहि भेटि रहल छल । मौनीबाबाक भाषण शुरु भेल, खतम भए गेल,मुदा हमर मोन ओतहि अटकल रहि गेल ।

हम सभकिछु छोड़ि विश्रामालय वापस आबि जाइत छी । कतहु केओ नहि छल । सभ मौनीबाबाक लगपास घुमि रहल छल । हम एकांतमे घंटो चिंतन करैत रहि गेलहुँ । हमरा लेल ओ विश्रामालय व्यर्थ लागि रहल छल। लगैत छल जेना हम शून्यमे बौआ रहल छी । तखन? हमरा भेल जे एहिठाम ओझराएल रहि गेलासँ किछु समाधान नहि होएत ।

“संभवत: हमरा अपन समस्याक समाधान स्वयं ताकए पड़त ।”

हम इएह सोचि विश्रामालय छोड़ि देबाक निर्णय केलहुँ ।

“मुदा जाएब कतए?”

“से जतए जाइ ।”

हम अन्हरोखे अज्ञात गंतव्य दिस बिदा भए गेलहुँ। हम विश्रामालयक गेट दिस बढ़िए रहल छलहुँ कि पाछूसँ अबाज आएल-

"मिहिर! मिहिर...!"

हम पाछू घुमैत छी । अर्पिता हमरा बजा रहल छथि । हमरा एना अचानक विश्रामालयसँ बिदा भए जेबाक कारण ओ बहुत परेसान छथि । हुनकर आग्रहपर हम रुकि जाइत छी ।

अर्पिताक अबाज सुनि हम रुकि तँ गेलहुँ ,मुदा ओ की बाजथि,की कहए चाहथि से किछु सुना नहि रहल छल। लगैत छल जेना हम अचानक एहनठाम पहुँचि गेल छी जतए शब्दक संचार नहि भए रहल अछि,जतए किछु नहि देखा रहल अछि । सभकिछु अदृश्य भए गेल अछि। लगैत छल जेना हमर चारूदिस महाशून्य पसरि गेल अछि। हमर मनोदशा देखि अर्पिता डरा गेलीह । ओ चिचिआ उठलीह-

"ई तोरा की भए गेलह? एना बताह जकाँ किएक ठाढ़ छह? केओ किछु कहि देलकह की?"

ओ बजिते जा रहल छलीह । मुदा हम किछु नहि सुनि रहल छलहुँ । हुनकर अबाज सुनि कए लगपासमे आबि-जा रहल भक्तलोकनि ओतए जमा भए

गेलाह । ओ सभ विस्मित छलाह । एक-दोसरसँ पुछि रहल छलाह-

“बात की अछि? अर्पिता एना किएक चिचिआ रहल छथि? ओहिठाम हल्ला भइए रहल छल कि सामनेसँ मौनीबाबा अपन चेलासभक संगे प्रकट भेलाह । ओ नवस्थापित मंदिरमे आरतीक हेतु जा रहल छलाह ।

13

मंदिर स्थापनासँ मौनीबाबा बहुत प्रसन्न रहथि । दिन भरि तँ ओ ओहीसभमे व्यस्त रहि गेलथि । साँझोमे भक्तलोकनि घेरने रहलनि । बहुत राति कए मंदिरक दोसर मंजिलपर धयानमंदिरमे चलि गेलाह । ओहिठाम एकांत पाबि ओ बहुत शांतिक अनुभव कए रहल छलाह। ओतए ओ निचैन ध्यान केलनि । एहि तरहें घंटो बीति गेल । ओ बहुत थाकि गेल रहथि । ओतहि आँखि लागि गेलनि । तकरबाद तँ ओ सपनाइते रहि गेलाह । जेना महात्माजी किछु कहि रहल छथिन,बुझा रहल छथिन ।

“आब तूँ सेवामे लागि जाह । दुखी मनुक्खक सेवासँ बढ़ि कए कोनो पूजा नहि अछि । संकल्पक काजमे सहयोग करह । ओहिठाम रहि रहल अनाथ बच्चासभकेँ

सनाथ करह । ओहिठाम रहि रहल मिहिर तोरे लगपासमे पहुँचि गेल अछि । ओ बेचैन अछि । ओकरा अपन माता-पिताक जनतब नहि छैक । एहि बातसँ ओ परेसान अछि। एही कारणसँ ओ संकल्प छोड़ि वृंदावन पहुँचि गेल अछि। ओकरा सही मार्गदर्शन करह ।”

महात्माजी सपनामे राति भरि इएहसभ कहैत रहलाह । आखिर,कौवा डाक देलक । पौ पाटि रहल छल। मौनीबाबा मंदिरमे आरती करए बिदा भेल छलाह कि गेटेपर हमरा देखलनि । हमरा दिस बढ़ैत अर्पिताकेँ देखलनि । ओ हमरा लग पहुँचि जाइत छथि । हम हुनका एतेक लगीचसँ देखि बहुत प्रसन्न छी । हुनका दंडवत प्रणाम करैत छी । सामनेमे अर्पिता सेहो ठाढ़ि छथि ।

हमरा देखितहि मौनीबाबा बाजि उठलाह-

“बालक! तूँ किएक परेसान छह?”

“हम अपन माता-पिताक जनतब चाहैत छी । हम जानए चाहैत छी जे ओ सभ हमरा अनाथालयमे किएक छोड़ि देलनि जाहि कारण हमर वाल्यावस्था एकटा प्रश्नचिन्ह बनि कए रहि गेल अछि? कतबो किछु होइत अछि हमर ध्यान ओही प्रश्नपर अटकल रहि जाइत अछि। आखिर अहीं कहू जे हम की करू? हमरा मोनकेँ जाहिसँ चैन भेटैक से कहू ।”

“तूँ अनेरे परेसान छह । सभ किछुक समय होइत छैक । यदि तोरा भाग्यमे माता-पितासँ भेंट लिखल हेतह तँ अवश्य हेतह । ताहि लेल परेसान रहबाक जरूरति नहि छैक । तोरा भगवान विशिष्ट काज हेतु पठओने छथुन । ताहि बातकेँ बूझह । व्यर्थ चिंता छोड़ि अपन जीवनकेँ सार्थक करबाक प्रयास करह । रहल माता-पिताक बात, से असली माता-पिता तँ ईश्वरे छथि । ओ सर्वत्र सदिखन विद्‌यमान छथि । हुनका तकबाक काज नहि अछि । अपन दृष्टि ठीक करह । अपने सभकिछु बूझि जेबहक।”

“सत्यबात तँ ई थिक जे हमर मोन एहि संसारसँ उबिआ गेल अछि । सभकिछु व्यर्थ लागि रहल अछि । हम चाहैत छी जे सन्यास लए ली आ हिमालयमे निचैन भए धयान करी ।”

“तोहर मोनक ई भ्रम छह जे हिमालय चलि गेलाहसँ तोरा शांति भेटि जेतह । मनुक्खक संस्कार ओकरापर हाबी भए जाइत छैक चाहे ओ कतहु चलि जाए । असल बात तँ मोनकेँ बुझाएब थिक । यदि मोने अशुद्‌ध अछि तखन किछु ठीक नहि लागि सकैत अछि । नीक-अधलाह तँ सभदिन रहबे कएल अछि । जकरा जेहन मोन रहैत अछि, तेहने ओकरा ई दुनिआ देखाइत छैक ।”

“तखन अहीं कहू जे हम की करू?

“हमरा संगे चलह । हम एहिठामसँ तीर्थाटनपर जा रहल छी । ओहि यात्रामे तूँ हमरे संगे रहबह ।”

“ठीक छैक । हमरा जे कहब, हम सएह करब ।”

“स्वयं एहि दुनिआकेँ देखबहक । बहुत किछु अनुभव हेतह। तकर बाद तोरा जे नीक लगतह सएह करिअह।”

“ठीक छैक ।”

कािल्ह भोरे हमरा संगे चलबाक हेतु तूँ तैयार रहियह।”

“हमसभ कतए जेबैक?”

“एकर चिंता तोरा करबाक काज नहि छह । हम छी ने।”

14

मौनीबाबा एहि निर्णयक जनतब अर्पिताकेँ स्वयं साँझमे देलनि । अर्पिता आरतीमे मंदिर आएल रहथि । आरती भेल,भजन-कीर्तन भेल । प्रसाद वितरण भेल । तकर बाद भक्तलोकनि बेरा-बेरी चलि गेलाह । रहि गेलथि अर्पिता आ मौनीबाबा ।

“हमसभ कािल्ह बिदा होएब ।”

“कतए जेबैक?”

“हमर कोन ठेकान कतए जाएब । एतबा बूझल अछि जे एहिठामसँ बिदा भए जाएब ।”

“संगे के रहत?”

“मिहिर”

मिहिरक नाम सुनि कए अर्पिता बहुत अचंभित रहथि ।

“ओ किएक जाएत? ओकरा तँ हम आगूक पढ़ाइक ओरिआन केने छी ।”

“ओकर ताहिसभमे मोनो लगैक तहन ने? ओ तँ भीतरे-भीतर बहुत परेसान रहैत अछि । हमरा कहैत छल जे ओ सन्यास लेत । बाबाजी भए जाएत । ओकर मोन कतहु नहि लागि रहल छैक । हम ओकरा बुझेबाक बहुत प्रयास केलहुँ । मुदा ओकर मोन नहि डोललैक । तखन हम कहलिऐक जे हमरे संगे चलए । अपनेसँ दुनिआकेँ देखैक,बूझैक । तकर बाद जे ठीक बुझाइक से करए ।”

“मुदा हमरा ई बातसभ किछु बूझल नहि छल ।”

“ओ तँ अपनेमे लागल रहैत अछि । ककरो किछु कहैत कहाँ छैक?”

अर्पिता वापस विश्रामालय अएलीह । हम ओहीठाम रही । मुदा हमरा नहि टोकैत छथि । हमहूँ किछु नहि बजैत छी । हमरा बजबाक लेल रहबे की करए ? अनाथालयसँ देवालय-एहिमे कोन विकल्प छल? समय अपन गतिसँ बीति रहल छल । लोकसभ कतएसँ कतए पहुँचि गेल छल । हम धरि ओतहिकेँ-ओतहि छलहुँ। यद्यपि हमहूँ आब युवावस्थाक पहिल सीढ़ीपर चढ़ैत रही,कि चढ़ि गेल रही । मुदा हमरा लेल धनसन । हमरा

गुमसुम देखि अर्पिताकेँ नहि रहल गेलनि । ओ कहैत छथि-
“की बात छैक? तूँ एतेक उदास किएक रहैत छह?”
हम की उत्तर दितिअनि । चुप रहि गेलहुँ । हमर मनोस्थितिकेँ ओ बूझि रहल छलथि । तथापि,कहैत छथि-
“हमरा इच्छा रहए जे तूँ संकल्पेमे रहि आगूक पढ़ाइ कए लितह । तकर बाद जे जेना मोन होइतह ।”
“की हेतैक पढ़ि कए? इएह ने जे पेट भरि जएत । कतहु गृहस्थी बसि जाएत, मुदा हमर मोन तँ ओहिनाक-ओहिना रहि जाएत ।”
हमर बात सुनि ओ किछु नहि कहलीह । ओहिठामसँ उठि दोसर कोठरी दिस चलि गेलीह । हमहूँ किछु सोच-विचारमे लागि गेलहुँ ।

पता नहि किएक अर्पिताकेँ हमर निर्णयसँ बहुत दुख भेल रहनि । ओ नहि चाहथि जे हम संकल्प छोड़ि कए कतहु जाइ । मुदा हम तँ संकल्प छोड़िए कए वृंदावन आएल छलहुँ । ई तँ संयोगमात्र थिक जे एतए ओ भेटि गेलीह । मौनीबाबा भेटि गेलाह । आब हमरा हुनका संगे जेबाक अछि । साइत हमर इएह नियति अछि । हमरा लेल की संकल्प.की वृंदावन,किंवा की कोनो आओर स्थान? कहबी छैक जे अन्हराकेँ जेहने जगने तेहने सुतने । हमर ओहीठाम के छल? मात्र एकटा भ्रम,अपनत्वक भ्रम ।

अर्पिता लग तँ हमरा सन-सन पाँच सएसँ बेसीए अनाथ बच्चा छनि । तकरसभक अनेकानेक समस्याक समाधान करबाक छनि । हमरा ओहिठामसँ चलिए गेलासँ की फरक पड़तनि?

हम इएहसभ सोचैत कहि नहि कखन सुति रहलहुँ। दोसरदिन भोरे हमर निन्न टूटि गेल छल । हम सुति-उठि स्नान-ध्यान केलहुँ आ चुपचाप मंदिर दिस बिदा भए गेलहुँ ।

अर्पिता राति भरि जगले रहि गेलीह । मोह दुखक कारण होइत अछि । हुनका हमरा प्रतिए मोह कही,सिनेह कही जे कही ,मुदा किछु विशेषे रहनि । ओ संकल्पमे हमर कोठरी जरूर अबितथि । हमर हाल-चाल पुछितथि। हमर भविष्यक प्रतिए चिंता करितथि । हमरा पढ़ाइ करबाक हेतु उत्साहित करितथि । तरह-तरहक उदाहरण दितथि । केना फलना सभ असुविधा अछैत जीवनमे आगू बढ़ि गेलाह । केना संकल्पक कतेको बच्चासभ जीवनमे नीकसँ स्थापित भए गेल । बिआह केलक,परिवार बसओलक । एहन बहुतो उदाहरण हुनका बूझल रहनि । हम हुनकर शुभेच्छाक सम्मान करैत छलहुँ। मुदा हुनकर इच्छानुसार काज करब हमरा लेल मोसकिल बुझाइत छल। जेना-जेना हम छेटगर होइत गेलहुँ,तेना-तेना स्वयंमे ओझराइत गेलहुँ ।

रातित भरि जगलाक बादो अर्पिता भोरे केबार धेने ठाढ़ि छलीह,चुपचाप हमरा चलि जाइत देखैत रहि गेल छलीह । निःसंदेह हम अपना भरि चुपचाप निकलि गेल रही,मुदा अर्पिता एकटक हमरा जाइत देखैत रहथि । ई बात हम साइत नहि बुझितिऐक । मुदा संयोग एहन भेलैक जे अचानक मंदिरक घड़ी-घंटा बाजए लागल । चारूकात शंखध्वनि पसरि गेल । हमरा पाछू तका गेल । देखैत छी जे ओ ठामहि छथि,जखन कि हुनका एहि समयमे आरती हेतु मंदिरमे हेबाक चाहैत छल । हुनकर आँखिसँ नोर झहड़ि रहल छनि । हमरो आँखिसँ नोर खसि जाइत अछि ।

"सएह कहू, हिनका हमर मोह किएक धेने छनि?" हम ई सोचैत मंदिर दिस बढ़ि जाइत छी ।

15

आरतीक बाद हम मौनीबाबाक संगे पैरे बिदा भए गेलहुँ । संगमे कैकगोटे जेबाक हेतु इच्छुक रहए.मुदा बाबा ककरो बात नहि माननलनि ।

"तूँ सभ हमरा संगे कतए बौएबह । एहिठाम रहि मंदिरक व्यवस्था देखह । अर्पिताकेँ संकल्पक व्यवस्था करबामे योगदान करहुन । एतेकटा संस्था चलाएब एक

आदमीक वशक बात नहि थिक । एहिमे सभक योगदान जरूरी अछि । जकरा जएह पार लागैक,से करए । एहि संस्थासँ कतेको अनाथ बच्चाक कल्याण होइत अछि । तेँ एहिसँ बढ़ि कए पुण्य किछु नहि भए सकैत अछि । सभकेँ जेना-तेना बिदा केलाक बाद निश्चिन्त भावसँ मौनीबाबा आगू बढ़ि गेलाह । हमहूँ प्रसन्न रही । दिन-राति एकहि तरहक जीवन जीबाक विवशतासँ मुक्ति भेटि रहल छल। "नव-नव स्थान घुमब,कतेको नव लोकसभसँ भेंट होएत।" ई बातसभ सोचि-सोचि हम बहुत प्रसन्न रही । हमरा प्रसन्न देखि बाबा पुछैत छथि-

"की बात छैक? तूँ आइ बहुत प्रसन्न लागि रहल छह ।"

"आइ हमर मोन बहुत हल्लुक लागि रहल अछि। रस्तामे फल-फूल, चिड़ै-चुनमुन देखि-देखि मोन प्रफुल्लित भए रहल अछि । लगैत अछि जेना स्वर्गमे छी ।"

"अपनाकेँ बितल बातसभसँ जतेक फराक रखबह, ततेक प्रसन्न रहबह । जे बीति गेल से गेल । आब तकर कोन हिसाब छैक?

हम हुनका की कहितिअनि?कहनाइ आसान छैक। "कहबी छैक जे गुंड़क मारि धोकरे जनैत अछि । जाहि परिस्थितिसँ हम गुजरलहुँ अछि से हमही जनैत छी ।

संकल्पमे सभ सुविधा अछैत हमर एक-एक क्षण पहाड़सन बितल अछि ।”

हम फेर किछु-किछु सोचए लागल रही कि बाबा टोकलथि-

“फेर ओहीसभमे लागि गेलह । समस्याक समाधानक समय होइत छैक । धैर्य राखह । सभ किछु बूझि जेबहक । हमसभ ओही दिशामे बढ़ि रहल छी ।”

हम आ मौनीबाबा चलैत रहलहुँ,आपसमे गप्प-सप्प करैत रहलहुँ । मार्गमे चतुर्दिक पसरल प्राकृतिक आनन्द उठबैत रहलहुँ ।

“हमसभ केमहर जा रहल छी?”

“की जाने गेलिऐक?”

“ओहिना बौआ रहल छी हमसभ?”

“चलैत रहह ने? सभदिन तँ निआरिए कए चलैत रहलहुँ। ई करब,ओ करब,एतए जाए,ओतए जाएब । एकरासँ गप्प करब,ओकरासँ नहि बतिआएब । मुदा की भेलह?सौंसे दुनिआ पागल भेल घुमि रहल छैक । सभ चाहैत अछि सुख । सभ चाहैत अचि विश्राम ,मुदा काज करैत अछि उल्टा । जखन सभचीजकेँ बकोटने रहबहक, चाहे ओ विचार होइक वा वस्तु तखन मुक्तिवोध केना भए सकैत अछि? तूहीं कहह से संभव छैक? एकहि संगे कनबो करबहक आ हँसबो करबह से हेतैक? नहि भए सकैत

अछि । लोक अपने चालिए दुनिआमे कष्टमे पड़ल रहैत अछि । कोनो जीब -जन्तुमे ई समस्यासभ छैक? नहि छैक । मनुक्खकेँ देखहक,अपन बुद्धिक दुरुपयोग कए की ने कए लेने अछि । अपनो लेल आ अनको लेल आफद कीनि लेने अछि ।”

“से कोना?”

“इएह तँ तोहर नेनपन छह । समयसँ सभबात बूझि जेबहक । बड़का-बड़का देशसभ जे एटम बम बना-बना कए रखने छैक, तकरा की कहबहक? ई बुद्धिक दुरुपयोग नहि तँ आओर की कहल जा सकैत छैक? यदि एकहुटा एटम बम फुटि गेल वा फोड़ि देल गेल तखन की होएत? केओ बाँचत? प्रलय भए जाएत ।”

“बात तँ सही कहि रहल छी । तखन कएल की जाए...?”

“लएह. । एतेक बात कहि गेलिअह आ तखनहु ओएह प्रश्न पुछि रहल छह ।“

“निश्चिन्त भए चलैत रहह । मार्गमे जे किछु स्वतः आबि रहल अछि तकर आनन्द उठबैत रहह ।“-से कहि बाबा जोरसँ हँसि देलाह ।

रस्तामे तरह-तरहक गाम बाटे हमसभ गुजरलहुँ । जतहि साँझ भए जाए ओतहि कोनो ठेकान ताकि कए रातिविश्राम करी । कोनो मंदिर,धर्मशाला भेटिए जाइत छल । खेबाक जोगार भइए जाइत छल । मौनीबाबाकेँ

देखि लोकसभ बहुत प्रभावित होइत छल । हुनकर स्वागतमे भजन कीर्तन होइत छल। बाबा सभकेँ आशीर्वाद देथि । सही काज करैत रहबाक प्रेरणा देथि आ अन्हरोखे सभकेँ छोड़ि अपन यात्रामे आगू बढ़ि जाथि । एहि तरहें हमरा लोकनिक यात्रा चलैत रहल ।

यात्राकक्रममे एकठाम धर्मशालामे एहिना हमसभ रात्रिविश्राम हेतु रुकल रही । भजन-कीर्तन समाप्त भए गेल छल । हमसभ भोजन करबाक क्रममे छलहुँ कि बड़ी जोर अन्हड़ शुरु भए गेल । वर्षा से होमए लागल । चारूकात गहन अंधकार छल । एहनमे की कएल जाइत? ओतए हम आ मौनीबाबाटा रहि गेल रही । बाबा भजन गाबए लगलाहु-

“जगदंब अहीं अवलंब हमर...”

ओ एतेक नीक गबैत छथि से पहिल बेर बुझबामे आएल । गीत गबैत-गबैत हुनकर आँखिसँ नोर धाराप्रवाह खसि रहल छल । बाबाक भजन चलिते रहल आ वर्षो कम नहि भेल । एहि तरहें बहुत राति धरि हमसभ जागल रहलहुँ । भोजनो नहि कए सकलहुँ । मुदा तेँ की? भजनक आनन्द आगू सभकिछु व्यर्थ लागि रहल छल ।

प्रातभेने आखिर वर्षा छुटल । हम सभ फेर बिदा भेलहुँ । चलैत-चलैत दुपहरिआक बाद हमसभ हरिद्वार पहुँचलहुँ ।

16

वृंदावनसँ मौनीबाबाकेँ प्रस्थान केलाक बाद अर्पिता वापस अपन घर आबि गेलीह । ओ बहुत थाकि गेल रहथि। हुनकर हार्दिक इच्छा रहनि जे हम वापस संकल्पमे आबि जाइ । मुदा से भेल नहि । ओहिदिन ओ कतहु नहि जा सकलीह । साँझ होइत-होइत बोखार से लागि गेलनि । सर्दी,उकासी से होनि । सौंसे देह दर्द करनि । आखिर संकल्पक डाक्टरकेँ फोन केलखिन । ओ हुनकर स्वास्थ्यक जाँच करैत छथि । किछु दबाइ लिखि दैत छथि । संगहि किछुदिन पूर्ण विश्राम करबाक परामर्श दैत छथि ।

"हम जे आराम करैत रहि जाएब तँ संकल्पक काज कोना चलत?"

"जान बाँचत तखन ने आओर किछु?

"हमरा जानकेँ की भेल अछि? कनी-मनी थकान भए गेल अछि । रातिमे सुतबैक,अपने ठीक भए जाएत।"

"अहाँक छातीमे जकरन बुझाइत अछि । किछु जाँच कराएब जरूरी अछि । तकर परिणाम देखलाक बादे स्पष्ट होएत जे आखिर आगू केना की कएल जाए । ताबे अहाँ पूर्ण विश्राम करू ।"

अर्पिता किछु नहि बजलीह । तकर बाद डाक्टर साहेब स्वयं आबि जरूरी जाँचसभ करओलथि । दबाइसभ सेहो लेने अएलथि ।

अर्पिताक दुखित हेबाक समाचार संकल्पमे पसरि गेल । ओहिठाम कार्यरत कार्यकर्तालोकनि बेरा-बेरी हुनकर हालचाल लेबए आबि जाथि । अपना भरि हुनकर सेवा सेहो करथि । एक दिन बितल,दू दिन बितल,मुदा हुनकर बोखार कम नहि भेलनि । ताबे जाँचसभक रिपोर्टो आबि गेल छल ।

डाक्टरक निरंतर प्रयासक अछैत अर्पिताक स्वास्थ्यमे सुधार नहि भेलनि । हुनका साँझमे बोखार बढ़ि जानि । रातिमे पसीना चलनि । भोर होइत-होइत बोखार उतरि जानि,मुदा देहमे कतहु सक्क नहि लागनि। ऊपरसँ संकल्पक चिंता से हुनका हरान केने रहनि । जखन कखनहु मोन ठीक बुझाइनि कि ओकरे चर्चा करए लगितथि । डाक्टरसाहेब हुनका बहुत बुझओलखिन -

“एहि तरहें अहाँकेँ चिंतित रहब ठीक नहि अछि । एहिसँ अहाँक स्वास्थ आओर बिगड़ि सकैत अछि ।”

“हम की करू?”

“अहाँ पहिने अपने ठीक भए जाउ । तकर बाद जतेक मोन होअए, सेवा करब ।”

"हमरा तँ दिन-राति मोन ओतहि लटकल रहैत अछि । कहि नहि एतेक बच्चासभक की हाल होएत?"

"सभ ठीक चलि रहल अछि । अहाँ लगाओल आदमीसभ अपन कर्तव्यक निर्वाह नीकसँ कए रहल छथि। तेँ हमर आग्रह जे अहाँ निश्चिन्त रहू । अपन स्वास्थ्यपर ध्यान दिअ ।"

"हमरा कहाँ किछु होइत अछि । हम तँ आब ठीक छी ।"

"से तँ रिपोर्टसभ अहाँक ठीके आएल अछि ।"

"तखन..."

"कहि नहि समस्या कतए अछि?"

"ई बात तँ डाक्टरेकेँ ने बुझबाक चाही ।"

"हमरा हिसाबे तँ अहाँक समस्या मनोवैज्ञानिक अछि ।"

डाक्टरकेँ बुझेबे नहि करनि जे अर्पिताकेँ कोना बुझाएल जाए । हुनकर स्वास्थ्यक लेल जरूरी छल जे ओ व्यर्थक चिंता छोड़थि । प्रसन्न रहथि । मुदा से ओ सुनबाक हेतु तैयारे नहि रहथिन । दिन-राति संकल्पक चिंता करबे करतीह । कैक बेर तँ ओ सपनोमे इएहसभ बड़बड़ाइत रहथि ।

"हमरा मिहिरकेँ वापस आनि दएह । हम ओकरा बिना नहि जीबि सकैत छी । ओ संकल्पसँ किएक चलि

गेल? जरूर ओकरा किछु परेसानी भेल हेतैक । नान्हिटा बच्चा रने-बने बौआ रहल अछि । केओ ओकरा देखनाहर नहि? एहन जुलुम नहि देखलहुँ । ई सभ मौनीबाबाक खेल लगैत अछि । ओ अपन स्वार्थमे मिहिरकेँ हमरासँ फराक कए देलक ।”

अर्पिताक सेवामे लागल लोकसभ सेहो हुनका कैकबेर सपनाइत सुनलक । सभबात डाक्टरोकेँ पता लगलनि । समस्याक अनुमान तँ आब लागि रहल छलनि,मुदा समाधान किछु फुरेबे नहि करनि ।

“अहाँ एतेक चिंता नहि करू ।”

“हम की करू? हमर मोन रहि-रहि कए संकल्प दिस चलि जाइत अछि ।”

“एकटा काज किएक ने करैत छी ।”

“की?”

“अहाँ ओहीठाम चलि आउ । संगे रहलासँ अहाँक मोन हल्लुक लागत । लोकसभसँ भेंटो-घांट होएत ।”

“ठीक छैक ।”

डाक्टरक सलाहपर अर्पिता संकल्पमे रहए गलीह। तकर अनुकूल प्रभाव होइत बुझाएल । ओ आब भोरे उठि जाइत छलीह । संकल्पक बच्चासभक संगे गप्प-सप्प करैत छलीह । मुदा हमर कोठरी लग जाइतहि फेरसँ ओहने मनःस्थिति भए जाइत छलनि ।

संकल्पबासी बच्चासभ अर्पिताक खूब सेवा करथि। अपना भरि प्रयासमे लागल रहथि जाहिसँ ओ प्रसन्न रहथि। हुनका कखनहु असगर नहि रहए दितथि । मुदा जहाँ कि निन्न पड़ितनि,ओ सपनाए लगितथि । ओएह बातसभ बड़बड़इतथि । लगपासमे सुतल बच्चासभ उठि जाइत । मुदा केओ किछु कहनि नहि । ओ एहिना कखनहु सपनइतथि,कखनहु बड़बड़इतथि आ कखनहु निन्न पड़ि जइतथि ।

17

हरिद्वारमे पैर रखितहि मौनीबाबाक आनन्दक सीमा नहि छल । ओहिठाम बहि रहल गंगाक अविरल प्रवाह देखि ओ आनन्दित भए भजन गाबए लगलाह । चारूकात संत-महात्मासभ “गंगे!गंगे!” कहि डुबकी लगा रहल छलाह । जहाँ-तहाँ आएल यात्रीलोकनि गंगाक लगीच पहुँचि निश्चिन्त बुझा रहल छलाह । पारिवारिक लोकसभ बेरा-बेरी स्नान कए रहल छलाह । केओ मंत्रपाठ कए रहल छलाह,केओ अपन पितरलोकनिकेँ पिंडदान कए रहल छलाह । मौनीबाबा सेहो गंगामे पैसि गेलाह । “हर,हर गंगे!” कहैत डुबकी लगा देलाह आ बड़ीकाल धरि बाहर नहि भेलाह । हम हुनका एना गंगामे डुबल देखि चिंतामे

पड़ि गेलहुँ । मुदा लगपासमे ठाढ़ लोकसभ आनन्द लए रहल छल । साइत ओ सभ एहन दृश्य देखबाक अभ्यस्त छल। थोड़ेकालक बाद बाबा मुड़ी बाहर केलाह । हम आश्वस्त भेलहुँ । हमरा देखि बाबा इसारा करैत छथि । हम बाबाक लंगोटी लए कए कातमे ठाढ़ छी । ओ भीजले बाहर होइत छथि । लंगोटी बदलैत छथि । तकरबाद हमहूँ गंगामे पैसि जाइत छी । बहुत आगू धरि जेबाक साहस नहि होइत अछि,कारण हमरा हेलए नहि अबैत अछि । तथापि कैकबेर डुबकी लगबैत छी । हमरा गंगामे स्नान करैत लागि रहल छल जेना स्वर्ग एतहि अछि । अनेरे लोक एमहर-ओमहर बौआइति रहैत अछि ।

मौनीबाबा गंगा स्नानक बाद बाहर अएलाह । ओतहि पूजा-पाठ केलाह । ओहिठाम लगपासमे कतेको मंदिर छल,धर्मशालासभ बनल छल,ओ कतहु नहि गेलाह। हम पुछबो केलिअनि-

“बाबा मंदिरसभमे दर्शन नहि करबैक?”

“जखन साक्षात गंगामाताक दर्शन   भइए रहल अछि तखन आओर कथुक कोन काज? हमरा तँ लागि रहल अछि जे साक्षात शिव स्वयं उपस्थित भए गेल छथि। आखिर, गंगा तँ हुनके जटासँ निकलि एहिठाम धरि आएलि छथि ने । तखन आनठाम बौएबाक कोन प्रयोजन?

हम आ बाबा आपसमे गप्प-सप्प करैत गंगाक काते-काते बढ़ि रहल छलहुँ । कनीके आगू बहुत रास लोकसभ जमा देखाएल । कनी आओर लगीच पहुँचलहुँ तँ देखैत छी एकटा युवक संन्यासी प्रवचन कए रहल छथि। लोकसभ हुनकर बातकेँ बहुत ध्यानसँ सुनि रहल अछि । ओहीमेसँ एकगोटेकेँ हम पुछलिऐक-

"बात की छैक? ई के छथि? एतेक भीड़ किएक लागल अछि?"

"ई बहुत पढ़ल-लिखल छथि । बड़का पदपर काज करैत छलाह । लाखटाका दरमाहा भेटैत छलनि । मुदा कि भेल कि नहि, ओ सभकिछु छोड़ि सन्यास लए लेलनि। वर्षोसँ हरिद्वारे रहैत छथि ।"

हुनकर बात सुनि बाबाकेँ सेहो उत्सुकता भेलनि । हमसभ ओहिठाम लगमे पहुँचि जाइत छी आ चुपचाप हुनकर प्रवचन सुनि रहल छी ।

18

युवा सन्यासी प्रवचन करैत छलाह । लोकसभ थपड़ी बजा रहल छल । जे केओ ओहि बाटे जाइत छल,से ठाढ़ भए जाइत,हुनकर प्रवचन सुनए लगैत । कहि नहि हुनकर शब्दमे की जादू छलनि? असलमे जखन वाणी

आ काजमे समन्वय होइत छैक,तँ तकर प्रभाव एहिना व्यापक होइत छैक । कहलहुँ किछु आ केलहुँ किछु ,तखन तँ ओ बात नहि अबैत अछि । ई युवा सन्यासी आइआइटी इंजिनीयर छलाह । खूब नीक नौकरी रहनि,खूब टाका कमाथि । तथापि,हुनका ओ सभ व्यर्थ बुझेलनि । सभटा त्याग कए देलनि । गंगा कातमे रमि गेलाह । कोनो मौसम होइ, ओ ओतहि रमल रहथि । कतहु नहि जाथि। ओहो चाहितथि तँ एकटा कुटी बना लितथि आ निचैन भए ओहिमे सुखसँ रहितथि । मुदा से हुनका पसिंद नहि छलनि । ओ कहि रहल छलाह-

“ईश्वर ककरो नहि कहलखिन जे हमरा ई करह, ओ करह । हमरा लेल बड़का मंदिर बनाबह । तरह-तरहक मंत्र पढ़ह आ जे सभ से नहि करैत अछि तकरा संगे गलत व्यवहार करह । समस्त शृष्टि एक रंग सभक हेतु सुलभ अछि । मुदा मनुक्खक स्वार्थक कारणें ई हाल भेल अछि । जकरा जे पार लगलैक तकरा कब्जा लेलक । आर तँ छोड़ह, भगवानोकँ नहि बकसलकनि ।

“ई हमर भगवान तँ ओ तोहर भगवान ।”

ईश्वरक नामपर दोकानदारी चलि रहल अछि । निर्दोष लोकसभ ठगा रहल अछि । आपसमे मारकाट कए रहल अछि । एहिमे हुनकर कोन दोष?जरूरी अछि जे

लोकसभ गीताक मर्म बूझए । समस्त जीव-जन्तुकेँ एकभावसँ देखए । सही मानेमे ओएह धार्मिकता थिक ।

युवा सन्यासीक प्रवचन चलिए रहल छल कि किछुगोटे लगीचक धर्मशालासँ फरसा,गँरास,भाला,लाठी लेने ओतए पहुँचि गेल आ युवा सन्यासीकेँ गड़िआबए लागल ।

“ई ओना नहि मानतौक ।”

“सही कहि रहल छह । एकर स्थायी इलाज जरूरी अछि ।”

“तखन देखि कि रहल छह? जे करबाक छह से करह ने । एहिठाम अनेरे मेला लागल रहैत अछि ।”

“कोनो बात बिचारि कए करबाक चाही । एहन ने होअए जे हमहीसभ लफड़ामे पड़ि जाइ ।”

“बात तँ सही कहि रहल छह । मुदा एकरा रहैत तँ हमरा लोकनिक धंधा चौपट भेल जा रहल अछि । लोकसभ एकर कहब मानि कए गंगा स्नान कए वापस भए जाइत अछि । हमरसभक धर्मशालासभ भम्म पड़ि रहल अछि । स्थानसभक खरचा चलाएब मोसकिल भए गेल अछि ।”

“तखन?”

“तखन की । जे करबाक छह से जल्दी करैत जाह।”

"पहिने लोकसभ तँ हटए ।"

ओ सभ चिकड़ि-चिकड़ि लगपासमे जमा लोकसभकेँ चेतौनी देलक ।

"तूँसभ एहिठामसँ घसकि जाह । ई महापापी अछि। नित्यप्रति गंगाकातमे अधार्मिक बातसभ प्रचार करैत रहैत अछि । एकर इलाज हमसभ जल्दीए करब । तूँसभ एकरा चक्करमे नहि पड़ैत जाह ।"

देखिते-देखिते चारूकातसभ लाल-पिअर वस्त्र पहिरने,विभिन्न प्रकारक हथिआरसँ लैस बदमाससभ युवक महात्माकेँ घेरि लेलकनि । लोकसभ डरा कए इएह-ले,ओएह -ले भागल । थोड़बे कालमे ओ ओहिठाम असगरे छलाह । कनीक फटकी मौनीबाबा आ हम छलहुँ । मुदा हमरासभकेँ ओ सभ किछु नहि कहलक । बदमाससभ जोरसँ नारा लगओलक आ युवक सन्यासी दिस बढ़ल । अपन जान बँचेबाक हेतु ओ गंगामे कुदि गेलाह । गंगाक तीव्र प्रवाहमे ओ थोड़े काल उपर-नीचाँ करैत रहलाह । फेर कतए गेलाह कोनो पता नहि चलि रहल छल । मौनीबाबा एहि अन्यायकेँ देखि चुप नहि रहि सकलाह । ओ युवा सन्यासीकेँ बचेबाक हेतु गंगामे कुदि गेलाह । तकरबाद गंगामे ओ बड़ीकाल धरि ऊपर-नीचाँ होइत रहलाह ,मुदा युवा सन्यासीक किछु पता नहि चलि सकल । हम बाबाकेँ देखैत रहि गेलहुँ । मुदा ओहो गंगामे डुबलाह से डुबले

रहि गेलाह । कोनो थाह पता नहि चलि रहल छल । आब की करी,किछु फुरा नहि रहल छल ।

बदमाससभ मौनीबाबासँ बहुत तमसाएल छल ।

“सएह कहू, हिनका एहि लफड़ामे पड़बाक कोन काज छल?”-हमरा दिस देखि ओहिमे सँ केओ बाजल ।

“ओ जानि-बूझि कए अपन जान खतरामे देलाह अछि तँ एहिमे केओ की कए सकैत अछि?”

“एकटा काज करह? ”-ओहीमेसँ केओ बाजल ।

“की?”

“बाबाक चेलाकेँ अपना संगे लेने चलह ।”

“सही कहलह । बाबा अपने एकरा पछोड़ केने आबि जेतह ।”

हम ओकरसभक बात सुनि रहल छलहुँ । बहुत डरा गेल रही । मुदा कोनो रस्ता नहि फुराइत छल । एसगर रही । यदि बेसी किछु करितिऐक तँ जानो जा सकैत छल । अस्तु,चुपचाप ओकरासभक संगे बिदा भए गेलहुँ ।

19

“दौड़ै जा हौ लोकसभ ।”

“की भेलैक?”

“बाबा गंगामे डुबि रहल छथि।”

“से कोना?”

“ककरो बचेबाक हेतु गांगाक प्रवाहमे कुदि गेलाह। हम बड़ीकालसँ एतहि ठाढ़ छी । कतहु नहि देखा रहल छथि ।”

“तँ तूँ मना नहि केलहुन?”

“जाबे हम किछु कहितिअनि ताबे तँ कुदि गेल रहथि ।”

“ओ एना किएक केलथि?”

“एकटा युवा सन्यासीकेँ बदमाससभ बड्ड मारि मारलक, जान लेबएपर लागल छल । ओ अपन जान बचेबाक हेतु गंगामे कुदि गेलाह । ओकरा बचेबाक हेतु पाछूसँ मौनीबाबा सेहो कुदि गेलाह । आब तँ दुनूमे सँ केओ नहि देखा रहल छथि । कहि नहि कतए गेलाह, की भेलनि?”

बदमाससभ हमरा लेले-लेने एकटा धर्मशाला पहुँचल । ओहिठाम एकटा कोठरीक ताला खोलि हमरा ओहिमे बैसा देलक ।

“हमसभ किछु जरुरी काजसँ जा रहल छी । ताबे तूँ एतहि विश्राम करह । कोनो खगता होअए तँ घंटी बजा दिअहक । सभटा ओरिआन भए जेतह । मुदा बिना हमरा लोकनिक आज्ञाकेँ एहिठामसँ भागबाक चेष्टा नहि

करिअह। यदि से करबह तखन फल भोगबह । एहिठाम चारूकात सीसीटीभी लागल अछि । जखने एकहु डेग आगू बढ़बह, पकड़ि लेल जेबह । तखन जे हेबाक चाही, से हेतह । बात बूझलहक कि नहि?”

“मुदा हमर की गलती अछि जे हमरा संगे एना कएल जा रहल अछि?”

“गलती-सहीक बात नहि छैक । तोरा संगे जे बूढ़ा महात्मा छलखुन सएह तोरा लेल समस्या ठाढ़ केलखुन अछि । ने ओ बदमास महात्माक पाछू गंगामे कुदितथि, ने तूँ पकड़ल जइतह ।”

“ओ तँ एकटा मनुक्खक जान बचेबाक हेतु एना केलाह । कोनो हमरासँ पुछलाह थोड़े । पता नहि आब हुनकर की हाल छनि? जीबितो छथि कि नहि? ”

“हमसभ तकर पता लगेबाक प्रयासमे लागल छी। ताबे तूँ धैर्य राखह । कोनो चिंता नहि करह । हमसभ तोरा कोनो क्षति नहि करबह । यदि हुनकर पता लागि जाएत तँ तुरंत तोरा सूचना भेटि जेतह ।”

“ठीक छैक ।”

हमर कोठरीक चारूकात मंत्रसभक मधुर ध्वनि गुंजित भए रहल छल । मंदिरसभमे शंखनाद भए रहल छल । लगीचे मे बहि रहल गंगामे लोकसभ नहा रहल छलाह ,पूजा-पाठ कए रहल छलाह । संपूर्ण वातावरण

भक्तिमय भेल अछि । आगन्तुक लोकनि अपन-अपन श्रद्धाक अनुसार दान दैत छलाह,प्रसाद लैत छलाह आ समय बितलाक बाद अपन-अपन घर वापस चलि जाइत छलाह । ओहि कोठरीमे बैसले-बैसल सभटा दृश्य हम निरंतर देखि रहल छलहुँ । हमरा ओहिठाम कोनो कष्टो नहि छल । घंटी बजबितहि सभकिछु भेटि जाइत छल । तथापि,हमरा चैन नहि छल । मौनीबाबाक लेल हमर मोन बेचैन छल । पता नहि हुनकर की हाल अछि? कहीं गंगाक प्रवाहमे सभदिनक हेतु बहि ने गेल होथि । यदि से भेल तखन तँ हमर सभटा सपना ठामहि रहि जाएत । मौनीबाबाक संगे रहलासँ हमरा शांति तँ भेटिते छल,संगहि इहो विश्वास छल जे बाबा हमरो पार लगओताह । हमर मोनक शङ्काकेँ दूर करताह । मुदा आब तँ सभकिछु लटपटा गेल छल ।

ओ बदमाससभ दोबारा घटनास्थलपर पहुँचल । ओहिठाम केओ नहि छल । मौनीबाबाक कोनो अता-पता नहि छल ।

“जएह दहक, जेहन केलक तेहन भोगलक ।”

“सही बात छैक । हम-तूँ एहिमे कइए की सकैत छी? हमरासभकेँ तँ ओहि युवा सन्यासीसँ कुन्नह छल ,मुदा ई बूढ़ा कहि नहि कतएसँ ओहिमे टपकि गेलाह ।

ओ सभ आपसमे गप्प कइए रहल छल कि फटकी एकटा नाओ अबैत देखेलैक । क्रमशः नाओ लगीच अबैत गेल । नाओमे बैसल बूढ़ आब स्पष्ट देखा रहल छलैक ।

"ई तँ ओएह लागि रहल अछि ।"

"हमरो सएह बुझा रहल अछि ।"

"आबए दहक । तखनहि पता लागत ।"

ओ सभ नाओक प्रतीक्षे करैत रहि गेल । कहि नहि कखन ओ अपन दिशा बदलि लेलक?केम्हर चलि गेल?नाओ मे ओएह छल कि हमरासभकेँ भ्रेम भेल? ओ सभ आपसमे गप्प करैत रहल -

"ई की भेल? अचानक नाओ दोसर दिस घुमि गेल ।"

"आब की कएल जाए?"

"वापस चलह । एहिठाम रहिए कए की होएत?"

"सही कहि रहल छह ।"

"ओ सभ वापस अपन-अपन ठेकान दिस चलि जाइत अछि ।"

20

मौनीबाबा गंगामे उबैत-डुबैत एकटा नाओ देखि ओहिपर छड़पि कए बैसि गेल रहथि । मुदा युवा सन्यासीक कोनो अता-पता नहि चलल रहए...। थोड़बे कालक बाद एकटा लास गंगामे दहाइत देखाएल । बाबा

ओकरा चिन्हबाक प्रयास केलनि । मुदा से संभव नहि भेल । देखिते-देखिते लास लुप्त भए गेल । मौनीबाबा ओहि नाओसँ वापस ओतहि आबि रहल छलाह जतए हमरा छोड़ने रहथि । मुदा हम नहि देखेलिअनि । ओ बदमाससभ ओतहि छल । ओकरासभकेँ देखितहि बाबा नाविककेँ आग्रह कए फटकी सहटि गेलाह । नाओ क्रमशः अदृश्य होइत गेल ।

गंगाक प्रवाहमे ओहि नाओकेँ सम्हारब बहुत मोसकिल होइत छल । नाविक जेना-तेना ओकरा कात लगओलक । मौनीबाबा बाहर भेलाह । संयोगसँ हम अपन कोठरीसँ हुनका देखि रहल छलहुँ ,मुदा ओ हमरा नहि देखि सकलथि । हमर मोन छटपटा रहल छल । होइत छल जे कहुना हुनका लग पहुँचि जाइ । इहो होअए जे हमरा बिना ओ बहुत परेसान हेताह । हम की करू से किछु बुझा नहि रहल छल ।

एहि तरहें हम बाबाक लेल आ बाबा हमरा लेल व्याकुल रही । ने बाबा हमरा ताकि सकलथि,ने हम हुनका लग पहुँचि सकलहुँ । आखिर सौंसे दिन बीति गेल,साँझ पड़ि गेल । पता नहि बाबा केमहर चलि गेलाह? हम ओही कोठरीमे पड़ल छलहुँ कि एकाएक खट के अबाज भेल । कोठरी खुजैत अछि । तीनटा व्यक्ति साधुक वेशमे हमर कोठरीमे प्रवेश करैत छथि । हम हुनका सभकेँ देखि

सकपका जाइत छी । उठि कए बैसि जाइत छी । हम निरंतर आगन्तुक लोकनिक दिस देखि रहल छी । ओहिमेसँ एकगोटे बजैत छथि-

"अहाँ चिंता नहि करू बालक! हमसभ एकटा बहुत शुभ समाचार लए कए अएलहुँ अछि ।"

"एना बुझऔअलि किए बुझा रहल छिअनि, साफ-साफ किएक ने कहि दैत छिअनि ।"

"परमाचार्यजी अहाँकेँ अपन शिष्य बनेबाक निर्णय केलनि अछि ।"

"मुदा हम तँ हुनका जनितो नहि छिअनि ।"

"छी! छी! ई की बाजि रहल छी? हुनका के नहि जनैत अछि?"

"मुदा हम तँ नहि जनैत छिअनि? एना केना हमरा अपन शिष्य बना सकैत छथि?"

"अहाँ बहुत अभागल बूझा रहल छी । अहाँकेँ पता हेबाक चाही जे परमाचार्यक शिष्य बनितहि अहाँक भाग्य चमकि सकैत अछि?"

"हमर भाग्य जनमितहि सुति चुकल अछि । ओ आब की चमकत वा जागत? केओ हमर किछु नहि कए सकैत अछि?"

"तूँ अनेरे एकरा संगे सबाल-जबाब कए रहल छह। जे करबाक छह से करह आ निकलह ।"-ओहीमे सँ एकगोटे बाजल ।

ओहिमे सँ एकटा साधु आगू बढ़ैत अछि,हमर गट्टा पकड़ैत अछि आ हमरा लेने आगू बढ़ि जाइत अछि। बँकिए दुनूगोटे हमर दुनूकातसँ घेरने चलैत अछि । हम चुप छी,परेसान छी,अपन कपार ठोकि रहल छी । मुदा कएल की जाए? किछु करबासँ पूर्णतः लाचार छी असमर्थ, बेवश हम ओकरासभक संगे जा रहल छी । की सोचने रही आ कि भए रहल अछि? हमर दुर्भाग्य,आओर ककर दोष कहि सकैत छी । लगैत अछि जेना हमर जन्म विपत्ति सहैत रहबाके हेतु भेल अछि । बहुत मोसकिलसँ संकल्पसँ निकलि मौनीबाबाक संगे किछु समयसँ आनन्दपूर्वक जीबि रहल छलहुँ । मुदा नियतिकेँ साइत इहो बरदास नहि भेलैक ।" -सएहसभ सोचैत हम ओकरासभक संगे चलैत रहलहुँ ।

पता नहि कतेक गलीबाटे ओ सभ हमरा घुमबैत रहल । दस डेग बढ़लहुँ कि एकटा फाटक,फेर दस डेग बढ़लहुँ कि दोसर फाटक । कहक माने जे डेग-डेगपर फाटक लागल छल । हिसाब-किताब तेहन केने छल जे एक बेर यदि अंदर गेलहुँ तँ ओहिमे सँ निकलब मोसकिल। ओएहसभ जे चाहत सएह होएत । जेमहर लए जाए,जे

करए । एहिना फाटक-फाटक पार करैत हम परमाचार्यजीक कक्षमे आनल गेलहुँ । मुदा ओहूठाम केओ नहि छल । कक्षमे एकटा महात्माक विशालमूर्ति छल । ओहिपर नाना प्रकारक फूलक मालासभ चढ़ाओल गेल छल । चारूकात सुगंधित धूप-अगरबत्ती जरि रहल छल । मुदा दूर-दूर धरि एकहुटा आदमीक नामो-निसान नहि छल । ओहिठाम हमरा पहुँचा कए ओ तीनू साधु कतहु सहटि गेल । हम असगरे ओहि विशाल कक्षमे ठाढ़ छलहुँ । उत्सुकता आ डर दुनू भए रहल छल । कहि नहि आब की होमए बला अछि? इएह प्रश्न हमर मोनमे बेर-बेर आबि रहल छल ।

थोड़ेकालक बाद एकटा बाबाजी वेषमे एकगोटे अएलाह । हमरा इसारा कए लगमे बजओलनि । किछु-किछु मंत्र पढ़लनि । तकर बाद ओ चलि गेलाह । थोड़ेकालक बाद एकटा दोसर बाबाजी आएल । ओ हमरा नववस्त्र देलक । मंत्र पढ़ि कए ओहि वस्त्रकेँ सिक्त कए देलक आ हमरा दिस बढ़ा देलक । हम ई सभ करबाक हेतु तैयार नहि रही । वस्त्र पहिरबासँ मना कए देलिऐक। एहिबातसँ ओ बहुत तमसाएल । थपड़ी बजओलक । चारि-पाँचटा साधुक वेषमे पहलमान अंदर प्रवेश केलक आ हमरा चारूकातसँ घेरि लेलक ।

तकरबाद की केलक कि नहि हम बेसुध भए गेलहुँ। जखन होस आएल तँ हम पुलिस थानामे छलहुँ? बुझाए

नहि रहल छल जे आखिर हम एतए कोना पहुँचि गेलहुँ? हमरा आँखि खोलैत देखि थानेदार बहुत प्रसन्न भेलथि ।

“मोहन!”

“जी सरकार!”

“हिनका पीबाक हेतु पानि दहुन । किछु जलखैक सेहो ओरिआन करह । बहुत भुखल बुझाइत छथि ।”

“जी सरकार!”

मोहन तुरंते हमरा लेल जलखै आ चाह-पानक ओरिआन केलक । हम बहुत भुखाएल रही । तुरंत सभटा खा गेलहुँ । पानि पीलहुँ,चाह पीलहुँ । हमरा आश्वस्त देखि थानेदार बजैत छथि-

“हिनका घटनास्थलपर लए चलह । तीनू पहलमानोकेँ लेने चलह ।”

“जी सरकार!”

हम पुलिसक जीपमे तीनू पहलमानक संगे ओतहि आनल जाइत छी जाहिठाम हम बेहोस भए गेल रही । ओएह परमाचार्यक कक्ष ,मुदा ओहिठामक माहौल एकदम बदलल-बदलल लागि रहल छल ।

परमाचार्यक कक्ष पुलिससँ भरल छल । ओहिठामक माहौल देखि हम चकित छलहुँ । बुझेबे नहि करए जे आखिर ई “केना भेलैक? किएक भेलैक?”-लगीचेमे ठाढ़ एकटा पुलिससँ पुछलिऐक तँ कहैत अछि-

"देखैत रहिऔक ने की सभ होइत छैक?"

"कनी बूझा कए कहू ने?"

एहिठामक परमाचार्यक ओहिठाम छापा पड़ि गेलैक अछि । सएसँ बेसीए महिलासभ पकड़ल गेलैक अछि ।

"तखन...?"

"अखन बहुत किछु आओर निकलतैक ।"

आ परमाचार्य? "

"ओ तँ हाजतिमे बंद छैक ।"

"हद भए गेल । ई सभ तँ भगवानोक नाम बदनाम कए देतनि ।" -हम मोने-मोन सोचैत रहि गेलहुँ ।

"से किएक? एतेक नामी महात्मा हाजतिमे...?"

"ओ की महात्मा रहत? कोनो हत्याक मामिलामे फँसल रहए । पुलिससँ बचबाक हेतु नाम बदलि कए महात्मा बनि गेल । टाका कमेबाक हेतु कोनो कुकर्म छोड़ने नहि अछि । पहिनहि कैक बेर पुलिस ओकरा धरि पहुँचि गेल रहैक, मुदा केना-ने-केना बचैत गेल । एहि बेर लगैत अछि नीकसँ फँसि गेल अछि ।"

"से केना भेलैक?"

"युवा सन्यासीकेँ एकर आदमीसभ मारि देलकैक । ओकरा ततेक तंग केलकैक जे ओ गंगामे कुदि कए प्राण दए देलक । ओतहिसँ एकर विनाश शुरु भेलैक । पुलिसक बड़का अधिकारीसभ धरि ई बात पहुँचि गेल । आखिर,

ओकरा ओहिठाम छापा पड़ल, की-की ने भेल। ओ पकड़ल गेल आ हाजतिमे सड़ि रहल अछि।"

"सएह कहू जे ई सभ केहन पापी अछि?"

"पापी...?जएह दिअ। एकरा सभक लेल तँ कोनो शब्द ताकब मोसकिल अछि। ई सभ समाज आ कानूनक शत्रु अछि। धर्मक नामपर तरह-तरहक कुकर्म करैत अछि। लोक एकरा सन-सन लोकपर विश्वास कए ठगाइत अछि। धन-संपत्ति,इज्जति सभकिछु लुटा जाइत छैक।"

"एहन-एहन लोकसभसँ कोना जान बाँचि सकैत अछि?"

"बहुत मोसकिल काज अछि। कारण एकर सभक तंत्र सभठाम पसरि गेल अछि। बहुरुपिआ अछि ई सभ। कखन कोन रुपमे हाजिर भए जाएत आ ठगि लेत तकर कोनो ठेकान नहि। लोक अबैत अछि तीर्थ करए आ एकरासभक चक्करमे पड़ि कए सर्वस्व लुटा लैत अछि।"

"तखन..."

"तखन की? बहुत विचारि कए काज करी। आब ओ समय नहि रहलैक जे आँखि मुनि कए वेष देखि विश्वास कए ली।"

21

थानामे गजबके भीड़ उपस्थित छल। पुलिस परमाचार्यकेँ हथकड़ी पहिरओने कचहरी लए जा रहल छल।

हुनकर आश्रममे छापामारीमे बहुत रास आपत्तिजनक वस्तुसभ पकड़ल गेल छल । देश-विदेशी नोटसभ गनबाक हेतु बैंकसँ मसीन आनल गेल छल । ओहिठाम पकड़ल गेल सताधिक महिलासभकेँ पुलिस प्रारंभिक जाँचक बाद बेराबेरी छोड़ि रहल छल । कारण ओ सभ मजबुरीमे वा धोखासँ ओतए रहि रहल छलि । सभकेँ अपन-अपन घर वापस पहुँचाएल जा रहल छल । मुदा किछु महिला एहनो छलीह जिनका केओ नहि छल । जिनकर भूत,वर्तमान,भविष्यसभ पहिनहि नष्ट भए चुकल छल । हुनकासभकेँ की कएल जाए? पुलिस अधिकारी लोकनि एहिबातसँ बहुत चिंतित रहथि ।

ओहि दिनिक भोरुका आखबार एहि घटनासँ पाटल छल । परमाचार्यक हथकड़ी लागल फोटो आ आश्रमसँ पकड़ाएल अकूत संपत्तिक फोटो प्रमुखतासँ छापल गेल छल । ओही समाचारमे हमरो बारेमे लिखल गेल छल । संयोगसँ ओ समाचार मौनीबाबा धरि पहुँचि गेल । अर्पिता सेहो ओ समाचार पढ़लनि । मौनीबाबा तँ हमरा ताकिए रहल छलाह । समाचार पढ़िते थाना पहुँचि गेलाह । ओहि समय हम थानेदारक कोठरीमे बैसल रही । बाबा सोझे ओतहि जा रहल छलाह कि गेटपर ठाढ़ पुलिस रोकलकनि ।

“ठहरू । अहाँ के छी? कतए जा रहल छी?”

“हम मिहिरकेँ ताकि रहल छी ।”
“के मिहिर?”
“ओएह बालक जकरा परमाचार्यक ओहिठामसँ पुलिस बचओलक अछि ।”
“अहाँ हुनकर के छिअनि? हुनका कोना जनैत छिअनि?”
बाहर हल्ला होइत सुनि थानेदार स्वयं गेटपर आबि गेलाह। ओ मौनीबाबाकेँ ऊपरसँ नीचाँ देखैत छथि । फेर गेटपर ठाढ़ पुलिसकेँ डंटैत छथि-
“तोरासभकेँ कनीको अकिल नहि छौक? आदमीक पहिचान तँ एकदम नहि छौक? एहन सिद्‌ध पुरुषकेँ रोकि रहल छहुन ।
“गलती माफ कएल जाए सरकार! आइ-काल्हि किछु पता ने-ने चलैत छैक । ककरो कपारपर नीक-बेजाए थोड़बे लिखल रहैत छैक ।
“बेसी बात नहि करह । हिनका आदरपूर्वक बैसाबह ।”
“हम मिहिरसँ भेंट करए चाहैत छी ।”
“कोनो बात नहि । अहाँ कनीके प्रतीक्षा करू । हमसभ हुनकासँ किछु जानकारी लए रहल छी । तकर बाद अपनेकेँ हुनकासँ भेंट भए जाएत ।”
मौनीबाबा थानेदारक कक्षक बगलमे बनल विश्रामगृहमे सुस्ताइत छथि । पुलिससभ अपना भरि हुनकर स्वागत करैत छनि । मौनीबाबा ओतए बैसले

छलाह कि थानामे एकटा लास पहुँचल । उत्सुकतावश, ओहो लासकेँ देखि रहल छथि ।

“ई तँ ओकरे लास छैक?”

“ककर?”-पुलिस पुछलकनि ।

“युवा महात्माक ।”

“अहाँ हिनका कोना जनैत छिअनि?”

“हम हिनका पहिनेसँ नहि जनैत छलिअनि । संयोगसँ ओहिदिन हम मिहिरक संगे गंगा कातमे स्नान-ध्यानमे लागल रही तँ हिनका लग बहुत लोकक भीड़ देखलिऐक। ओ प्रवचन कए रहल छलाह । लोकसभ दत्तचित्त भए हुनका सुनि रहल छल । हमरो उत्सुकता भेल । हम आ मिहिर सहटि कए हुनकर लगीचमे पहुँचले छलहुँ कि देखैत छी...।”

“की देखैत छी?”

“देखलहुँ जे तीनटा साधु हुनका गोलिएने अछि । तरह-तरहक गारि पढ़ि रहल अछि । मारिओ रहल अछि । ओकरासभसँ जान बचेबाक हेतु ओ युवा सन्यासी गंगामे कुदि गेलाह । हुनकर जान बचेबाक हेतु पाछू लागल हमहूँ गंगामे कुदि गेलहुँ । तकर बाद तँ जे भेल से अहाँसभकेँ बूझले अछि ।”

"ओ तखन तँ अहाँ एहि मामिलाक महत्त्वपूर्ण गबाह थिकहुँ। बँचि कए रहब । कहीं ई बात ओकरासभकेँ पता लगलैक तँ अहाँक जानोपर खतरा भए सकैत अछि ।"

"जे लिखल छैक से हेतैक । एहिमे केओ किछु नहि कए सकैत अछि । यदि हमरा एहि दुनिआसँ एहिना जेबाक होएत तँ ओहिना जाएब । ताहि लेल एतेक डरेबाक काज नहि थिक ।"

बाबाक बात सुनि पुलिस गंभीर भए गेल । ओ ई सभटा बात थानेदारकेँ जा कए कहलकैक । थानेदार स्वयं मौनीबाबा लग मिहिरक संगे उपस्थित होइत अछि । थानेदार अबितहि मौनीबाबाकेँ दंडवत प्रणाम करैत अछि। लगपासमे ठाढ़ पुलिससभ बाहर भए जाइत अछि । हमरा देखितहि बाबा बहुत प्रसन्न होइत छथि ।

"हम तँ तोरा लेल बहुत चिंतामे पड़ि गेल रही । मुदा हमरा विश्वास छल जे तोहर केओ किछु नहि बिगाड़ि सकत । तूँ जल्दीए वापस आबि जेबह । अखन तोरा बहुत काज करबाक छह । एहन-एहन घटनासभसँ तोहर किछु नहि बिगड़ि सकैत अछि ।"

हम बाबाकेँ साष्टांग प्रणाम करैत छी । कहैत छिअनि-

"बाबा हमरा तँ लगैत अछि जेना हमर पुनर्जन्म भेल अछि। जाहि तरहक फसादमे फँसि गेल रही ताहिसँ अहीं उबारि सकैत छलहुँ । जे दृश्यसभ हम देखलहुँ तकर हमरा

कल्पनो नहि छल । तीर्थस्थानमे धर्मक नामपर केहन-केहन कांड कए रहल अछि, से सद्यः देखलहुँ ।"

"देखितहक नहि तँ ज्ञान होइतह केना? तेँ तँ तोरा संगे अनने रहिअह । अखन बहुत किछु देखबहक,बहुत किछु सिखबह ।"

हम बाबाकेँ फेरसँ दंडवत प्रणाम करैत छी । बाबा हमरा बहुत सिनेहसँ देखैत छथि,आशीर्वाद दैत छथि । फेर थानेदारकेँ कहैत छथि-

"हमसभ आब डोलडाल करब ।"

"मुदा अहाँकेँ एहि मामिलामे मदति करब तँ बहुत जरूरी अछि । नहि तँ ई बदमाससभ ओहिना छुटि जाएत । कारण अहाँ युवा सन्यासीक संग भेल दुर्घटनाक प्रमुख गवाह छी ।"

बाबा हँसि दैत छथि । फेर कहैत छथि-

"हम कोनो दुनिआसँ थोड़े जा रहल छी । लगीचेमे जंगलमे हमर कुटी अछि । अखन किछु दिन हमदुनूगोटे ओतहि रहब । तोरा जखन कखनहु काज होअए हमरा सूचित करिअह ।"

22

मौनीबाबा हमरा संगे हरिद्वारसँ बिदा भेलाह । पैरे-पैरे,जंगले-जंगले आगू-आगू ओ आ पाछू-पाछू हम

चलल जा रहल छलहुँ । बाबाकेँ जंगलक एकांत आ चारू दिस पसरल प्रकृतिक सौंदर्य बहुत नीक लागि रहल छलनि। हमहूँ बहुत प्रसन्न रही । आइ कतेक दिनक बाद लफड़ासभसँ जान छुटल छल । गेल रही जे हरिद्वारक पवित्र गंगामे स्नान करब,संत-महात्माक दर्शन करब । मुदा परि गेलहुँ महाझंझटिमे । एहिमे हरिद्वारक कोन दोष? गंगा तँ अखनहु अपन संपूर्ण निर्मलतासँ ओतए प्रवाहित भए रहल छथि । सभक अंतरमनकेँ पवित्र कए रहल छथि । रहल संत-महात्माक बात से तँ ई युगदोष कहल जा सकैत अछि । एहन बात नहि छैक जे असली संत एहि युगमे नहि छथि,हेबे करताह,मुदा ओ सभ एहन भीड़मे किएक रहताह? यदि हेबो करताह तँ पहाड़पर कतहु एकान्तमे चलि गेल हेताह ।

सामान्य लोक तँ श्रद्धासँ एहन-एहन स्थानपर जाइत अछि । कैकबेर ठकाइतो अछि,कैकबेर बँचिओ जाइत अछि । मुदा आब ओ युग नहि रहि गेल छैक जे आँखि मुनि कए कतहु रहि जाइ अथवा ककरो बातपर विश्वास केने चलि जाइ । अपन आँखि-पाँखि खोलने राखब बहुत जरूरी अछि ।

मौनीबाबा जंगलमे प्रवेश करितहि प्रफुल्लित भए गेलाह । लगैत छल जेना जंगलक सभ जीव-जन्तु हुनकर स्वागतमे ठाढ़ अछि । वृक्षसभमे तरह-तरहक फूलसभ

हुनकर स्वागत कए रहल छल । हम मौनीबाबाक संगे चलैत काल अत्यन्त आनन्दक अनुभव कए रहल छलहुँ। रस्तामे गप्प-सप्प करैत ओ कहलाह-

“देखलहक । केहन-केहन लोकसभ तीर्थसभमे घुमि रहल अछि । वेष बदलि-बदलि कए लोकसभकेँ ठकि रहल अछि।”

“मुदा ओ युवा सन्यासी तँ अनेरे मारल गेल ।”

“ई कलियुग छैक । सही आदमीकेँ बहुत कष्ट छैक । आइ-काल्हि लुच्चा-लफंगासभ निचैन घुमि रहल अछि आ सज्जन लोकसभक जानो बचेनाइ मोसकिल अछि ।”

“तखन की कएल जाए?”

“की करबहक? समय-समयक बात होइत छैक । जहिना दुष्ट लोकसभ अपन काज कए रहल अछि,तहिना सज्जन पुरुष सेहो अपन रस्तापर अडिग रहथि । सत्यक विजय हेबे करत ।”

हमसभ आपसमे बतिआइते छलहुँ कि एकटा सिंह सामनेमे देखाएल । हमरा तँ डरे सीटीपीटी गुम्म छल । मुदा मौनीबाबाक लेल धनसन । ओ एकबेर सिंह दिस देखलथि आ सिंह चुपचाप फटकी चलि गेल ।

बाबाकेँ ओहि जंगलक रस्ताक अनुमान छलनि । संभवतः ओ बरोबरि अबैत-जाइत रहल हेताह । दिनभरि लगातार चललाक बाद सूर्यास्तक समय हम बाबाक संगे

हुनकर कुटीपर पहुँचि गेलहुँ । ई ओएह कुटी छल जतए मौनीबाबाकेँ अचानक महान संतक दर्शन भेल रहनि । हुनके प्रेरणासँ ओ वृंदावनमे विशाल मंदिरक निर्माण केने छलाह । ओकरे उद्‌गाटन समारोहमे अर्पिताक माध्यमसँ मौनीबाबासँ संपर्क भेल छल ।

कुटीपर पहुँचि मौनीबाबा बहुत प्रसन्न रहथि । ओहिठाम अपार शांति छल । बीच जंगलमे बनल ओ कुटीमे गजबकेँ आनंदक अनुभव भए रहल छल । चारू कात स्वच्छ वातावरण छल । जरुरतिक सभवस्तु ओतए सुलभ छल । हम एतए बहुत आनंदमे रही । दिनभरि ओ अपन साधनामे रमल रहैत छलाह । हमहूँ अपना हिसाबे रहैत छलहुँ । कतहु कोनो व्यवधान नहि होइत छल । कहि नहि कतएसँ ओतए जरुरति भरि सभटा जोगार स्वतः भए जाइत छल । नित्य सायंकाल मौनीबाबाक प्रवचन होइत छल । ओहिदिन सायंकाल प्रवचन करैत मौनीबाबा कहलाह-

“मनुक्ख अपन जीवनकेँ अपने कठिन बना लैत अछि । नहि तँ ओकरा कथुक कमी नहि छैक । ईश्वर की नहि देने छथि? सोच-विचार करबाक हेतु बुद्‌धि देने छथि । काज करबाक हेतु हाथ देने छथि । मुदा हमसभ अपने चालिसँ मोसकिलमे पड़ल रहैत छी । ई चाही,ओ चाही,हम ई बनब ,ककरोसँ कम किएक रहब ? हम

सभसँ पैघ आदमी छी । एहि तरहक सोचक कारणें मनुक्ख निरंतर अशांतिमे जीबैत अछि । कैक पुस्त धरि भविष्य सुरक्षित करबाक प्रयासमे ओ अपनो शांति नष्ट कए लैत अछि आ दोसरोक हेतु परेसानी उत्पन्न करैत रहैत अछि। धन-संपत्ति ककरो संगे गेलैक अछि? नहि गेलैक अछि । सभटा एहीठाम रहि जाइत अछि । केहनो धनीक आदमी होअए.मुदा ओ अंतमे खालीए हाथ जाइत अछि । एतबा बात यदि लोक बूझि सकैत तँ दुनिआमे आइ ई संकटपूर्ण स्थिति नहि रहैत । अखन तँ ई हाल अछि जे दुनिआक वलिष्ट देशसभ एटम बम बना-बना कए रखने अछि । एक सँ एक विध्वंषकारी अस्त्र-शस्त्र बनओने अछि । किएक? एक-दोसरकेँ डरा कए राखए चाहैत अछि । मुदा एहिसँ समाधान होमए बला नहि अछि । अपन पुरातन संस्कृतिमे एहि बातसभपर विस्तारसँ विचार कएल जाइत रहल अछि । एहि संसारमे हमसभ अपन जरुरति भरि वस्तुक उपयोग करी,अनावश्यक संग्रह नहि करी,दोसरोक सुख-दुखक चिंता करी तँ दुनिआ स्वर्ग बनि जाएत । एतए कोनो चीजक कमी नहि अछि । हमसभ अपन काज आ व्यवहारसँ अपनो लेल आ अनको लेल कष्ट उत्पन्न कए लैत छी ।”

23

संकल्पमे नियमित रहलाक बाद अर्पिताक स्वास्थ्यमे निरंतर सुधार भेलनि । ओहिठामक बच्चासभक संग गप्प करथि,घुमथि ,गीत गाबथि । तरह-तरहक कार्यक्रमसभ आयोजित करथि । एहिसभमे हुनकर मोन लगैत गेलनि । अपन कष्ट बिसराइत गेलनि। अर्पिताक संकल्पमे रहलासँ ओहिठामक व्यवस्थामे गुणात्मक सुधार भेल । कतेको बच्चासभ ओहिठाम आएल । कतेकोकेँ भविष्यक मार्ग प्रशस्त भेलैक । मुदा कखनहु कए अर्पिताक मोनमे अन्हड़ उठिए जाइत छल । ओ फेरसँ बितल घटनासभमे ओझरा जाइत छलीह । किछु बात जरूर छलैक जे बेर-बेर हुनकर मोनकेँ उद्वेलित कए दैत छलनि । अपन व्यक्तिगत जीवनक निराशा तँ छलनिहे,किछु आओर बात छल जे ओ ककरो कहबो नहि करथि,बिसरबो नहि करथि । चुपचाप असगरि सभटा व्यथा सहि जाथि । तखन तँ जीवन छैक । चलैत रहलैक।

समय चक्र आगू बढ़ैत रहलैक । मौनीबाबा चलि गेलाह। संगे हमरो लेने गेलाह । ताहि बातकेँ हुनका बहुत दुख रहनि । ओहिदिन जखन अखबारमे हमर नाम देखलनि,हरिद्वारक घटनासभक समाचार पढ़लनि आ इहो बूझबामे अएलनि जे हमसभ अखन ओहिठामक थानामे

छी तँ हुनका नहि रहल गेलनि । संकल्पक कार्यभार अपन सहयोगीसभपर छोड़ि ओ हरिद्वार बिदा भए गेलीह । अर्पिता टीसनपर पहुँचलापर देखैत छथि जे हरिद्वारक ट्रेन लागल अछि । हुनका लगमे टिकट नहि रहनि । ट्रेनक खुजबाक समय भए रहल छल । ट्रेन ठसाठस भरल छल । सिटीपर-सिटी दए रहल छल । की करथि से बुझा नहि रहल छलनि । संयोगसँ एकटा टिसीबाबू हाथमे कागज लेने ओहिठाम ठाढ़ रहथि । ओ हुनका लग ठाढ़ि भए जाइत छथि । हुनका अपसिआँत देखि ओ पुछैत छथि-

“की बात छैक? अहाँ एतेक परेसान किएक छी?”

“हमरा एहि ट्रेनसँ हरिद्वार जेबाक अछि । मुदा टिकट नहि अछि । अहाँ किछु मदति कए सकब?”

ओ सामनेक डिब्बा दिस इसारा करैत कहैत छथि-

“अहाँ एहि डिब्बाक शायिका संख्या बाइसपर जा कए बैसि जाउ । ट्रेन खुजबाक बाद हम ओतए आएब आ अहाँक टिकट बना देब ।”

अर्पिता फुरतीसँ ओहि डिब्बाक मुँहथरि लग पहुँचैत छथि । मुदा ओहिमे पैसि नहि पाबि रहल छथि । ओ जतेक बेर ट्रेनमे चढ़बाक प्रयास करथि ,ततेक बेर बाहर फेका जाथि । ट्रेनमे सँ एकटा यात्री हुनकर एहि परिस्थितिमे मदति केलकनि । जेना-तेना हुनका डिब्बामे

घिचि लेलकनि । अर्पिताक जानमे-जान अएलनि । ओ टीसी द्वारा बताओल गेल शायिकापर जाइत छथि । संयोगसँ ओहो यात्री ओहीठाम बैसल रहथि । हिनका ओतए अबैत देखि ओ सहटि कए कात भए जाइत अछि। ट्रेन खुजि जाइत अछि । ट्रेनक डिब्बा क्रमशः शांत भए जाइत अछि । थोड़े कालक बाद टीसी बाबू अबैत छथि । ओ हुनका ओहि शायिकाक टिकट काटि दैत छथि । ओहिठाम बैसल सहयात्री ऊपरका शायिकापर चलि जाइत छथि ।

अर्पिता थाकल रहबे करथि । मौका भेटितहि आँखि लागि गेलनि । सिरमा तरमे अपन झोरा राखि लेने रहथि जाहिसँ ओ सुरक्षित रहए । मुदा निन्नमे ओ कखन सरकि कए शायिकाक नीचाँमे खसि पड़ल से ओ नहि बूझि सकलीह । भोरे ट्रेन हरिद्वार टीसनपर पहुँचल । ट्रेनसँ उतरि रहल यात्रीसभक हल्ला सुनि कए अर्पिताक निन्न टूटि जाइत छनि । ओ धरफरा कए उठैत छथि । ट्रेनसँ उतरि जाइत छथि । प्लेटफार्मसँ बाहर होइतहि थानाक हेतु आटो करैत छथि । ओ अपनेमे रमल छथि । माथामे ओएह बातसभ घुमि रहल छलनि । आटोबला टोकैत छनि- “थाना आबि गेल ।”

“एतेक जल्दी आबि गेलहुँ ।”-ओ मोने-मोन सोचैत छथि। जेबीमे सँ टाका निकालि आटोबलाकेँ दैत छथि आ थाना दिस बिदा भए जाइत छथि ।

ओहिदिन जेना-तेना अर्पिता हरिद्वार थाना पहुँचलीह । थानेदार कतहु गेल छल । गेटपर ठाढ़ पुलिस अर्पिताकेँ पुछलकनि-

“अहाँ एतेक हड़बड़ाएल किएक छी?”

“हमरा भेंट करबाक अछि?”

“ककरासँ…?”

“मौनीबाबासँ आ...”

“आर ककरासँ...?”

“मिहिर...”

“ओ दुनूगोटे तँ थोड़बे काल पहिने एहिठामसँ चलि गेलाह ।”

“जा ...चलि गेलाह?”

“हँ, हँ मोसकिलसँ दू माइल गेल हेताह?”

“केमहर गेलाह?”

“से नहि कहि सकैत छी । जाइत काल थानेदारसँ गप्प भेल रहनि । हुनका किछु जानकारी भए सकैत छनि।”

“मुदा थानेदार छथि कतए?”

“ओ एही मामिलाक जाँच हेतु गेल छथि ।”

"तखन की करी?"

"चैनसँ बैसू । हुनका आबए दिअनु । तकरबादे किछु पता लागि सकत ।"

अर्पिता थानामे बेंचपर बैसि गेलीह । कतहु फोन करबाक इच्छा भेलनि । मुदा हुनकर झोरा तँ रहबे नहि करनि । ओहीमे मोबाइल फोन छल,किछु टाका छल आ जरूरी कागजसभ सेहो छल । ओ हड़बड़ा कए संकल्पसँ बिदा भए गेल रहथि । संभवतः झोरा संगमे राखि लेने रहथि,कि नहि रखने रहथि,कि रस्तेमे कतहु छुटि गेलनि? किछु बुझेबे नहि करनि । हुनका एकाएक एना परेसान होइत देखि लगेमे ठाढ़ पुलिस पुछलकनि-

"की बात छैक? अहाँ बहुत परेसान बूझा रहल छी।"

"हमर झोरा नहि देखा रहल अछि । ओहीमे मोबाइल फोन छल । कतहु फोन करबाक मोन भेल तँ झोराक अखिआस भेल ।"

"अहाँ चिंता नहि करू । अपन मोबाइल नंबर बताउ। थानामे मसीन छैक, पता लागि जाएत । अर्पिता मोबाइल नंबर ओकरा लिखा दैत छथि । पुलिस अंदर जाइत अछि । मसीनमे ओ मोबाइल नंबर लिखिते ओकर वर्तमान स्थितिक जानकारी आबि गेल । अहाँक मोबाइल

तँ हरिद्वार टीसन लग अछि । हम ओकरा फोन करैत छी ।”

पुलिस टीसन मास्टरकेँ फोन करैत अछि ।

“अहाँ लगमे एकटा यात्रीक मोबाइल छैक की?”

“हँ, हँ । एकटा झोरा रेलक डिब्बामे कोनो यात्रीक छुटि गेल छलैक । कोनो सहयात्रीकेँ देखेलैक । ओ हमरा लग लेने आएल । झोरामे किछु टाका आ कागजसभ सेहो छैक ।”

“ओ झोरा अहाँ रखने रहू । जिनकर झोरा छनि से अखन थानेमे छथि । हम हुनका संगे आबि रहल छी।”

“ठीक छैक ।”

पुलिस संगे अर्पिता हरिद्वार रेलवे टीसन मास्टरक कक्षमे पँहुचैत अछि । ओहीठाम एकटा यात्री सेहो बैसल रहथि । हुनके हाथमे अर्पिताक झोरा छल ।

ओ अर्पिताकेँ देखितहि झोरा हुनका दिस बढ़ा दैत छथि ।

“ई तँ झोरा हमरा दए कए जा रहल छलाह । ताबतेमे अहाँक फोन आबि गेल । तँ हम हिनका रोकि लेलिअनि । कहलिअनि जे अपने दए देबनि । टाकाबला बात छैक ।”

अर्पिता झोरा लैत छथि । ओकर खोलि कए देखैत छथि । ओहिमे सभकिछु ठीक छल ।

"अहाँकेँ हार्दिक धन्यवाद । आइ-काल्हिक युगमे अहाँ सन-सन लोक बहुत कम होइत छैक ।"

"एहिमे धन्यवादक कोन बात भेलैक । संयोगसँ अहाँक झोरा हमरा देखा गेल ।"

"हमरा लगैत अछि जेना अहाँसँ पहिनो कतहु भेंट भेल छल ।"

"हमरो सएह बुझा रहल अछि ।"

टीसन मास्टर हँसि दैत छथि । पुलिस सेहो ठहाका पाड़ि रहल अछि ।

ताबतेमे टीसन मास्टर चाह मंगा लैत छथि ।

"सभगोटे पहिने चाह पीबि ली । तखन आओर किछु ।"

24

मौनीबाबाक प्रवचन सुनि हमर मोनमे बहुत विश्राम भेटैत छल । लगैत छल जेना हमर समस्त चिंतासभ व्यर्थ छल । हम बहुत आश्वस्त छलहुँ जे आब हमर भावी जीवनकेँ नीक सँ नीक उपयोग संभव भए सकत ।

नित्यप्रति जकाँ हम ओहू दिन मौनीबाबाक प्रवचन सुनि रहल छलहुँ कि ककरो अएबाक आहट बुझाएल ।

बाबा इसारा केलथि । हम कुट्टीक गेट दिस बढ़ैत छी । थोड़बे फटकी अर्पिता एकटा पुलिसक संगे ठाढ़ि छलि ।

हमरा देखितहि ओ फुरतीसँ आगू बढ़ि जाइत छथि-

“मिहिर! कोना छी?”

“ठीक छी । मुदा अहाँ एहि जंगलमे कोना आबि गेलहुँ?”

“हम तँ अखबारमे हरिद्वार कांडक समाचार पढ़ि ओतए पहुँचल रही । जाबे हमरा अहाँसभक जनतब भेल, ताबे अहाँ मौनीबाबा संगे बिदा भए गेल रही । कतए गेलहुँ तकर कोनो जानकारी नहि भेटि रहल छल । हम थानेदारो लग गेलहुँ ।

ओएह अहाँसभक पता देलक, एहि सिपाहीकेँ संग लगा देलक । इएह हमरा एतए पहुँचएमे मदति केलक।” हमरासभकेँ गप्प करैत सुनि मौनीबाबा बाहर अबैत छथि। ओ अर्पिताकेँ एहिठाम देखि चकित छथि ।

“अहाँ एहिठाम ...?”

“अखबारमे समाचार पढ़ि नहि रहल गेल ।”

पुलिस बाबाकेँ प्रणाम करैत अछि ।

“बाबा हम आब चलब ।”

“अखन तँ अएबे केलह अछि । स्नान भोजन कए लएह। तकर बाद चलि जइअह ।”

बाबाक बात कटबाक ओकरा साहस नहि भेलैक । लगीचेमे झरना छल । ओतए स्नान करैत अछि । कुटी आबि कए आरतीमे सामिल होइत अछि । प्रसाद ग्रहण करैत अछि। तकर बाद बाबाक आज्ञा लए बिदा भए जाइत अछि ।

25

परमाचार्यकेँ हथकड़ी पहिरा कए पुलिस कचहरी लग गेल । पाछू-पाछू कैकटा आओर कर्मचारीसभ ओकर फाइल लेने चलि रहल छल । न्यायाधीश महोदय ओकरा देखितहि पुछैत छथि-

“तोरा साधुक वेषमे कुकर्मसभ करबामे कनीको लाज-धाख नहि होइत छह? तोरे सन-सन पापीसभ नीको संत-महात्माकेँ बदनाम कए दैत छथि । धर्मक नामपर तूँ निर्दोष लोकसभकेँ ठगैत रहलह । कतेको घर उजाड़ि देलह। ततबे नहि,अपन पुरना कांडसभकेँ बहुत दिन धरि जाँति देबामे सफल रहलह । पुलिसकेँ धोखा दैत रहलह । कैकटा निर्दोषलोक न्यायक उम्मीद करैत-करैत एहि दुनिआकेँ छोड़ि देलथि । एहिसभसँ बेसी अपराध की भए सकैत अछि? आब तूँही कहह जे तोरा संगे की कएल जाए?”

“पुलिसकेँ धोखा भए रहल छैक श्री मान् । हम ओ सभ नहि छी । हम तँ बच्चेसँ सन्यासी छी । हिमालयमे साधना करैत रहलहुँ । एमहर किछुदिनसँ भक्तलोकनिक आग्रहपर आश्रममे रहि रहल छी ।”

“बेसी बात नहि बनाबह । पुलिस न्यायालयमे तोहर सभटा खिस्सा प्रस्तुत कए देलक अछि । हे देखहक । इएह छह तोहर पुरनका फोटो ने? डकैती,हत्या आ कहि ने की की करैत रहलह? जखन पुलिस तोरापर कारवाइ शुरु केलक तँ जान बचबए हेतु साधुक वेष बना कए रहए लगलह ।”

“सभ गलत छैक सरकार! हम अहाँकेँ पक्का सबूत देब । हम एकदम निर्दोष छी । हमरा फिलहाल जमानति देल जाए । हम कतहु नहि जा रहल छी । अपने जे कहबैक,से हम पालन करब ।”

“तोहर बातक कोनो ठेकान नहि कएल जा सकैत अछि । तोरा विरुद्धमे पुलिस लग पर्याप्त साक्ष्य अछि । तोरा जमानति नहि देल जा सकैत अछि । तूँ चौदहदिन धरि पुलिसक हिरासतिमे रहबह । तकर बाद पुलिस जे कहत ताहिपर विचार केलाक बादे निर्णय कएल जाएत ।”

26

न्यायालयक आदेशक बाद परमाचार्यकेँ पुलिस अपन कब्जामे लए लेलक । ओकरा हाजतिमे रखबासँ पहिने ओकर देहपर सँ मृगचर्मक बनल वस्त्र हटा देल गेल । ओकर वस्त्र सामान्य अपराधी जकाँ राखल गेल । ओ रहि-रहि कए पुलिसपर तरह-तरहक आरोप-प्रत्यारोप लगबैत रहल । मुदा सच बात कदापि स्वीकार नहि करैत छल । पुलिस ओकरा पुरनका फाइलमे राखल ओकर हाथसँ लिखल पत्रसभ देखओलक,तथापि ओ मना करैत रहि गेल ।

“ई हमर हस्तलिपि अछिए नहि । केओ जरूर षड़यंत्र कए रहल अछि । हमरा सन संत-महात्माकेँ फँसा रहल अछि । हम ककरो छोड़बैक नहि । ई थानेदारो दुष्ट लोकसभक संगे मिलि गेल अछि । मुदा एना कतेक दिन चलतैक । हमरा ऊपरसँ नीचाँ सभ जनैत छथि । अन्यायीसभक नास भए कए रहत ।”

पुलिससभकेँ ओकर बातपर तामसो होइक आ हँसीओ लगैक । अंतमे एकटा पुलिस उठओलक डंडा आ चेतौनी दैत बाजल-

“झूठ-मूठ फटर-फटर केनाइ बंद करह, नहि तँ देखि रहल छहक कि नहि? एक-दू लाठी जहाँ पड़तह कि सभटा भगल केनाइ बिसरा जेतह ।”

“नीचता कए रहल छह तूँ सभ । हमरा सन संत संगे अत्याचार भए रहल अछि । हमर एक सँ एक चेला अछि। तोहरसभक जान नहि बचतह, से बूझि लएह ।”

जखन ओ बड़बड़ाइते रहि गेल तँ पुलिस तँ ठहरल पुलिस। ओहिमे सँ एकटाकेँ थानेदार इसारा देलक । परमाचार्यक जाँघपर धएले लाठी मारलक । एक,दू,तीन.. लाठी लगैत-लगैत ओ कल जोड़ि लेलक । आब झूठ नहि बाजब । लाठी चलओनाइ बंद करह,नहि तँ हम मरि जाएब ।”

“तोरा सन-सन पापी एतेक आसानीसँ नहि मरि सकैत अछि । तूँ हजारो घर उजाड़लह, तकर प्रायश्चित के करत? तोरा अखन बहुत भोगबाक छह ।”

पुलिस फेर लाठी उठओलक । से देखि परमाचार्य बपहारि काटए लागल ।

“आब अएलह ने रस्तापर । जाबे नीकसँ बुझबै छलिअह ताबे तरह-तरहक कबाइत करैत रहलह । यदि फेर झूठ बजबह तँ तोहर स्वागत   हेतु आओर नीक ओरिआन कएल गेल अछि, से सोचि लएह ।

“नहि, नहि । हम सभटा सत्य बात कहबह । हमरा सन पापीकेँ ई सभ हेबेक चाही । हम कोनो दंड भोगबाक हेतु तैयार छी ।”

“एकटा-दूटा कांड रहए तखन ने? तू तँ जिनगी भरि एतबे करिते रहि गेलह । दिनमे साधुक वेष आ रातिमे सभ “तरहक कुकर्म करैत रहलह । आखिर एहि युवा संतक की दोष छल जे ओ मारल गेल?”

“ओ तँ अपने गंगामे कुदि गेल ।”

“फेर ओएह बात? जखन तोहर आदमीसभ ओकरा मारि-मारि कए जान लेबए लागल तँ ओ की करितए? बरदासो करबाक एकटा सीमा होइत अछि । ओ तँ मजबूरीमे गंगामे कुदि गेल । नहि तँ केओ अपन जान खतरामे किएक देत? एक दिन,दू दिन नहि,लगातार तोहर आदमीसभ ओकर पछोड़ करैत रहल । तरह-तरहक प्रताड़ना करैत रहल । आखिर तूँ ई सभ किएक केलह? ओ एहन त्यागी संत छलाह । युवावस्थामे सभकिछु छोड़ि कए गंगा कातमे रमल रहैत छलाह,भजन-कीर्तन करैत रहैत छलाह । ओ तोहर की बिगाड़ैत रहथुन?”

“सत्य बात कहू?”

“बाजह?”

“यदि ओ हरिद्वारमे रहि जइतथि तँ हमरासभकेँ के पुछैत? हमरसभक धंधा चौपट भए जाइत । हमर

आदमीसभ ओकरा बहुत बुझओलकैक,मुदा ओ अपन बातपर अड़ल छल । लाख प्रयासक अछैत ओ हरिद्वारसँ जेबाक हेतु तैयार नहि भेल । ततबे नहि,ओ आगन्तुक लोकसभकेँ तेहन-तेहन शिक्षा दैत छल जे केओ हमरासभ दिस नहि अबैत छल ।

“तकर माने की? तूँ ओकर जान लए लेबहक? ”

परमाचार्य की बजितए? चुप्प रहि गेल ।

पुलिसक आँखि लाल टरेस देखि परमाचार्य डरा गेल । हाथ जोरि माफी मांगि रहल छल ।

“आब जे भेल से भेल । एक मौका हमरा दिअ । हम फेर एहन गलती नहि करब । अपन पछिला पापसभक प्रायश्चित करब ।”

“तोहर बातक कोन ठेकान? जे आदमी दिन-राति लोककेँ धोखा दैत रहल अछि,जे अपन स्वार्थ हेतु कतेको घर उजाड़ि चुकल अछि,तकर अपराध एहिना कोना माफ कएल जा सकैत अछि? ”

“हम आर किछु नहि केने छी । हमरा विरुद्ध केओ षड़यंत्र केने होएत?”

“फेर ओएह बात? तोरे चलते कतेक निर्दोष बच्चासभ अनाथालयमे पड़ल अछि । बाजह ई सही बात छैक कि नहि?”

“कोन अनाथालयक गप्प करैत छी?”

"तोरासभ बूझल छह?"
"की बात करैत छी?"
"तूँ नहि सुधरबह? तोरा तँ फाँसी हेबाक चाही । सएहटा इलाज बूझा रहल अछि ।"

परमाचार्य डरा गेल । फाँसीक नाम सुनितहि ओकर देह पिअर भए गेलैक । ओ हाजतिएमे बेहोस भए गेल।

"ई भगल कए रहल अछि ।"
"कही एहन ने होअए जे सचमुचकेँ किछु भए जाइक । तखन तँ सभटा केस ओहिना रहि जाएत । एकरा कहुना जिआ कए राखब बहुत जरूरी अछि ।"
"चिंता नहि करू । ई एतेक आसानीसँ नहि मरत ।"
पुलिस ओकरा मुँहपर पानिक छिट्टा करैत अछि, गिलासमे पानि दैत अछि । थोड़बे कालमे ओकरा होस आबि जाइत अछि ।

27

न्यायालयमे तिथिपर-तिथि पड़ैत रहल । परमाचार्यक आदमीसभ कतबो छटपटाएल ओकरा जमानति नहि भेलैक । न्यायाधीश ओकरा न्यायिक हिरासतिमे पठा देलनि । ओ पुलिस हाजतिसँ जहल पहुँचि गेल । न्यायिक हिरासतिक अवधि बढ़ैत रहलैक । ओकर

आदमी दोड़ैत-दौड़ैत थाकि गेल । चेलासभकेँ कहुना कए भ्रममे राखल जाइक । अखन हुनका ऊपर दुष्टग्रहक छाया पड़ल अछि । केओ कहैत-"हुनका भगवान कृष्ण जकाँ जहलमे राखल गेल छनि ।" किछु चेलासभ तँ जहलक फाटक लग धूप-आरती सेहो करए । ओकरासभकेँ दृढ़ विश्वास रहैक जे ओ एकदम निर्दोष छथि । पुलिस हुनका नाहक फँसा रहल अछि । हुनकापर अत्याचार कए रहल अछि ।

आइ फेर परमाचार्यजीक न्यायालयमे पेसी छलनि। पुलिस जहलक बड़का गाड़ीमे हुनका न्यायालय अनलक। ओहीमे किछु आओर अपराधीसभ सेहो न्यायालय आनल जा रहल छल । संगमे किछु पुलिस सेहो छलैक । पाछूसँ एकटा पुलिसक गाड़ी सेहो ओकरासभक पछोड़ केने चलि रहल छल । रस्तामे एकाएक बड़ी जोरक हल्ला भेल । जहलक गाड़ीमे जा रहल कैदीसभमे आपसमे झगड़ा भए गेलैक । बेसीगोटे परमाचार्यक विरुद्धमे बाजि रहल छल। किछुगोटे ओकर समर्थक सेहो छल । बात बढ़ैत-बढ़ैत मारि-पीटि होमए लागल । ओहीमे सँ केओ परमाचार्यक झोटा पकड़लक । केओ ओकर गर्दनि धेलक । किछुगोटे तँ ओकरा चमेटो लगा देलक । लगीचेमे ठाढ़ पुलिस मूकदर्शक बनल रहल । न्यायालय पहुँचैत-पहुँचैत परमाचार्य तँ बेदम भए गेल । एहि हालतिमे पुलिस ओकरा

न्यायालयमे हाजिर नहि करए चाहैत छल । मुदा कोनो उपाय नहि छलैक । न्यायालयमे नहि हाजिर करितैक तँ ओकरेसभपर पड़ितैक ।

न्यायालयमे पहुँचितहि परमाचार्य जोर-जोरसँ कानए लागल ।

“ई किएक कानि रहल अछि? एकर हालति तँ बहुत खराब लागि रहल छैक ।”

“सरकार ई सभ रस्तामे आपसमे लड़ि गेल । हमसभ कतबो रोकबाक प्रयास केलहुँ, केओ नहि मानलक । न्यायालयक समय भेल जा रहल छलैक तँ एकरासभकेँ सोझे एहिठाम लेने अएलहुँ ।”

“बात की छैक? आखिर,झगड़ा भेलैक किएक? ”

“कैदीसभक कहब जे परमाचार्य एकरासभकेँ झूठ-मूठकेँ केसमे फँसा देने छैक । भए सकैत अछि किछु आओर कुन्नह रहल होइक । पुलिस अपन भरि एकरासभकेँ रोकबाक प्रयास केलक । मुदा हालति काबूमे नहि अएलैक।”

न्यायाधीश परमाचार्यपर बहुत तमसएलाह ।

“तोरा बहुत दुर्गति लिखल छह ।”

“हमरा बहुत मारि मारलक अछि । हमर हालति बहुत खराब अछि ।”

“जेहने करबह तेहने ने भोगबह । वेष धेने छह साधुक आ काज करैत छह गुण्डाक । तखन की होएत? जे हेबाक चाही से भेल ।”

“अहूँ जखन एहिना कहबैक तखन हमरा के बचाओत?”

ओकर हालति देखि न्यायाधीश महोदय पुलिसकेँ ओकर अस्पतालमे इलाज करेबाक हेतु आदेश देलखिन आ कहलखिन जे अगिला तिथिपर मामिलाक सुनबाइ होएत। ताधरि परमाचार्य जहलेमे रहत । परमाचार्यके जहलक वापसी यात्राक समयमे फराके आनल गेल । आओर कैदीसभ रस्ताभरि ओकरा विरुद्ध बाजि रहल छल। पुलिस जेना-तेना ओकरासभकेँ जहलमे वापस लए गेल ।

28

जंगलक बीचमे बनल ओहि कुटीक चारूकात अद्भुत वातावरण छल । ओहि समय कुटीमे रहि रहल हम तीनूगोटे तीन विभिन्न लक्ष्य दिस काज कए रहल छलहुँ । मुदा नियतिवश हमसभ एकठाम आबि गेल रही। हम तँ मौनीबाबाक संगे बिदा भेल रही तँ भेल जे आब पछिलका बातसभ पछोड़ केनाइ छोड़ि देत । मुदा से कतहु भेलैक अछि? अहाँ कतहु चलि जाउ,मुदा मोन तँ ओएह रहि जाइत अछि । रहि-रहि कए ओ अपन दुनिआमे

वापस आबि जाइत अछि । ओएह मोह , ओहने कष्टक स्थितिक फेरसँ निर्माण भए जाइत अछि ।

कुटीपर अर्पिताक आबि गेलाक बाद हमरा एकाकीपन लागि रहल छल । बाबा अर्पिताक संगे वार्तालापमे लागल रहितथि वा ध्यानमे रमि जइतथि । आइ कैकदिनसँ हुनकर प्रवचनो नहि भेलनि । ओना हमरा कोनो चीजक अभाव नहि होमए देथि । ई तँ ओहि कुटीक विशेषता छल । जेना अन्नपूर्णा स्वयं सहाय होथि । मुदा हमर मोन ततबेसँ संतुष्ट नहि होइत छल । अनाथालयसँ देवालय ,देवालयसँ गांगाक तीर,ओहिठामसँ जंगलक परिभ्रमण होइत रहल । तरह-तरहक घटनाक्रम सेहो घटैत रहल । मुदा हम ठामहि छलहुँ । बूझि नहि पाबी जे हमर भविष्य की थिक?

मौनीबाबा ओहि कुटीमे अकस्मात पहुँचि गेल रहथि । ओहिठाम हुनका एकटा महान संत भेटलखिन । जेना ओ कहिआसँ हुनकर प्रतीक्षामे छलाह । अपनसभटा कार्यभार हुनका दए चुपचाप सदा-सर्वदाक लेल ओहिठामसँ प्रस्थान कए गेलथि । मौनीबाबा हुनके स्मृतिमे वृंदावनमे एकटा भव्य मंदिरक निर्माण करओलथि । ओ मंदिर आन मंदिरसभसँ फराक छल । ओकर मूल उद्देश्य दुखी मानवक कल्याण करब छल । मानव सेवा सर्वोत्तम धर्म

थिक । ई ओहिठामक मूल मंत्र छल । एहीक्रममे ओहि मंदिरकेँ संकल्पसँ जोड़ि देल गेल छल ।

समय-समयक बात होइत अछि । ओ सभ की सोचने रहथि आ कोन रूपमे एहिठाम भेंट भए रहल छलनि । मौनीबाबा संत भए गेलथि । अर्पिता समाज कल्याणक काजमे लागि गेलथि । मुदा कतहु-ने-कतहु हुनका लोकनिक लक्ष्यमे एकरुपता आबि गेल छल । मौनीबाबाक लक्ष्य मानव सेवा छलनि । हुनकर कहब छलनि जे आध्यात्मिक विकासक ताधरि कोनो अर्थ नहि अछि जाधरि ओ जनकल्याणकारी नहि होअए । अर्पिता सेहो एही काजमे लागले रहथि ।

जंगलक ओहि कुटीमे आबि कए एक संगे रहि रहल मौनीबाबा आ अर्पिता सचमुच बहुत प्रसन्न रहथि । प्रसन्न ओहू लेल रहथि जे आब ओ सभ अपन व्यक्तिगत जीवनक घात-प्रतिघातसँ ऊपर उठि गेल रहथि । एहीसँ हुनका लोकनिक आत्मिक शक्तिमे गजबक विकास भेल छल । ने मौनीबाबाकेँ कखनहु उदास देखबनि,ने अर्पिता कोनो दुबिधामे बुझैतथि । एकठाम रहितहुँ ओ सभ दैहिक भावसँ बहुत ऊपर उठि गेल रहथि । न हर्षो न च विष्मयः। एहन आदमी कतए पाबी ।

एही युगमे,एही वातावरणमे एहन परोपकारी लोकसभ जीबि रहल छलाह,जिनकर प्रत्येक साँसमे

परोपकारक ध्वनि गुंजित होइत रहैत छल । एकदिस मौनीबाबा सन संत छलाह तँ दोसर दिस साधुक वेषमे घोर पापमे फसल परमाचार्य छल । मुदा एहिमे कोनो आश्चर्य नहि कहबाक चाही । सभयुगमे एहिने होइत रहलैक अछि । एकदिस राम तँ दोसर दिस रावण एकहि समयमे भेल छल । एहन-एहन उदाहरणसँ मानवताक इतिहास भरल पड़ल अछि । मुदा तेँ की? नीक लोक अपन प्रयास छोड़ि देलक? कदापि नहि । ताहीसँ ई संसार बाँचल रहि गेल । मनुष्यताक विकास होइत रहल ।

कुटीमे पहुँचलाक बाद अर्पिताकँ थानाक कोनटामे बैसल परमाचार्य आ ओकरा घेरने पुलिसक दृश्य बेर-बेर मोन पड़ैत रहैत छलनि । ओ ओकरा बारेमे ककरो किछु पुछितए ताहिसँ पहिने अपन मोबाइलक चिंतामे पड़ि गेल छलि । हुनकर ध्यान एमहर-ओमहर भए गेल छलनि । कुटीमे अएलाक बादो ई दृश्य मोनमे घुमैत रहैत छलनि। साधुक वेषमे थानामे बैसल ओ छल के? आखिर एकदिन मौनीबाबासँ ओ एहि विषयमे चर्च कइए देलथि ।

29

परमाचार्य आइ फेर तिथिपर न्यायालय आनल गेल छल । पुलिस पहिनहिसँ सतर्क छल जाहिसँ

पछिलाबेर सन घटनाक पुनरावृति नहि होअए । तेँ ओकरा अलगसँ पुलिसक जीपमे बैसाओल गेल छल । ओकरा कोनो आन कैदीसँ भेंट हेबाक कोनो संभावना नहि छल । ओहिदिनक घटनाक जेल प्रशासन जाँच करओने छल । जाँचमे ई पता लागल जे ओही जहलमे ओकरासँ कनीके फटकी एकटा कैदी रहैत छल-सुरेश । ओ बेस हृष्ट-पुष्ट छल । जहलमे पत्नीक हत्याक अपराधमे आजन्म कारावास काटि रहल छल । जहलमे रहैत-रहैत ओ ओहिठामक दादा भए गेल छल । ओहिठाम जे केओ नव कैदी अबैत छल तकरासँ ओ मनमाफिक काज करबैत छल । ओहिदिन जखन परमाचार्य जहल पहुँचल तँ सुरेश ओकरा देखितहि लाल टरेस भए गेल , चिचिआ उठल-

"तूँ आब सही जगह पहुँचलह अछि । तोरा सन-सन पापीक आब इलाज होएत ।"

जाबे केओ किछु बुझितए,किछु करितए ताबे तँ सुरेश ओकर इलाज कए चुकल छल । लगपासमे ठाढ़ कोनो कैदी सुरेशक विरुद्धमे किछु नहि बाजल । उल्टे परमाचार्यक विरुद्ध किछु-किछु सिकाइत कए देलक । तकरबादसँ किछु-ने-किछु होइते रहैत छल । जेल प्रशासन सुरेशक पक्ष लए लैत छलैक । दोसर कैदीसभ सेहो ओकरे समर्थनमे ठाढ़ भए जाइत छलैक । परमाचार्यक बात केओ सुनबाक लेल तैयार नहि छल । एहने माहौलमे जखन

ओहिदिन कैदीसभक संगे परमाचार्य न्यायालय जा रहल छल तँ सुरेश आ किछु आओर कैदीसभ ओकरा पीटि देने रहैक । तथापि,ओकरसभक किछु नहि बिगड़लैक । मुदा जाँचमे ई बात आएल जे परमाचार्यकेँ सुरेशक संगे कोनो पुरान कुन्नह छैक जाहिसँ माहौल गड़बड़ाएल । इहो कहल गेल जे परमाचार्य आ सुरेश एकहि गामक अछि । परमाचार्यक पूर्वक नाम रामलखन छलैक । ओ संपन्न परिवारक छल । मुदा स्वभावसँ बहुत उचक्का रहए । गामक लोकसभकेँ तरह-तरहसँ तंग केने रहए । एही क्रममे ओ एकदिन सुरेशक पत्नी संगे गलत व्यवहार केलक । केना की भेलेक से सभटा वृतान्त ओहिठामक थानाक डायरीमे दर्ज छल । रामलखनक विरुद्ध हत्या,बलात्कार आ लुटपाटक केस दर्ज छल । तकर बादे ओ गाम छोड़ि देलक । पुलिससँ बचबाक हेतु साधुक वेष धए हरिद्वारमे रहए लागल ।

न्यायालयमे ई जानकारीसभ पुलिस दए रहल छल तँ माननीय न्यायाधीश महोदय एहि मामिलासँ संबंधित मूल अभिलेख देखए चाहलाह ।

“हमरा लोकनि लग ऐखन ओ कागजसभ नहि अछि । जाँचरिपोर्टमे जे बात लिखल छैक से अपनेक सामने प्रस्तुत कएल गेल अछि ।”

“हमरा मूल कागज देखबाक अछि ।

“अगिला तिथिपर हमसभ अपनेकेँ सभटा कागज अवश्य देखाएब ।”

“ठीक छैक । ताबे परमाचार्य जहलेमे रहत । मुदा ई सुनिश्चित कएल जाए जे दुनूगोटेमे झंझटि नहि होइक। जरुरी भेलापर एकरासभकेँ फराक राखल जाए ।”
न्यायाधीश महोदय एतेक बजले छलाह कि परमाचार्य चिचिआ उटल-

“हम रामलखन नहि छी । ई सभ पुलिसक मनगढ़ंत खिस्सा अछि । हमरा नाहकमे फँसाओल जा रहल अछि । हमर रक्षा कएल जाए ।”

न्यायाधीश महोदयकेँ हँसी लागि गेलनि ।

“यदि तोहर गलती नहि अछि तखन परेसानीक कोनो बाते नहि थिक । हमसभ अपना भरि ठोकि-ठठा कए निर्णय करैत छी । मुदा यदि तोहर गलती हेतह तखन तँ दंड भेटबे करतह आ भेटबेक चाही ।”

परमाचार्य कल जोड़ि रहल छल । ताबतमे न्यायालयक कार्यवाही अगिला तिथिक हेतु स्थगित भए गेल ।

रस्ताभरि परमाचार्य कनिते रहल । जाहि डरे भिन्न भेलहुँ सएह पड़ल बखरा । ओ सोचने छल जे गाम-घर छोड़ि देत,बाबाजीक वेष धए लेत,काजो बदलि लेत जाहिसँ पुरनका मामिलासभसँ ओकर पिंड छुटि जेतैक ।

मुदा से कतहु भेलैक अछि? मनुक्खक कर्म ओकर पछोड़ करितहि छैक । निःसंदेह देरी भए सकैत छैक । सएह भए रहल छल । आब तँ ओ भागिओ नहि सकैत छल । सभटा अभिलेख पुलिस लग आबि गेल छल । जाँचमे सभ बातक खुलासा भए गेल छलैक । पुलिस आओर साक्ष्य लेबाक हेतु ओकर गाम जेतैक,ओहिठामक थाना जेतैक,सेसभ सुनि तँ ओकर सीटीपीटी गुम्म छलैक । मुदा ओ कइए की सकैत छल?

30

ओहिदिन न्यायालयसँ वापस अएलाक बाद रामलखन उर्फ परमाचार्य बहुत बेचैन छल । ओकरा चारूकात ससरफानी लटकल देखाइत छलैक । जेमहरे करओट बदलैत,तेमहरे एकटा ससरफानी जेना लटकि रहल होइक । जेना पुलिस सदिखन ओकरा घेरने होइक । बितल बातसभ मोन पड़ैक । केओ ओकरा लग रहैक नहि। ओहि अन्हरिआ रातिमे जहलक वातावरण भयाओन लागि रहल छलैक । ओकरा होइक जेना भोर हेबासँ पहिनहि ओकरा लटका देल जेतैक । ओकरा रहि-रहि कए कनबाक मोन होइ । ओ ने खाइत छल,ने पानि पिबैत छल । चुपचाप,उदास आ भयभीत सभसँ फराक अपन

कोठरीमे करोट बदलि रहल छल । असलमे ओहिदिनक झंझटिक बाद न्यायालय ओकरा फराक रखबाक ओरिआन करबाक आदेश देने छल । तकर बादेसँ ओ एकटा फराक कोठरीमे रहि रहल छल । एहिसँ तँ ओकर कष्ट बढ़िए गेल छल । पहिने तँ ओकरा मनुक्खसँ परेसानी रहैक । लगपासक दोसर कैदीसभ पिटैत रहैक । मुदा आब तँ ओ अपनेसँ हारि रहल छल । रहि-रहि कए ओकर अपने विचार ओकर विरुद्ध ठाढ़ भए जाइत छलैक।

"सावधान रामलखन! आब बेसी चालाकी नहि । तूँ आब सेन्हिपर पकड़ल जा चुकल छह ।"

"तोहर आब केओ रक्षा नहि कए सकत ।"

"तोरा आब फाँसी हेबे करतह ।"

"जे किछु करबाक होअए से कए लएह ।"

अपन परिवारक सुधि अबितहि ओ बपहारि काटि रहल छल, रहि-रहि कए भोकासी पाड़ि कए कानए लगैत छल । कोठरीक सामने ठाढ़ पुलिस ओकर भाव-भंगिमा देखि भयभीत भए गेल । तुरंत अपन उच्च अधिकारीकेँ सूचना देलक । थोड़बे कालमे जहलक ओहि एकांत कोठरी लग कैकगोटे पहुँचि गेल ।

जहलक अधिकारी बड़ीकाल धरि परमाचार्यकेँ देखैत रहि गेलाह । ओकरा कोनो सुध-बुध नहि रहैक ।

ओकरा इहो होस नहि रहैक जे ओ देखल जा रहल अछि,जे ओकर गतिविधिपर जहल प्रशासन निरंतर ध्यान रखने अछि । ओ ओहिना बड़बड़ाइते रहि गेल । जहलक अधिकारीलोकनि कते काल ओना ठाढ़ रहितथि । किछु बुझेबे नहि करनि जे बात की छैक? ओ सभ वापस चलि गेलाह । बाहर पुलिस अपन काजपर रहबे करए ।

थोड़ेकालक बाद परमाचार्य अपन धोती खोललक। ओकरा देबालमे घोपल एकटा खुटीसँ बन्हलक । एमहर-ओमहर देखलक । फेर ससरफानी बनओलक आ अपन गर्दनिमे लगा लेलक । आब ओ लटकबाक उपक्रम कइए रहल छल कि तीनटा पुलिस अधिकारीक संगे दोड़ल आएल। कोठरीक सामने कार्यरत पुलिस फोंफ काटि रहल छल । अधिकारीजी ओकरा एक डंटा खसि कए मारलथि। ओ फुरफुरा कए उठैत अछि ।

“जल्दीसँ केबार खोल । ओ लटकि रहल अछि ।” केबार खुजबे नहि करैक । भीतरसँ कुंडी लगा देने रहैक। पुलिससभ मिलि कए ओहिपर प्रहार केलक । आखिर केबार टूटि कए खसि पड़ल । जल्दीसँ परमाचार्यक गरासँ ससरफानी हटाओल गेल । ओकरा पानि पिआओल गेल। तकरबाद अधिकारी आदेशपर ओकरा पुलिस अस्पताल लेने चलि गेल ।

जहल परिसरेमे अस्पताल छल । परमाचार्यके जेना-तेना पुलिससभ अस्पताल पहुँचओलक । मुदा ओहिठाम केओ रहबे नहि करए । एकटा प्रहरी छल जे देबालसँ सटि कए फोंफ काटि रहल छल । कोठरीक भीतरमे कतहु केओ नहि । आब की कएल जाए? -पुलिस अधिकारीसँ पुछलक ।

"ठहरह । किछु व्योंत करैत छी ।"

अधिकारीजी डाक्टरकेँ फोन केलथि । बहुत मोसकिलसँ ओ फोन उठओलक ।

"की बात?"

"एकटा कैदीक हालति बहुत गड़बड़ लागि रहल अछि ।"

"एतेक रातिमे हम की करबैक?"- डाक्टर पीने बुत्त छल ।

"अहाँ डाक्टर छी । अहाँ नहि करबैक तँ आर के करतैक । यदि ओकरा किछु भए गेलैक तखन?"

"बेसी बकबास नहि करू । हमरा अखन बहुत निन्न लागल अछि । हम कतहु नहि जा सकैत छी ।"

अधिकारीजीकेँ बहुत तामस भेलनि । ओ अपन उच्च अधिकारीकेँ सभटा बात कहलखिन । तकर बात तँ थोड़बे कालमे अस्पताल लग चारिटा गाड़ी धराधर पहुँचि गेल । ओहिमे एकटा डाक्टर बाहर निकललाह । संगमे

एकटा सिस्टर आ कर्मचारी सेहो छल । ओ सभ परमाचार्यक जाँच करैत छथि । ओकरा एकटा सुइआ दैत छथि । थोड़बेकालमे परमाचार्य सुति जाइत अछि । "अखन एकरा सुतए दिऔक । पाँच-छओ घंटाक बाद जखन निन्न टुटतैक तखन ओकर नीकसँ जाँच कएल जेतैक । लगैत अछि ई अवसादग्रस्त भए गेल अछि ।"

परमाचार्यकेँ अस्पतालेमे सुतले छोड़ि ओ सभ चलि जाइत छथि ।

31

अहाँ कोनो वस्त्र धारण कए लिअ,कतहु चलि जाउ,ककरो संगे रहू,मुदा मोन तँ ओएह रहि जाइत अछि। ओकरा बदलब बहुत मोसकिल काज थिक । मोनक कल्पना शक्ति अनन्त अछि । एकहि क्षणमे ओ कल्पना द्वारा पृथ्वीक एक कोनसँ दोसर कोन पहुँचि जाइत अछि। कहिआ-कहिआक बितल बातसभ मोनमे प्रत्यक्ष भए जाइत अछि । से जगलेमे नहि होइत अछि,सुतलोमे सपनाक माध्यमसँ कैकटा कल्पनाकेँ साकार होइत देखा दैत अछि । एकरा जतेक जोरसँ बान्हबाक प्रयास कएल जाइत अछि,ओ ततेक जोरसँ फटकी भागि जाइत अछि । यदि अहाँ उपास करैत छी तँ साँझ होइतहि दोबर भोजन लोक कए लैत अछि । यदि कोनो काज करबाक मोन

अछि आ जबरदस्ती ओकरा रोकैत छिऐक तँ मोन बेर-बेर ओएह करबाक हेतु उद्यत रहैत अछि आ मौका भेटितहि ओही काजमे लिप्त भए जाइत अछि जकर प्रतिरोध कएल जा रहल छल । कमोबेस इएह हाल अर्पितोक रहनि ।

कुटीमे बहुत दिनक बात मौनीबाबा आ अर्पिता एकांतक अनुभव कए रहल छलाह । परिस्थिति बदलि गेल छल । स्थान बदलि गेल छल । मुदा हुनकरसभक मोन कखनहु कए वापस ओतहि पहुँचि जाइत छल जतएसँ ओ सभ फराक हेबाक हेतु विवश भए गेल रहथि ।

जीवनमे संतुलन आ समन्वय बहुत जरूरी अछि। कोनो प्रकारक अतिवादसँ बचबाक अछि । गीतामे मध्यमार्गक अवलंवन करबाक विचार कहल गेल अछि । भगवान बुद्ध सेहो तकरे समर्थक छलाह । ओ कहथि- “जीवन वीणाकेँ ततेक नहि कसू जे तारे टूटि जाए आ ओकरा ओतेक ढील नहि छोड़ू जाहिसँ कोनो स्वरे नहि निकलए ।”

मौनीबाबा ई बात बूझैत छलाह । हुनकर मोन रहि-रहि कए चेतौनी दैत रहल छलनि -

“खबरदार! एना नहि चलतह । समय बहुत आगू बढ़ि गेल अछि । आब पाछू तकबाक परिस्थिति नहि अछि । एहिमे ककरो कल्याण नहि होएत । आब तँ

एकमात्र समाधान अछि जे हमसभ अपन निर्धारित लक्ष्य दिस बढ़ी ,तकरा सफल करी आ समाजमे सुख-शांतिक स्थापना करी । दुखी,अनाथ,असहाय विधवा,बच्चा आ बूढ़सभक आश्रयस्थल बनल संकल्प आ वृंदावनक मंदिरकेँ एक कए देल जाए । ओहिमे यथासंभव बेसीसँ बेसी एहन लोकसभक कल्याणक जोगार कएल जाए । इएह हमर साधना थिक । दुनूगोटे एकांतमे कैकबेर चर्चा करितथि आ अंततः एही निषकर्षपर पहुँचतथि । फेर हमरो चिंता तँ हुनकासभकेँ रहबे कएल हेतनि ।

आखिर मौनीबाबा आ अर्पिता क्षणिक मोहनिद्रासँ उठलाह । हम फूलडालीमे पूजाक हेतु फूल तोड़ि कए कुटी वापस आबि रहल छलहुँ । दुनूगोटे प्रसन्नमुद्रामे हमर स्वागत करैत छथि । अर्पिता हमरा हाथसँ फूलडाली लए लैत छथि । फूलडाली लेने ओ भीतर चलि जाइत छथि । हम आ मौनीबाबा कुटीक ओसारापर बैसल बतिआ रहल छी । एतबहिमे दूटा पुलिस कुटीपर पहुँचि जाइत अछि। ओ सभ मौनीबाबाकेँ प्रणाम करैत अछि आ हाथमे एकटा कागज बढ़बैत अछि ।

"ई की अछि?"

"न्यायालयसँ अपनेकेँ बजाहटि अछि?"

"किएक?"

"परमाचार्यक मामिलामे अपनेक गबाही चाही ।"

“हम तँ अपन बात कहिए चुकल छी ।”

“बात ओतबे नहि रहि गेलैक ।”

“माने?”

“रे! ई रामलखन उर्फ परमाचार्य कैकटा कांड ने केने छैक?

“तकर हम की कए सकैत छी?”

“न्यायालय अहाँकँ बजओलक अछि तँ किछु बात तँ हेबे करतैक ।”

“तोरा जनतबमे तँ हेतह ने?”

“सुनैत छी जे ...”

ओ रूकि गेल । मौनीबाबा कहैत छथिन-“बाजह ने। एहिठाम आओर के अछि?”

“मिहिरक पिताकँ परमाचार्य फरजी मामिलामे फँसा देने छैक ।”

“मिहिरक पिता...?”

“हँ, हँ । जहलमे बंद छथि ओकर पिता । हुनका पत्नीक हत्याक मामिलामे ओएह फँसओने रहए ।”

“से किएक?”

“अपनाकँ बचेबाक हेतु ओ ई काज केलक । असलमे ओएह हत्या केने छल । मुदा पुलिसकँ मिला कए केसकँ पलटि देलक । तकर बादे ओ साधुक वेष बना कए हरिद्वारमे रहए लागल । मिहिरक पिताकँ आजन्म

जहलक सजा भए गेलैक । तहिआसँ ओ जहलमे सड़ि रहल अछि ।”

“मुदा ओकर नाम छैक की?”

“ओकर नाम छैक-सुरेश ।”

“ई भेद कोना खुजलैक?”

“सभटा बात एतहि कोना बूझि जेबैक । न्यायालय चलिऔक ।”

ओहिठाम सरकारी ओकील अपने सभबात कहत। ठीक छैक । हमसभ जाबे तैयार होइत छी ताबे तूँसभ विश्राम करह ।”

32

“परमाचार्य जहलमे ससरफानी लगा लेलक ।”

ओहि दिनक भोरुका अखबार एहि समाचारसँ पाटल छल-

भेलैक ई जे सामने पहरा दए रहल प्रहरी रातिमे सुति रहल । परमाचार्य जागले छल । करोट बदलि रहल छल । एक-एकटा कुकांडसभ ओकर मोनमे सीनेमाक रील जकाँ आबि रहल छलैक । एक घटनाक दृश्य जाइक तँ दोसर आबि जाइक । सभसँ हृदय विदारक दृश्य छलैक जखन ओ अपने गामक एकटा अतीव सुंदरि विवाहित महिला संगे घोर अन्याय केलक,ओकर हत्या कए देलक

आ ओकर निर्दोष पतिकेँ ओहि हत्याक अपराधमे फँसा कए आजन्म जहलक दंड करबा देलक । ओ छल सुरेश। हँ,हँ ओएह सुरेश जे परमाचार्यकेँ न्यायालय जाइत काल बसेमे पीटि देने रहैक ,जे ओकरा जहलमे बदला लेबाक हेतु तन-तन करैत रहैत छलैक । मुदा ओ कोनो ओएहटा कांड केने छल से बात नहि रहैक । युवा सन्यासीक अकाल मृत्युक जिम्मेबारो ओएह छल । ओकरा डर छलैक जे ओकरा रहलासँ ओकर भेद खुलि सकैत छैक,ओकर सभटा धंधा चौपट भए जेतैक । मुदा बात ओतबे नहि रहैक । अनाथालयसँ कैकटा अनाथ बच्चासभक अपहरण कए ओकरसभक जीवन बरबाद करबामे सेहो ओ लिप्त छल । आब ओ अपने पापक भारसँ लदि गेल छल । ओकर मोन निरंतर ओकरा प्रताड़ित करैत रहैत छलैक । एहीक्रममे ओ ससरफानी लगाबक प्रयास एकबेर पहिनहु केने छल । मुदा सफल नहि भेल छल । ओ फेर एही प्रयासमे लागि गेल । सभसँ पहिने एकटा पत्र लिखलक। कहि नहि कागज,पेनक जोगार ओ केना केने छल? ओहि पत्रकेँ टेबुलपर राखि देलक । फेर अपन धोतीसँ ससरफानी बनओलक,ओकरा ऊपर खुटरीसँ टंगलक आ झुलि गेल । एहिबेर ओकर प्रयास सफल रहलैक । भोरे जखन प्रहरी ओकरा कोठरीमे झुलैत देखलकैक तँ जोरसँ चिचिआ उठल-

“दौड़ैत जाउ, जुलुम भए गेल । परमाचार्य झुलि गेल ।

ओहिदिन मौनीबाबा ,हम आ अर्पिता संगे न्यायालय पहुँचल रही । हमरासभकेँ उम्मीद छल जे ओतहि परमाचार्यसँ भेंट होएत । मौनीबाबा चिंतित रहथि जे पता नहि न्यायाधीश हुनका की की प्रश्न पुछतनि? हमरा उम्मीद छल जे संभवतः जीवनमे पहिल बेर अपन पिताक दर्शन भए सकत । हमसभगोटे न्यायालय पहुँचि गेल रही । न्यायाधीश महोदयक आगमनक प्रतीक्षा कएल जा रहल छल । न्यायालय खचाकच भरल छल । ओकीलसभ अपन-अपन केसक पैरबीक करबाक हेतु सतर्क रहथि । न्यायालयक कारवाइ प्रारंभ भेल । सभसँ पहिने परमाचार्यक पेसी छल । ओकर नाम पुकारल गेल । सरकारी ओकील न्यायाधीश महोदयकेँ किछु कहबाक उपक्रममे रहथि । ओही समय पुलिसक उच्च अधिकारी ओतए अबैत छथि आ किछु कहबाक अनुमति मंगैत छथि। न्यायाधीश महोदय अनुमति दैत छथि ।

“महोदय आइ परमाचार्यक न्यायालयमे पेसी छल । मुदा दुखक संग सूचना देल जाइत अछि जे ओ आइ भोरे मौका देखि कए जहलक अपन कोठरीमे ससरफानी लगा कए आत्महत्या कए लेलक । ओकर लासक शव परीक्षण अस्पतालमे कएल गेल अछि । ओहिमे फाँसी लगा कए मृत्य हेबाक पुष्टि भेल अछि । ओकर लास अखनहु

अस्पतालक शवगृहमे पड़ल अछि । ओकर कोनो संबंधी लास लेबए नहि आबि रहल अछि । जहलक कोठरीसँ टेबुलपर राखल एकटा चिठ्ठी भेटल अछि जाहिमे परमाचार्य अपन अपराधसभ स्वीकार केलक अछि । यदि आज्ञा होअए तँ ओ चिठ्ठी आ अस्पतालक डाक्टर द्वारा कएल गेल शव परीक्षणक रिपोर्ट अपनेकेँ अवलोकन हेतु देल जाए ।”

“आज्ञा अछि ।”

पुलिस उपरोक्त दुनू कागज न्यायाधीश महोदयकेँ दए दैत छथि । ओ ओहि कागजसभकेँ पढ़ैत छथि । परमाचार्यक चिठ्ठीमे सुरेशक चर्चा पढ़ितहि ओ साकंछ भए जाइत छथि । परमाचार्य लिखि गेल छल जे केना ओ सुरेशकेँ ओकर पत्नीक हत्याक मामिलामे पुलिससँ मिलि कए फँसा देने रहैक । ओ एहि कांडक सभ वृतांतसँ अवगत भेलाक बाद सुरेशकेँ बाइज्जति रिहाइक आदेश दैत छथि । तकरबाद न्यायालय अनिश्चितकाल हेतु स्थगित भए जाइत अछि ।

परमाचार्यक लास तीन दिन धरि शवगृहमे पड़ल रहल । केओ ओकर लास लेबए नहि आएल । लास सड़ि रहल छल । लगपासक माहौल दुर्गंधसँ भरल छल । आखिर स्थानीय प्रशासन ओहि लासकेँ स्वयं अंतिम संस्कार केलक । तखनहु ओकर परिवारक लोक केओ नहि

आएल । परमाचार्यक हरिद्‌वार स्थित सभटा संपत्तिकेँ प्रशासन जब्त कए लेलक । ओहिमेसँ ढाकीक-ढाकी टाका,गहना,हीरा-जबाहरात भेटलैक जकर हिसाब करैत-करैत ओ सभ थाकि गेलाह । कैकटा संपत्तिक कागजात भेटलैक । बारह टीन शुद्‌ध घी सेहो भेटलैक ।

ओहिदिन न्यायालयमे सुरेशकेँ नहि आनल गेल छल । ओकर रिहाइक आदेश जहलेमे अधिकारी लोकनि ओकरा देलथि । कागजी कारबाइ होइत-होइत साँझ पड़ि गेल । तेँ हुनका दोसर दिन भोरे जहलसँ छोड़ल जेतनि। से जानि हम मौनीबाबा आ अर्पिता जहलक मुख्यद्‌वारिसँ लौटि गेलहुँ ।

33

दोसर दिन अन्हरोखे हम ,मौनीबाबा आ अर्पिता जहलक मुख्यद्‌वारिपर पहुँचि गेल रही । मुदा हमरालोकनिकेँ जहलक भीतर जेबाक अनुमति नहि भेटल। कारण सुरेशक संबंधीमे हमरसभक नाम नहि छल । मौनीबाबा कहबो केलखिन-

“मिहिर हुनके पुत्र छथि । हिनका तँ भीतर जाए दिअनु।”

“मुदा जहलक कागजमे एहि बातक चर्च नहि अछि ।”

“ठीक छैक । हमसभ बाहरे हुनकर प्रतीक्षा कए रहल छी।”

हमसभ जहलक द्वारिसँ सटले ठाढ़ रही । घंटा भरिसँ बेसीए समय बीति गेल । ताबे मौनीबाबा अपन तरह-तरहक अनुभव बतिआइत रहलाह । अर्पिता आ मौनीबाबा संकल्पक भावी योजना बनबएमे व्यस्त रहथि।

“जखन संकल्प छलहे तखन अहाँ वृंदावनमे मंदिर किएक बनओलहुँ?”

“गुरु महराजक इएह इच्छा बुझाएल रहए । हुनकर संकेतकेँ स्वीकार करैत हम तकर प्रयास केलहुँ । बँकिए काज तँ केना भेलैक से हमरो आश्चर्य लागि रहल अछि। हमरा लग तँ एकटा टाका नहि रहए,ने एकहुटा लोक छल। मुदा गुरुजीक कृपा कही,लोकक हुनका प्रतिए श्रद्धा कही,जे कही ई काज स्वतः आगू बढ़ैत गेल । ओनाहु एहि दुनिआमे दान देनिहारक कमी थोड़बे छैक । एक सँ एक दानी लोकसँ संसार भरल अछि । ओ सभ तँ सही लोक तकैत रहैत अछि जाहिसँ सही काजमे किछुओ योगदान कए सकए । सएह एतहु भेल ।

हमर इच्छा अछि जे एहिठाम लोककल्याणकारी काजकेँ प्रश्रय देल जाए । दुखी,असमर्थ लोकसभकेँ नूतन जीवनक आधार बनि सकए ई स्थान । ताहि दिशामे काज करबाक छैक ।”

ओ सभ गप्प कइए रहल छलाह कि जहलसँ एकटा बेस नमगर-पोरगर,मजगूत कायाक लोक बहराइत छथि।

ओ बाहर अबिते हमर नाम लए अबाज दैत छथि । हम हुनका मुँहे अपन नाम सुनि विस्मित छी । अतिशय प्रसन्न छी । हम हुनके दिस बढ़ैत छी । हुनका प्रणाम करैत छी । मौनीबाबा आ अर्पिता एहि दृश्यकेँ देखि बहुत भावुक भए गेल छथि ।

हम हुनकर परिचय मौनीबाबा आ अर्पितासँ करबैत छी । ओ दुनूगोटेकेँ प्रणाम करैत छथि । हमसभ चारूगोटे कारसँ वृंदावनक हेतु प्रस्थान करैत छी । हमर पिताक प्रसन्नताक अंत नहि छल । जहलसँ छुटबाक हुनका कोनो उम्मीद नहि रहनि । हमरासँ भेंटो हेतनि से तँ ओ कहिओ नहि सोचने रहल हेताह । आइ ई दुनू बात सद्यः घटित भए रहल छल । ओ जहलोसँ छुटलाह आ हमहूँ भेटि गेलिअनि,सेहो अकस्मात आ बिना कोनो प्रयासकेँ । एकरे कहल जाइत छैक संयोग ।

हमरा तँ अपन माता-पिताक कोनो स्मृति नहि छल । ओहि समय हम संभवतः तीनसालक रहल होएब। हमर माताक हत्या कए रामलखन उर्फ परमाचार्य निपत्ता भए गेल । कहिओ पकड़ल नहि गेल । पकड़एलाह हमर पिता जिनकर किछु गलती नहि छल ,जे स्वयं बहुत शोकाकुल रहथि,जिनकर पत्नीक संगे अमानवीय व्यवहार कएल गेल रहनि । ततबे नहि हुनकर हत्या पर्यंत कए देल गेल छलनि । न्यायक नामपर घोर अन्याय भेल

छल। धन्य कही ओहि व्यक्तिकेँ जे हमरा ओहि हालतिमे बचा लेलक,जेना-तेना संकल्पमे रखबा देलक । अन्यथा की होइत हमर से तँ भगवाने जानथि । ओ देवदूत बनि कए आएल छल आ हमर जीवन रक्षा कए गेल छल ।

कारमे बैसल हमर पिता वारंबार हमरा देखैत रहैत छलाह। हमहूँ हुनका दिस देखि-देखि नोर बहा रहल छलहुँ। मोन होइत छल जे भोकासी पाड़ि कए कानी । बहुत मोसकिलसँ अपनाकेँ रोकने रही । जाहि क्षणक प्रतीक्षा हम सालोसँ कए रहल छलहुँ से हमर सामने आबि गेल छल । मुदा अपूर्णताक संगे । हम नहि सोचि पाबि रहल छलहुँ जे हमर माता केहन हालतिसँ गुजरल हेतीह,हुनका संगे ओ राक्षस कतेक अन्याय केने रहल होएत?केना एतेक निर्मम भए हुनकर जानो लए लेने छल? मुदा आब कएले की जा सकैत छल? ओ तँ स्वयं एहि दुनिआसँ जा चुकल छल । छोड़ि गेल छल हमरा सामने हमर जीवनक संपूर्ण सत्य जे जानि आइ हम कहिओसँ बेसी दुखी भए गेल छी,परेसान छी । मुदा आब ओ सभ विचारबाक समय नहि छल । इएह बात मौनीबाबा कहलथि । हमरा सिसकी पाड़ैत देखि कहैत छथि-

“तूँ परेसान नहि रहह । एतेक समयक बाद पिता भेटि गेलखुन । हुनकर स्वागत करह । बितल बातमे की

राखल अछि? हमसभ मिलि कए स्वर्णिम भविष्यक निर्माणमे लागि जाइ । एहीमे सभक कल्याण अछि ।”

मौनीबाबाक बात सुनि हमर मोनमे किछु शांति भेटल छल । बाबू सेहो हमरा देखि-देखि आश्वस्त लागि रहल छलथि । कार वृंदावन मंदिरक मुख्यद्वारिपर पहुँचि गेल छल ।

देखिते-देखिते मंदिर परिसरमे मौनीबाबाक आगमनक समाचार पसरि गेल । द्वारिपर भक्तलोकनिक भीड़ जमा भए गेल । ओ सभ एकस्वरसँ बाजि उठलथि-

“मौनीबाबाक जय!”

हमसभ कारसँ उतरैत छी आ भक्तलोकनिक जयगानक मध्य मंदिर परिसरमे प्रवेश करैत छी ।

34

वृंदावनक मौनीबाबाक बनाओल मंदिरमे रहि रहल विधवालोकनि परमाचार्यक मृत्युक समाचारसँ बहुत प्रसन्न रहथि ।

“ओ तँ राक्षसे छल । भने मरि गेल ।”

“एहन-एहन पापीक अंत तँ एहने हेबाके रहैक ।”

ओ सभ आपसमे चर्चा करथि । हरिद्वारमे परमाचार्यक आश्रमसँ ई सभ जान-बचा कए एतए आबि

गेल रहथि । हुनकासभकेँ नवजीवन भेटि गेल रहनि । हरिद्वारमे परमाचार्यक दुर्दशासँ मुक्ति भए गेल रहनि। एहिठाम रहि मंदिरक व्यवस्थामे लागल रहैत छलीह । मौनीबाबाक आगमनक समाचारसँ सभ आनन्दमे रहथि । हमहूँसभ बहुत प्रसन्न रही । ओहिठामक आध्यात्मिक वातावरणमे समय कोना बीति जाइत से पता नहि चलैत छल । हमर बाबूकेँ अपन गाम जेबाक उत्कट इच्छा रहनि। हमरो संगे लए जाए चाहथि । मुदा मौनीबाबा आ अर्पिताोक इच्छा रहनि जे हम अखन कतहु नहि जाइ । अपन शिक्षा पूर्ण करी । तकर बाद देखल जेतैक ।

ओहिदिन भोरे पूजा-पाठ कए हमसभ रौदमे बैसल रही । सभगोटे मौनीबाबाक आगमनक प्रतीक्षा करैत रही। चाह-पान,जलखैक ओरिआन सेहो ओतहि कएल जा रहल छल । मौनीबाबा आबहि बला रहथि । मंदिरमे गबैआसभ भजन गाबि रहल छलथि । बाबाकेँ ओहिमे मोन लागि गेलनि । एतबहिमे पृथ्वीक नीचाँसँ बहुत जोरक अबाज सुनाएल । लागल जेना नीचाँमे ट्रेन चलि रहल अछि । लगपासक देबालसभ हिलि रहल छल । हमरासभसँ एकलग्गा फटकी पानिक फौआरा छुटि रहल छल । आसपासक मकानसभ ढनमना-ढनमना कए खसि रहल छल । थोड़बे कालमे जहाँ-तहाँसँ पृथ्वी फाटए लागलि । ओहिमे सँ गरम-गरम पानि निकलि रहल छल । लागल

जेना प्रलय आबि गेल । मौनीबाबा भीतरे छलाह । हुनका संगे अर्पितो भीतरे रहथि । मंदिरक ऊपरी भाग देखिते-देखिते ध्वस्त भए खसि रहल छल । किछुगोटे मंदिरक भीतरसँ जोर-सोरसँ अबाज दए रहल छलाह - “बचाउ,बचाउ।” मुदा ओहि माहौलमे के ककरा देखैत? थोड़े कालक बाद तँ आसमान गरदासँ भरि गेल छल । लागल जेना संपूर्ण वसुधा नाचि रहल छलि । हमरासभक चारूकात जेना सभकिछु छिड़िआ गेल छल । जेना हमसभ आस्तित्वहीन भए गेल छलहुँ ।

हमरा सामनेमे देखिते-देखिते मंदिर रेतमे बदलि गेल छल । आसपासमे बेस पैघ खधिआ बनि गेल छल। वृंदावनक अधिकांश मंदिरसभक इएह हाल भेल छल । कतहु केओ नहि देखा रहल छल । हम ओहिठामसँ भागबाक प्रयास करैत छी । हमरा भागैत देखि बाबू हमर पछोड़ करैत छथि । एक डेग आगू बढ़ी आ चक्कर लागि जाए,घुरमि कए खसि पड़ी । बाबूओक इएह हाल रहनि । चारूकात पसरि गेल ओहि प्रलयमे कतहु जेबाक कोनो संभावना नहि छल । देखितहि,देखितहि हमरा आ बाबूक बीचमे माटि-पाथरक बेस पैघ देबाल बनि गेल छल । चारूकात थाले-थाल छल । बाबू अदृश्य भए गेलाह । हम चिचिआइत रहि गेलहुँ-

“बाबू! बाबू!”

परंतु कोनो प्रत्युत्तर नहि भेटल ।

दस मिनटक बाद पृथ्वी शांत होमए लगलीह । ताधरि तँ सभकिछु नष्ट भए गेल छल । हम एकटा टीलापर एसगर ठाढ़ छलहुँ । हमर पिताक कोनो अता-पता नहि छल । मौनीबाबा,अर्पिता आ ओहि समयममे मंदिरमे विद्यमान भक्तलोकनि विलुप्त भए गेल छलाह। हमर माथा सुन्न भए गेल छल । की करी किछु नहु बूझा रहल छल ।

सहर-सहर एहि भूकम्पमे तबाह भए गेल । हरिद्वार,वृंदावन,सन-सन तीर्थ चिन्हल नहि जा रहल छल। मुदा एहनोमे संकल्प बाँचि गेल । ओकर लगपासक गामोमे मामुली असरि भेल छल । ई एकटा आश्चर्यजनक बात छल । प्रशासनक लोकसभ दिन-राति मेहनति कए लोकसभकेँ मदति कए रहल छलाह । हम कैकदिनसँ एमहर-ओमहर बौआ रहल छलहुँ । एतेकदिनपर हमरा अपन पिताजीसँ भेंट भेल छल । मुदा ओहो क्षणिक साबित भेल । कहि नहि ओ केमहर चलि गेलाह । जीबितो छथि कि नहि? मौनीबाबा ,अर्पिताक सेहो कोनो समाचार नहि भेटि रहल छल । संयोगसँ गस्त लगा रहल पुलिससभ हमरा देखलक । ओ सभ हमरा लेने-देने संकल्प पहुँचा देलक ।

संकल्पक भवन ओहिना छल । ओकरा किछु क्षति नहि भेल रहैक । ओहिमे रहि रहल अनाथ बच्चासभक रक्षा लगैत अछि भगवान स्वयं कए रहल छलाह । तेँ ने हुनका अनाथक नाथ कहल जाइत अछि । हम संकल्पक मुख्यद्वारिपर पहुँचि बहुत उसासमे छी । लगैत अछि जेना स्वर्गमे आबि गेलहुँ । आइ सभसँ सुरक्षित एतहि लागि रहल छल । हमरा ओतए देखितहि संकल्पक कार्यकर्तासभ घेरि लैत छथि । ओ सभ अर्पिताक बारेमे पुछि रहल छथि । मुदा हम की कहितिअनि? हम तँ स्वयं सुन्न पड़ि गेल छलहुँ । एहन परिस्थितिसँ गुजरि रहल छलहुँ जकर कल्पनो नहि छल । दूपहर रातिमे थाकल,ठेहिआएल तँ रहबे करी । कहि नहि कखन निन्न पड़ि गेलहुँ ।

35

हमर निन्न भोरे टूटि गेल । निन्न टूटितहि काल्हुक भयाओन दृश्य मोन पड़ि रहल छल । नीक-बेजाए सोचा रहल छल । हम संकल्पमे अपने कोठरीमे रही । निन्नसँ उठितहि बेहद डराएल आ चिंतित रही । की करी किछु फुरा नहि रहल छल।

संकल्पमे प्रार्थनाक समय लगीच छल । हम जल्दी-जल्दी नित्यकर्मसँ निवृत्त होइत छी । एतबहिमे

प्रार्थनाक घंटी बाजि गेल । बच्चासभ अपन-अपन कोठरीसँ निकलि प्रार्थना भवन दिस बढ़ि रहल छल । हमहूँ साकंछ होइत छी,प्रार्थना भवन दिस जाइत छी । प्रार्थना प्रारंभ होइत अछि । संकल्पबासीसभ एकस्वरसँ जगदम्बाक आराधना करैत छथि--

"आपत्सु मग्नः स्मरणं त्वदीयं...."

प्रार्थनाक बाद हम अपन कोठरीमे लौटि जाइत छी। प्रार्थनाक प्रभावसँ हमरा मोन दुखसँ उबरि रहल छल। ओतए एकांतमे बैसल किछु-किछु सोचि रहल छी। अपन भविष्यक प्रति, संकल्पक भविष्यक लेल चिंतित छी । मौनीबाबा,अर्पिता आ हमर माता-पिता बेर-बेर मोन पड़ैत छलाह । संयोगसँ पिताक दर्शन भेवो कएल,मुदा क्षणिक। माताक तँ कोनो स्मृतिशेष नहि छल । हम अखनहु एहि उम्मीदसँ जीबि रहल छलहुँ जे ओ सभ एहि जन्म नहि तँ अगिला जन्ममे भेटबे करताह । हम फेर एकदिन अपन घर वापस जेबे करब । एतबहिमे संकल्पक प्रशासनिक अधिकारी अबैत छथि । हमरा हाथमे एकटा पुरजी रखैत छथि ।

"ई की अछि?"

"अर्पिताक इच्छा पत्र ।"

"माने..."

“ओ अहाँकेँ संकल्पक आजीवन ट्रस्टी बना गेलीह अछि जाहिसँ संकल्पक काज निर्वाध चलैत रहत ।”

“एहिसँ नीक भइए की सकैत अछि? हमरा ओ एहि जोकर बूझलथि,से जानि हम बहुत प्रसन्न छी,आह्लादित छी । लगैत अछि हमर भविष्यकेँ दिशा भेटि गेल अछि ।”

समाप्त

****

हमर पोथीसभक मुद्रित संस्करण निम्नलिखित वेवलिंकपर क्लिक कए आनलाइन किनल जा सकैत अछि:

भोरसँ साँझ धरि(आत्मकथा)(पेपरबैक)

https://pothi.com/pothi/node/195476.

भोरसँ साँझ धरि (सजिल्द)

https://pothi.com/pothi/node/209754.

प्रसंगवश(निवंध संग्रह)

https://pothi.com/pothi/node/195527.

स्वर्ग एतहि अछि(यात्रा प्रसंग)

https://pothi.com/pothi/node/195487.

फसाद(कथा संग्रह)

https://pothi.com/pothi/node/195510.

नमस्तस्यै(मैथिली उपन्यास)

https://pothi.com/pothi/node/195444.

विविध प्रसंग(निवंध संग्रह)

https://pothi.com/pothi/node/195633.

महराज (मैथिली उपन्यास)

https://pothi.com/pothi/node/195795

लजकोटर (मैथिली उपन्यास)

https://pothi.com/pothi/node/196264.

सीमाक ओहि पार(मैथिली उपन्यास)

https://pothi.com/pothi/node/197004.

समाधान (निवंध संग्रह)
https://pothi.com/pothi/node/197754.

मातृभूमि(उपन्यास)

https://pothi.com/pothi/node/198699.

स्वप्नलोक(उपन्यास)
https://pothi.com/pothi/node/199847.

शंखनाद(उपन्यास)

https://pothi.com/pothi/node/200903.

इएह थिक जीवन(संस्मरण)

https://pothi.com/pothi/node/202488.

ढहैत देबाल(उपन्यास)

https://pothi.com/pothi/node/203720.

पाथेय

https://pothi.com/pothi/node/205009.

हम आबि रहल छी(उपन्यास)

https://pothi.com/pothi/node/206093.

प्रलयक परात(उपन्यास)

https://pothi.com/pothi/node/207234.

बीति गेल समय(उपन्यास)

https://pothi.com/pothi/node/208351.

प्रतिबिम्ब(उपन्यास)

https://pothi.com/pothi/node/208632.

बदलि रहल अछि सभकिछु(उपन्यास)

https://pothi.com/pothi/node/209281.

राष्ट्र मंदिर(उपन्यास)

https://pothi.com/pothi/node/210181.

संयोग(कथा संग्रह)

https://rb.gy/edit6k.

नाचि रहल छलि वसुधा(उपन्यास)

https://bit.ly/3The07Y

The Lost House (Collection of short stories)

https://pothi.com/pothi/node/195843.
Life is an Art (Motivational essays)

https://pothi.com/pothi/node/196385

न्याय की गुहार (हिन्दी उपन्यास)
https://pothi.com/pothi/node/198163.

www. amazon.com/www.flipkart.com/ पर सेहो ई पोथीसभ आनलाइन किनल जा सकैत अछि ।